फरवरी, 2022 ■ वर्ष : 67 ■ अंक : 05 ■ पृष्ठ : 60 ■ मूल्य : ₹ 50

अहिंसक - नैतिक चेतना का प्रवर प्रतिनिधि

अणुव्रत

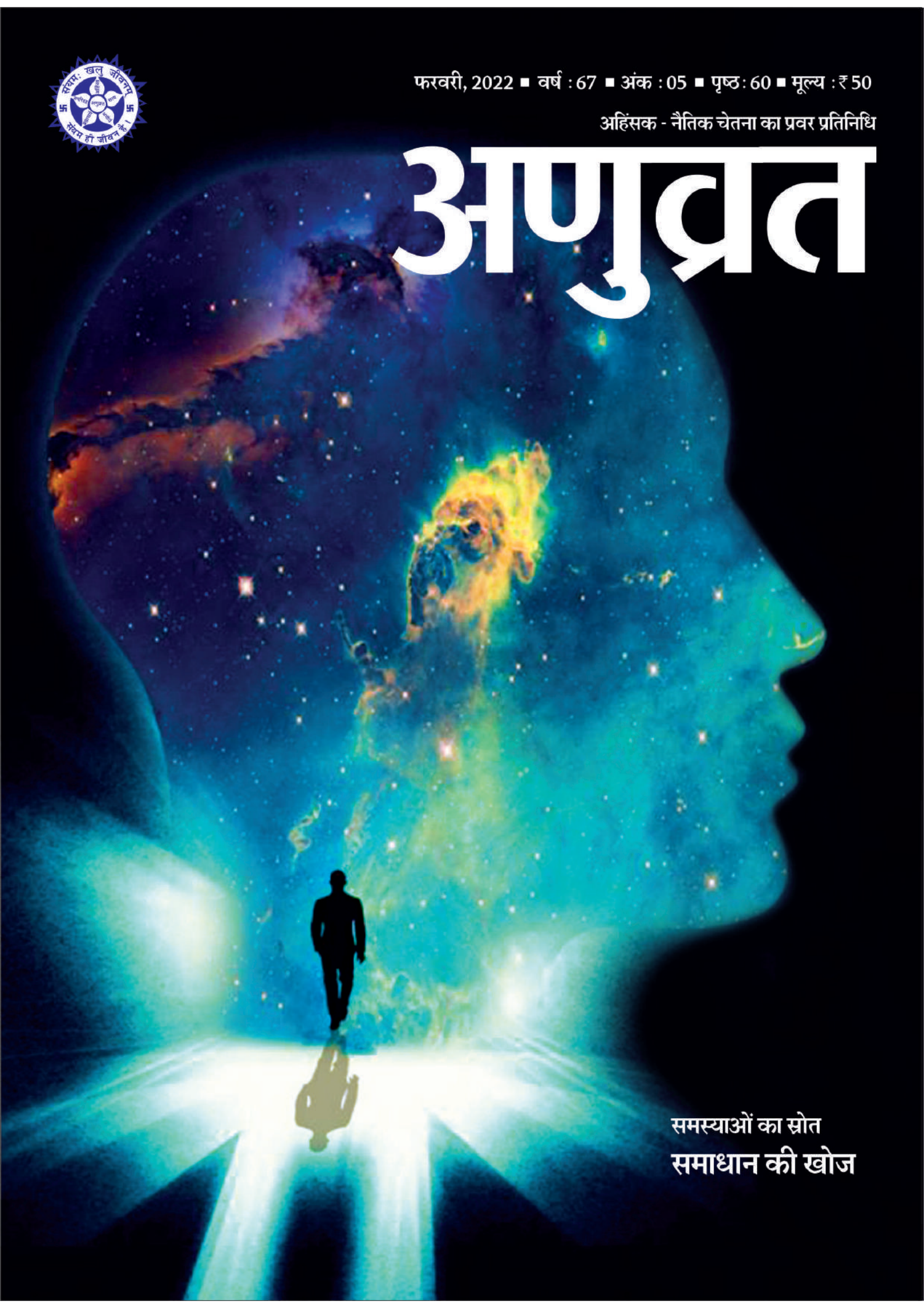

समस्याओं का स्रोत

समाधान की खोज

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण षष्ठीपूर्ति वर्ष के

ऐतिहासिक उपलक्ष्य में अणुव्रत पत्रिका की रचनात्मक भेंट

अणुव्रत जीवनशैली विशेषांक

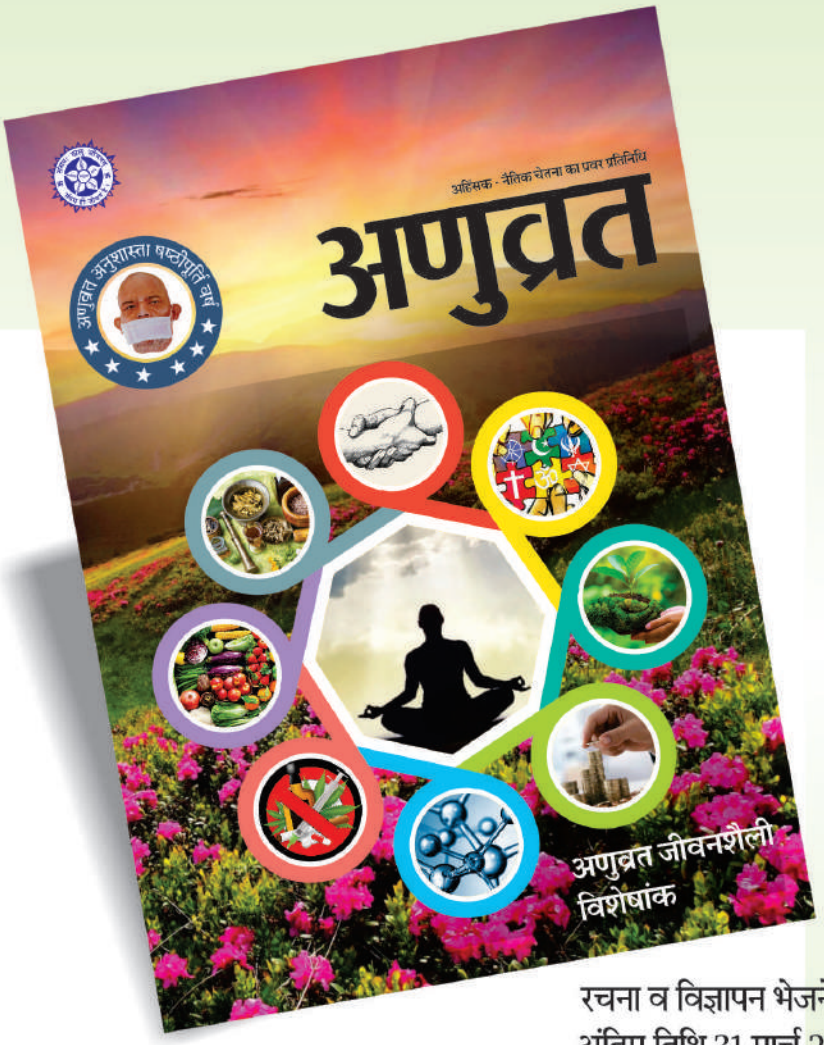

समस्याएं अनेक - समाधान एक
अणुव्रत जीवनशैली

रचना व विज्ञापन भेजने की
अंतिम तिथि 31 मार्च 2022

विषय

अणुव्रत अनुशास्ता : व्यक्तित्व व कर्तृत्व

अणुव्रत जीवनशैली : खाद्य संयम, प्राकृतिक चिकित्सा, भाषा संयम, ध्यान साधना, प्रामाणिकता, परमार्थ की चेतना, सांप्रदायिक सौहार्द, शाकाहार, व्यसन मुक्ति, मौन साधना, व्यवहार संयम, अर्जन के साथ विसर्जन, संग्रह की सीमा, बुद्धि - भावना संतुलन, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, प्रकृति प्रेम, मानवीय मूल्य, लोकतांत्रिक मूल्य

रचना भेजने हेतु संपर्क सूत्र

संचय जैन, सम्पादक +91-9829052452

मोहन मंगलम, सह संपादक +91-79059-19553

मनीष सोनी, कार्यालय प्रभारी +91-91166-34512

विज्ञापन हेतु सम्पर्क सूत्र

कन्हैया लाल चिप्पड़, संगठन मंत्री (दक्षिणांचल) +919741413853

विनोद कोठारी, संगठन मंत्री (पश्चिमांचल) +919892108601

राकेश मालू, संगठन मंत्री (पूर्वांचल) +918617843739

कुसुम लुनिया, संगठन मंत्री (उत्तरांचल) +919891947000

संजय जैन, संगठन मंत्री (मध्यांचल) +919215517430,

इन्द्र बैंगानी, सहमंत्री +919810352341

शांतिलाल पटावरी, संयोजक पत्रिका प्रसार +919811242365

श्रद्धास्पद अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का प्रारंभ किया। उसका वर्तमान परिस्थितियों में जब समूचा विश्व तनावग्रस्त है, विशेष महत्व है। अणुव्रत आंदोलन जाति, धर्म और लिंग के आधार पर समाज को विभक्त करने की प्रवृत्ति को रोकने और मानव मात्र में सौहार्द, सत्य और अहिंसा को बल पहुँचाने के साथ राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ बनाने में समुचित योग प्रदान कर रहा है।

– चन्द्रशेखर

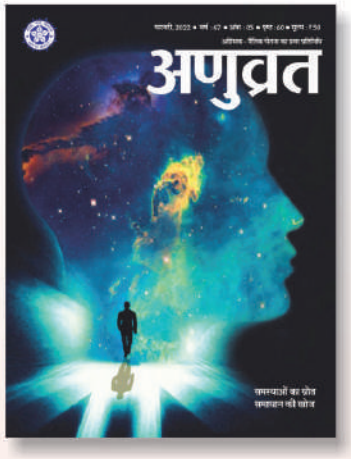

वर्ष 67 • अंक 05 • कुल पृष्ठ 60 • फरवरी, 2022

सम्पादक
संचय जैन

सह–सम्पादक
मोहन मंगलम

संयोजकीय टीम

प्रमोद घोड़ावत (संयोजक, प्रकाशन), **शांतिलाल पटावरी** (संयोजक, पत्रिका प्रसार)
ललित गर्ग (संयोजक, अणुव्रत लेखक मंच), **रजनीकांत शुक्ल** (सह संयोजक, अणुव्रत लेखक मंच)
इन्द्र बैंगानी (संयोजक, समाचार संपादन)

टाइपसेटिंग व लेआउट – **मनीष सोनी** कवर क्रिएटिव – **आशुतोष रॉय** चित्रांकन – **मनोज त्रिवेदी**

कार्यालय

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली–110002

anuvrat.patrika@anuvibha.org
www.anuvibha.org
दूरभाष : 011–23233345, मोबाइल : 9116634512

:: सदस्यता शुल्क विवरण::

एक अंक	–	₹ 50
एकवर्षीय	–	₹ 600
त्रैवर्षीय	–	₹ 1500
पंचवर्षीय	–	₹ 2500
दसवर्षीय	–	₹ 5000
योगक्षेमी (15 yrs.)	–	₹ 11000

₹ 350 का अतिरिक्त वार्षिक भुगतान कर आप अपनी प्रति कोरियर से मंगवा सकते हैं।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
केनरा बैंक
A/c No. **0158101120312**
IFSC : CNRB0000158

:: ऑनलाइन सदस्यता हेतु::

https://rzp.io/l/avbp पर लॉगिन करें
या इस क्यूआर कोड को स्कैन करें

- अणुव्रत सिद्धांत, स्वास्थ्य, जीवन–मूल्य एवं अभिप्रेरणा विषयक सामग्री का उपयोग किया जा सकेगा।
- *anuvrat.patrika@anuvibha.org* पर ही सामग्री प्रेषित करें।
- ईमेल द्वारा संप्रेषित कम्पोज की गयी प्रकाशन सामग्री की Open Word File को प्राथमिकता दी जायेगी।
- फोटो की गुणवत्ता कम होने पर उसे प्रकाशित करने में असमर्थता रहेगी। व्हाट्सएप पर फोटो न भेजें।
- अनिमंत्रित सामग्री को लौटाने हेतु बाध्यता नहीं रहेगी।
- प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों का निजी चिंतन है। प्रकाशक एवं सम्पादक इसके लिए जवाबदेह नहीं हैं।
- इस प्रकाशन से सम्बन्धित किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र दिल्ली रहेगा।

अनुक्रमणिका

प्रेरणा पाथेय

❊ **समस्याओं का स्रोत...** 06
आचार्य तुलसी

❊ **इच्छा और नैतिकता** 08
आचार्य महाप्रज्ञ

आलेख

❊ **जैसी करनी वैसा फल** 11
डॉ. विजयप्रकाश त्रिपाठी

❊ **भ्रूण हत्या : मानवता पर कलंक** 12
मुनि मदनकुमार

❊ **भाईचारा...भाईचारा...** 14
गिरीश पंकज

❊ **चल पड़े कोटि पग...** 16
देवर्षि कलानाथ शास्त्री

❊ **साँसों की सरगम...** 18
कल्पना मनोरमा

❊ **जीवन की दूसरी इनिंग** 20
रेनू सैनी

❊ **स्वास्थ्य का दुश्मन है क्रोध** 22
लायकराम मानव

❊ **World Peace through Anuvrat** 32
H.R. Dasegowda

कहानी

❊ **सीख** 24
हंसा दसानी गर्ग

कविता

❊ **शब्द-शब्द में इत्र** 13
अशोक अंजुम

❊ **हम कहते पालनहार** 15
सतीश उपाध्याय

❖ **संपादकीय** 05
❖ **संवेदन** 23
❖ **अतीत के झरोखे से** 28
❖ **कदमों के निशां** 35
❖ **परिचर्चा** 36
❖ **अणुव्रत गौरव सम्मान** 38
❖ **अणुव्रत सम्पर्क यात्रा**
❀ गुजरात-महाराष्ट्र 41
❖ **अणुव्रत डायरी** 48
❖ **Q10 प्रतियोगिता** 50
❖ **चुनाव शुद्धि अभियान** 51
❖ **समितियों से संवाद** 52
❖ **अणुव्रत संदेश स्थल** 53
❖ **अणुव्रत समाचार** 54
❖ **74वां अणुव्रत स्थापना दिवस** 58

सम्पादकीय...

लोकतंत्र, चुनाव और...
राजनैतिक परिपक्वता

राजनैतिक दृष्टि से भारत बहुत सक्रिय देश है। यहां के नागरिक राजनीति में बढ़–चढ़ कर रुचि लेते हैं। अपनी पसंद और नापसंद रखते हैं। राजनीति में अपना सीधा कोई दखल नहीं रखते हुए भी लोग घंटों राजनैतिक बहस में उलझे रहते हैं। अपनी पसंद के दलों और नेताओं के समर्थन में इस तरह उतर जाते हैं मानो उन दलों या नेताओं की नहीं, वरन स्वयं की प्रतिष्ठा दांव पर लगी हो। इन बहसों में मुद्दे की सच्चाई या वास्तविकता गौण रहती है और अधिकांशतः अंध समर्थन हावी हो जाता है। यह नजरिया कब कट्टरता में तब्दील हो जाता है, बहुत कम लोगों को इसका एहसास रहता है। कुछ हद तक यह एक नशे की भांति है और राजनैतिक पार्टियां यह नशा बाँटने में बहुत दक्ष हो गयी हैं। भावनात्मक धरातल पर लोग जिन मुद्दों पर आकृष्ट होते हैं, उन मुद्दों को जनचर्चा का विषय बनाये रखने में हमारे राजनेता माहिर हो गये हैं।

इस सम्पूर्ण राजनैतिक परिदृश्य में मीडिया की भी अहम भूमिका है। मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ माना गया है। मीडिया पर यह जिम्मेदारी है कि वह लोक यानी जनता की आवाज बने। क्या मीडिया निष्पक्ष समाचार जनता तक पहुँचा रहा है? क्या वह जनता के साथ खड़ा दिख रहा है? कहीं वह राजनैतिक पार्टियों और नेताओं के साथ सांठगांठ कर जनता की भावनाओं के साथ खिलवाड़ तो नहीं कर रहा? इन प्रश्नों को जनता की राजनैतिक सक्रियता के साथ जोड़ कर देखा जाना बहुत आवश्यक है। वरना क्या हम मीडिया को और उसके पीछे खड़ी ताकतों को देश का राजनैतिक परिदृश्य निर्धारित करने का अधिकार तो नहीं सौंप रहे हैं।

देश के नागरिक राजनैतिक दृष्टि से सक्रिय रहें, यह एक अच्छी बात है। लेकिन यह इस बात की पुष्टि कतई नहीं है कि वे राजनैतिक दृष्टि से परिपक्व भी हैं। यह एक कटु सत्य है कि राजनैतिक दल यही चाहेंगे कि उसके मतदाता राजनैतिक परिपक्वता से दूर रहें। वे चाहेंगे कि उनके द्वारा उठाये गये इस या उस मुद्दे के भावनात्मक प्रभाव में बह कर लोग अपना वोट करते रहें और अच्छे या बुरे के तर्क को हाशिये पर धकेल दें। आम मतदाता को भी लगता है कि ऐसा करके वह अपनी पार्टी और अपने नेता के प्रति अपनी वफादारी व्यक्त कर रहा है।

यह भावुकता भरी राजनैतिक अपरिपक्वता लोकतंत्र की बुनियाद को कमजोर करती है। और भावनाओं के प्रवाह में बह कर हम ऐसे प्रतिनिधियों को अपने शासन की बागडोर सौंप देते हैं जो इसके कतई उपयुक्त नहीं हैं। पिछले कई चुनाव ऐसी ही तस्वीर प्रस्तुत करते हैं। 2019 का लोकसभा चुनाव ही लें, जहां चुने हुए सांसदों में से 43 प्रतिशत सांसदों ने आपराधिक पृष्ठभूमि के साथ लोकतंत्र के मंदिर में प्रवेश किया था। यह देश के लोकतंत्र पर काला धब्बा नहीं तो क्या है? कौन है इसका जिम्मेदार? बड़े–बड़े राजनैतिक दल निर्लज्जता के साथ ऐसे दागी उम्मीदवारों को चुनावों में खड़ा करते हैं। हम मतदाता उन्हें अपना बहुमूल्य मत दे कर जिताते हैं। चुनाव आयोग और न्यायपालिका लगभग इस पर अपनी आँखें मूँदे रहते हैं। और ये नाकाबिल लोग वर्षों तक हमारे और हमारे भविष्य के साथ खिलवाड़ करते रहते हैं।

इस देश का लोकतंत्र तभी मजबूत होगा जब इसकी आत्मा यानी चुनाव शुद्ध होंगे। चुनाव शुद्ध तभी होंगे जब हर मतदाता परिपक्व राजनैतिक सोच विकसित करेगा। लोकतंत्र की सबसे बड़ी ताकत वोट है और जब वोट में ही खोट आ जायेगी, तब लोकतंत्र मात्र एक मुखौटा बनकर रह जायेगा। अणुव्रत आंदोलन हमेशा चुनाव में शुचिता की बात करता है और चुनाव शुद्धि अभियानों के माध्यम से जनजागरण का प्रयास करता है। चुनाव आयोग से लेकर उम्मीदवार और मतदाता चुनाव सुधार को आवश्यक मानते हैं और अणुव्रत के इस अभियान का समर्थन भी करते हैं। वह दिन शुभ होगा जब यह समर्थन व्यापक बनेगा और जन–दबाव के आगे हमारे राजनैतिक दल और राजनेता योग्य उम्मीदवारों को ही चुनने को मजबूर होंगे। और तब, चुनावों में होने वाली धांधली, नशे और पैसों की बन्दरबाँट और बाहुबल के खौफ से जनता को छुटकारा मिल सकेगा। लोकतंत्र का प्रकाश अवाम के अंतर्मन को रोशन कर सकेगा।

सं.जै.

sanchay_avb@yahoo.com

'बड़ा' बनने के लिए
वो क्या–क्या नहीं करते!
किसी का हक छीनने
किसी का भरोसा तोड़ने
और
किसी पर वार करने से तो क्या
खुद का
ईमान बेचने से भी
नहीं चूकते।
आश्चर्य!
ऐसे लोग भी आज
सफल कहे जाते हैं,
उन्हीं के चर्चे
चहुँ ओर सुने जाते हैं,
उनके ही आस–पास
नये आदर्श गढ़े जाते हैं।
'बड़प्पन' के
इन प्रतिमानों को
नित देख
बड़ी हो रही नयी पीढ़ी
उन छद्म आदर्शों के इर्द–गिर्द
अपने भविष्य का जब
ताना–बाना बुनती है,
तब,
हमारे अपने नौनिहालों पर
दिग्भ्रमित होने का
ठप्पा लगाने की मानो
हम 'बड़ों' में
होड़–सी लग जाती है।
काश!
इन होनहारों को
पथ–भ्रष्ट हो जाने का
फरमान सुनाने से पहले
एक बार...
बस एक बार!
हम स्वयं खुद को
कठघरे में
खड़ा कर के
तो देख लेते

समस्याओं का स्रोत : समाधान की खोज

आचार्य तुलसी

मनुष्य संसार का सबसे श्रेष्ठ प्राणी है। उसकी श्रेष्ठता के घटक तत्त्व तीन हैं– शरीर संरचना, मस्तिष्क और विवेक। उसके शरीर में रीढ़ की हड्डी का महत्त्वपूर्ण स्थान है। उसी के बल पर वह सीधा खड़ा होकर चलता है। अन्यथा पशु की तरह चौपाया हो जाता। उसका मस्तिष्क बहुत विकसित है। ज्ञान–विज्ञान की नयी खोजें विकसित मस्तिष्क की देन हैं। उसका विवेक जागृत है। उसके आधार पर वह हेय और उपादेय के बीच में स्पष्ट भेदरेखा खींच सकता है। ये तीनों तत्त्व संसार के अन्य प्राणियों से मनुष्य को विशिष्ट बनाने वाले हैं।

सम्बन्धों का चतुष्कोण

मनुष्य चिन्तनशील प्राणी है, इसलिए उसके सम्बन्धों का जगत् बहुत बड़ा है। एक दृष्टि से देखा जाये तो उसका सम्बन्ध विश्व के सभी प्राणियों के साथ है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्'–सारी पृथ्वी ही कुनबा है, यह अवधारणा मनुष्य के व्यापक सम्बन्धों के आधार पर ही बनी है। इस अवधारणा में पशु–पक्षी आदि बड़े प्राणियों, कीड़े–मकोड़े आदि छोटे जीव–जन्तुओं का ही नहीं, पृथ्वी, पानी, वनस्पति आदि सूक्ष्म जीवों का भी समावेश है। यह व्यापक दृष्टिकोण बहुत उपयोगी है, फिर भी इस व्यापकता को समझना और इसके अनुरूप आचरण करना सरल काम नहीं है।

ऊपर जिस धरातल की चर्चा की गयी है, वह निश्चय का धरातल है। व्यवहार के धरातल पर मनुष्यों के सम्बन्धों का एक चतुष्कोण बन सकता है। प्रथम कोण में वह अपने परिवार के साथ जुड़कर रहता है। दूसरा कोण उसके सामाजिक सम्बन्ध को उजागर करता है। तीसरे कोण पर उसकी राष्ट्रीय चेतना झंकृत होती है। चौथा कोण उसको विश्वात्मा के साथ जोड़ता है। यदि मनुष्य अपने सम्बन्धों को सही परिप्रेक्ष्य में समझे और पूरी ईमानदारी के साथ निर्वाह करे तो वह बहुत कुछ पा सकता है।

अद्वैत की समस्या

मनुष्य अकेला होता तो उसके सामने कोई कठिनाई नहीं होती। अकेला होने का अर्थ है अद्वैत हो जाना। जहां द्वैत न हो, वहां किससे प्रेम होगा और किससे झगड़ा होगा। अद्वैत की स्थिति में न कोई अपना होगा और न कोई पराया। जहां दो हैं ही नहीं, वहां कौन छोटा होगा और कौन बड़ा ? संग्रह, छीना–झपटी, तस्करी आदि मनोवृत्तियां द्वैत की स्थिति में ही पलती हैं। मनुष्य अकेला हो तो किसी प्रकार की समस्या के उद्भव की संभावना ही नहीं रहेगी। इस चिन्तन के आधार पर यह माना जा सकता है कि द्वैत होना ही सबसे बड़ी समस्या है।

द्वैत में समस्याओं की संभावना देखकर कोई मनुष्य सोच सकता है कि वह तो अकेला ही रहेगा, पर अकेला रहना भी उसके वश की बात नहीं है। अकेलापन मनुष्य को तोड़ देता है। मनुष्य क्या, ब्रह्मा भी अकेला रहकर खुश नहीं रह सका। 'स एकाकी न रेमे' अकेलेपन में

ब्रह्मा का मन नहीं लगा, यह पौराणिक किंवदन्ती सम्बन्धों की सार्थकता पर प्रकाश डालती है।

क्यों छूटी समाधान की खोज ?

एक से दो या बहुत होने से समस्याएं पैदा होती हैं, इस आशंका से मनुष्य अकेला नहीं रह सकता, क्योंकि वह हर समस्या का समाधान खोजना जानता है। यदि वह समाधान नहीं खोजे तो उसकी प्राप्त शक्तियों का उपयोग ही क्या? मनुष्य सोचता रहे, समझता रहे और अपना मार्ग स्वयं प्रशस्त करता रहे तो कोई समस्या अवरोध पैदा नहीं करती। कठिनाई वहां होती है, जहां मनुष्य न स्वयं को समझता है, न सम्बन्धों को समझता है और न सम्बन्धों से उत्पन्न होने वाली समस्याओं का समाधान खोजता है।

पशु जगत् बहुत बड़ा है। वनस्पति जगत् उससे भी बड़ा है। उनकी भी समस्याएं तो होंगी, पर उनसे मनुष्य को कोई कठिनाई नहीं होती। उसे कठिनाई का अनुभव अवश्य होता, यदि उसमें संवेदनशीलता होती। संवेदनशीलता एक ऐसा दर्पण है, जिस पर प्राणी मात्र के सुख–दुःख के प्रकम्पन अपने प्रतिबिम्ब छोड़ते रहते हैं। जब से यह दर्पण धुंधला हुआ है, मनुष्य ने अन्य प्राणियों के बारे में सोचना छोड़ दिया। धरती का अतिमात्रा में दोहन, पानी का अपव्यय और उसे प्रदूषित करने वाली प्रवृत्तियां, जंगलों का कटाव आदि इसी मानसिकता के फलित हैं। धरती और सूरज के बीच विरल परत ओजोन की क्षति जीवन के लिए बहुत बड़ा खतरा है। वैज्ञानिकों की इस चेतावनी के बावजूद प्रकृति और प्राणी जगत् के साथ मनुष्य के सम्बन्धों में बढ़ती जा रही दूरी उसकी संवेदनहीनता नहीं तो क्या है?

दायित्व का अनुभव

मनुष्य के पास ऐसी शक्ति है, जिससे वह पूरे विश्व की समस्याओं को समाहित कर सकता है। किन्तु वह अपनी समस्याओं में इतना उलझ गया कि किसी अन्य के बारे में सोचने के लिए उसके पास समय ही नहीं रहता। वैश्विक समस्याओं को एक बार छोड़ भी दें तो मानवीय समस्याएं भी कम नहीं हैं। समस्या चाहे पर्यावरण की हो, शस्त्रास्त्रों की प्रतिस्पर्धा की हो, आतंकवाद की हो, गरीबी की हो, जातिवाद की हो, सम्प्रदायवाद की हो, नैतिक मूल्यों के क्षरण की हो या सम्बन्धों में बढ़ती जा रही दरार की हो, उसका सर्जक स्वयं मनुष्य है। इस स्थिति में उसके समाधान का दायित्व भी उसी पर आता है। अपेक्षा यह है कि मनुष्य अपने दायित्व का ईमानदारी के साथ अनुभव करे।

कहा जाता है कि मनुष्य का प्रेम धरती की तरह है। धरती पर कोई एक दाना बोता है तो वह अनेक दानों से भरी बालियां देती है। सम्बन्धों की धरती इसी प्रकार उर्वर बनती है, पर उसमें कोई उपकार का दाना बोयेगा ही नहीं, सम्बन्धों को सिंचन देगा ही नहीं तो वहां फसल कैसे उगेगी ? माना कि निःस्वार्थ भाव से किसी के लिए कुछ करने वाले व्यक्तियों की संख्या सदा ही नगण्य–सी रहती है, पर जहां मंगल माधुर्य से ओतप्रोत सम्बन्धों का उत्स ही सूख जाये, वहां अन्तः उल्लास वाली स्रोतस्विनी कैसे बह सकती है !

महापथ पर कौन चलता है!

मानवीय सम्बन्धों की महावीथी इतनी कंटकाकीर्ण तो नहीं है, फिर भी युगीन चिन्तन ने उसके बारे में कुछ आशंकाएं पैदा कर दीं। इसी कारण मनुष्य उस पर चलने से घबराता है। सामाजिक बिखराव और पारिवारिक टूटन के पीछे यही मानसिकता काम कर रही है। अकेलेपन की त्रासदी ने एक बार फिर उसे सोचने के लिए विवश किया है। किन्तु जो रास्ता एक बार छूट जाता है, उसे पुनः पाना सरल काम नहीं है। व्यक्तिवादी मनोवृत्ति, व्यवसाय, आवास, शिक्षा, यातायात आदि की समस्याओं से आहत मनुष्य ने एकल परिवारों की संस्कृति को गले लगाया, पर समस्याएं घटने के स्थान पर बढ़ी हैं। सुख–दुःख में परिवार की संभागिता न रहने से पूरा बोझ अकेले व्यक्ति को झेलना पड़ता है। बीमारी, वियोग, विकलांगता और बेकारी की स्थिति में यह एहसास और अधिक तीव्र हो जाता है।

सम्बन्धों के इस महापथ पर कौन चल सकता है ? इस प्रश्न का उत्तर महावीर–वाणी में उपलब्ध है। भगवान महावीर ने कहा– 'पणया वीरा महावीहि' जो वीर है, वह महापथ का पथिक बन सकता है। जो वीर है, वह समस्या का समाधान खोज सकता है। जो वीर है, वह सम्बन्धों के महासागर में उतरकर रत्नों को हस्तगत कर सकता है।

वीर वह होता है, जो सामंजस्य में विश्वास करता है, सहअस्तित्व में विश्वास करता है और सहने में विश्वास करता है। संवेदनशीलता की धरती पर उगे सम्बन्धों के बिरवे को पल्लवित, पुष्पित और बरगद की तरह छतनार बनाने के लिए मनुष्य अपने चिन्तन और विवेक का खुलकर उपयोग करे तो वह अपनी और इस पूरे विश्व की समस्याओं से लोहा ले सकता है।

इच्छा और नैतिकता

आचार्य महाप्रज्ञ

नैतिकता के लिए इच्छा को जानना बहुत जरूरी है। इच्छा को जाने बिना और उस पर अनुशासन किये बिना कोई भी व्यक्ति नैतिक नहीं बन सकता। इच्छा का संसार बहुत बड़ा है। भगवान् महावीर ने कहा है–इच्छा हु आगाससमा अणंतिया–इच्छा आकाश की भांति अनंत है। जितना बड़ा आकाश, उतना बड़ा इच्छा का जगत्।

हर क्षण व्यक्ति में अलग–अलग इच्छाएं पैदा होती रहती हैं। इच्छाएं दो प्रकार की होती हैं–चेतन इच्छा और अचेतन इच्छा। चेतन इच्छा प्रकट होती है तो हमें उसका पता लग जाता है। इसका जगत् कुछ छोटा होता है। अचेतन इच्छा का संसार बड़ा है, अनंत है। हमारे भीतर इतनी इच्छाएं हैं कि उनकी न सीमा है और न नाप है। हम जो कुछ करते हैं, उसके पीछे एक इच्छा होती है।

प्रत्येक व्यवहार इच्छा–प्रेरित

मनोविज्ञान के जन्मदाता फ्रायड ने लिखा– मनुष्य के प्रत्येक व्यवहार के पीछे एक इच्छा होती है। आदमी एक अंगुली हिलाता है तो उसके पीछे एक इच्छा होती है। रोटी खाता है तो उसके साथ भी इच्छा जुड़ी हुई होती है। प्रत्येक व्यवहार के पीछे इच्छा होती है। इस सत्य को एक मनोवैज्ञानिक ने प्रकट किया है और यह वास्तविक भी है। हमारा सारा व्यवहार अनुबंधित व्यवहार होता है। जहां कोई इच्छा नहीं होती और कोई व्यवहार घटित हो जाता है, हम उसे आकस्मिक मानते हैं। अनेक व्यक्ति कहते हैं–मेरी इच्छा तो नहीं थी, पर पता नहीं मैं वहां क्यों चला गया? इच्छा तो नहीं थी, पर हाथ हिल गया। इच्छा के बिना होने वाली घटना को आकस्मिक माना जाता है, स्वाभाविक नहीं। स्वाभाविक घटना वही है जिसके पीछे हमारी इच्छा होती है, इच्छा का कोई न कोई अनुबन्ध होता है।

अव्यक्त इच्छा है अविरति

जैन दर्शन और उसकी साधना पद्धति में एक महत्त्वपूर्ण शब्द आता है अविरति। अविरति की तुलना अचेतन इच्छा से की जा सकती है। यह अव्यक्त इच्छा है। व्यक्त इच्छा चेतन बन जाती है। अविरति अव्यक्त इच्छा है।

प्रश्न पूछा गया–हिंसक कौन? असत्यवादी कौन? उत्तर दिया गया–जो जीव को मारता है, वह हिंसक है और वह भी हिंसक है, जिसके मन में जीव को मारने की इच्छा बनी हुई है। दोनों हिंसक हैं। जीव का प्रत्यक्ष घात करने वाला उस समय के लिए हिंसक होता है किन्तु जीव को मारने की जिसकी अचेतन मन में इच्छा बनी हुई है, वह व्यक्ति चौबीस घंटा हिंसक है। प्रवृत्ति की दृष्टि से कोई–कोई आदमी कुछ समय के लिए हिंसक बनता है।

जो झूठ बोलता है वह असत्यवादी है। यह प्रवृत्ति की दृष्टि से है। अवचेतन मन में झूठ बोलने की जो इच्छा बनी हुई है, उसकी अपेक्षा वह आदमी चौबीस घंटा झूठ बोलने वाला है, असत्यवादी है।

प्रवृत्ति का जगत् बहुत छोटा है। अचेतन इच्छा का जगत् बहुत बड़ा है। इसीलिए साधना के क्षेत्र में इस बात पर ध्यान दिया गया कि विरति होनी चाहिए। हमारा अनुशासन केवल चेतन इच्छा पर ही नहीं, अचेतन इच्छा पर भी होना चाहिए। अणुव्रती और नैतिक वही बन सकता है जो एक सीमा तक अचेतन इच्छाओं का नियमन करना प्रारम्भ कर देता है।

संघर्ष इच्छाओं का

इच्छाओं का संघर्ष बहुत बड़ा संघर्ष है। आदमी में मानसिक द्वंद्व चलता है। एक प्रेरणा उसे लक्ष्य की ओर आकर्षित करती है तो दूसरी प्रेरणा उसे रोकना चाहती है। यह द्वन्द्व चलता रहता है। मानसिक तनाव आज की बड़ी बीमारी है। इसका मूल है मानसिक द्वन्द्व, इच्छाओं का संघर्ष। एक आदमी ने नैतिक जीवन जीने का लक्ष्य निर्धारित कर डाला। एक प्रेरणा जागी और लक्ष्य बन गया। जैसे ही वह उस ओर चलना प्रारम्भ करता है, दूसरी–दूसरी इच्छाएं विरोध प्रस्तुत करती हैं, अवरोध पैदा करती हैं। प्रतिद्वन्द्वी इच्छाएं जागती हैं और अव्यक्त ध्वनि में कहती हैं–कैसा पागलपन! क्या ईमानदारी से, नैतिकता से कभी धंधा चला है? धन का अर्जन हुआ है? कैसे ब्याहोगे अपनी बेटियों को? खर्च के लिए कहां से आयेगा पैसा? ये प्रतिद्वन्द्वी इच्छाएं ऐसा घेरा डालती हैं कि उस व्यक्ति का नैतिक बने रहने का लक्ष्य धरा रह जाता है और अनैतिक आचरण प्रारंभ हो जाता है।

दूसरा बाधक तत्त्व है अहंभाव। यह भी व्यक्ति को नैतिक और सदाचारी नहीं रहने देता। अहं मूल इच्छा पर आवरण डाल देता है। भगवान ऋषभ के पुत्र बाहुबली समरांगण में विजयी बन गये, फिर वे मुनि हो गये। मुनि बनने के बाद उन्होंने सोचा–भगवान् ऋषभ के चरणों में उपस्थित हो जाऊं। संकल्प कर डाला। दूसरे ही क्षण अहं आगे आ गया। अहं के परिवेश में उन्होंने सोचा–मेरे निन्यानबे छोटे भाई भगवान् के पास दीक्षित हो चुके हैं। वे संयम–पर्याय में मुझसे बड़े हैं। मुझे उन सबकी वंदना करनी होगी। क्या मैं बाहुबली किसी के सामने झुकूँगा? क्या बड़ा भाई छोटे भाइयों के सामने नत होगा? ऐसा नहीं हो सकता। ऋषभ के चरणों में जाने का बाहुबली का संकल्प टूट गया और वे वहीं कायोत्सर्ग की मुद्रा में स्थित हो गये। चरण स्तब्ध हो गये, रुक गये। अहं का वेग प्रबल था। वे उसके आगे हार गये।

यह है अपने द्वारा अपना संघर्ष, स्वयं से स्वयं का युद्ध। इसमें लड़ने वाला कोई दूसरा होता ही नहीं। मानसिक द्वन्द्व का अर्थ है– लड़ने वाला भी स्वयं और प्रतिपक्षी भी स्वयं। द्वन्द्वी भी स्वयं और प्रतिद्वन्द्वी भी स्वयं। पक्ष भी स्वयं और प्रतिपक्ष भी स्वयं। अपनी ही इच्छाएं सामने आकर ऐसा संघर्ष छेड़ देती हैं कि व्यक्ति आगे कुछ कर ही नहीं सकता।

विवेक इच्छाओं का

जब इच्छाओं का संघर्ष पैदा हो जाता है, अनेक इच्छाएं पैदा हो जाती हैं, तब आदमी को उचित इच्छा का चुनाव करना होता है। जहां इच्छा है वहां विवेक भी है। अगर विवेक नहीं होता तो इच्छा आदमी को अभिभूत कर देती। यह सुविधा है कि इच्छा के साथ विवेक चेतना भी है। हमें एक ऐसा मस्तिष्क मिला है जो इच्छाओं की काट–छांट करता है, चुनाव करता है। चुनाव का प्रश्न अत्यन्त महत्त्व का होता है। इच्छाओं के संघर्ष में किस इच्छा को चुनना चाहते हैं और किसको पराजित करना चाहते हैं, यह महत्त्वपूर्ण है। जीवन प्रतिद्वन्द्वी इच्छाओं का रंगमंच है। कभी अचानक सद्–इच्छाएं जागती हैं, मनुष्य नैतिकता और आध्यात्मिकता की ओर प्रस्थित होने का संकल्प करता है। पर जब प्रतिद्वंद्वी इच्छाओं का प्रहार होता है तब टिकने वाला ही टिक पाता है।

मैं जब प्रव्रजित हो रहा था तब मेरे साथ 5–6 व्यक्ति और दीक्षित होने वाले थे। मैं अकेला मुनि बना, वे यों ही रह गये। इच्छाओं का ऐसा दबाव आया कि वे सब उनके नीचे दब गये, पराजित हो गये। जब प्रतिद्वंद्वी इच्छाओं का प्रहार होना प्रारंभ होता है तब अपने लक्ष्य पर या अपनी सद्–इच्छा पर अडिग रहना कठिन हो जाता है। लक्ष्य को बनाये रखना एक समस्या हो जाती है।

अनैतिकता का कारण

अनैतिकता आज की ज्वलंत समस्या है। सभी उसके परिणामों को भोग रहे हैं। कहीं भी चले जायें, सर्वत्र अनैतिकता का बोलबाला है। हर आदमी के मन में शिकायत है और हर आदमी उसे भोग रहा है। जो शिकायत करता है वह भी अनैतिक आचरण करता है। प्रश्न उठता है कि बुराई को जानते हुए भी आदमी उसका आचरण क्यों करता है?

अनजान आदमी बुराई करता है तो माना जा सकता है कि अज्ञानवश वैसा कर रहा है, पर बुराई को जानने वाला वैसा करता है तो बात समझ में नहीं आती। जो यह नहीं जानता कि आग में हाथ डालने से हाथ जलता है, वह यदि आग में हाथ डालता है तो बात समझ में आ जाती है। मगर जो परिणाम को जानते हुए भी आग में हाथ डालता है तो असमंजसता पैदा हो जाती है। इसका समाधान यही है कि वैसे व्यक्ति इच्छाओं के संघर्ष में जी रहे हैं। यह एक महायुद्ध है, जो दिमाग में निरंतर चलता रहता है। बहुत कम व्यक्ति इस चक्र से बच पाते हैं। ऐसी स्थिति में क्या हम कल्पना कर सकते हैं कि आदमी नैतिक बन सकता है? अणुव्रती बन सकता है ?

बंधन : मोक्ष

आदमी कितनी बार बंधता है और कितनी बार मुक्त होता है। समस्याओं का उलझना बंधन है और समस्याओं का सुलझना मोक्ष है। हम वर्तमान की बात करें। जिसका इच्छाओं पर अनुशासन नहीं है वह आदमी बंधता है, आगे से आगे बंधता चला जाता है। जिस व्यक्ति का अपनी इच्छाओं पर अनुशासन हो गया, मुख्य इच्छा का चुनाव कर प्रतिद्वंद्वी इच्छाओं को जिसने पराजित कर डाला, वह खुलता चला जाता है। उसकी सारी समस्याएं सुलझ जाती हैं।

यह वह बिन्दु है जहां ध्यान के प्रयोग को समझा जा सकता है। ध्यान के बिना एकाग्रता की शक्ति का विकास

नहीं होता, निर्विचार चेतना का विकास नहीं होता और उसके बिना इच्छाओं पर अनुशासन करने की शक्ति का विकास नहीं होता। हमारा मनोबल इतना प्रबल हो कि इच्छाओं का नियमन किया जा सके। इच्छा के संघर्ष में हम पराजित न हों, इच्छा को पराजित कर दें। ऐसा होना मनोबल के बिना संभव नहीं है और एकाग्रता तथा निर्विचारता के बिना मनोबल संभव नहीं होता। यदि हम एक विचार पर दस मिनट भी टिक सकें तो दस दिन में पता चल सकता है कि शक्ति किसको कहते हैं? शक्ति कैसे फूटती है? शक्ति के इस स्रोत का स्वयं अनुभव होने लग जाता है। जो व्यक्ति आधा या एक घंटा एक विचार पर टिक पाता है, उसे देवता भी विचलित नहीं कर सकते।

परिस्थिति को सहना आसान नहीं

व्यक्ति के सामने प्रतिकूल और अनुकूल दोनों प्रकार की बाधाएं आती हैं। प्रतिकूल बाधाओं को सहना सहज होता है, पर अनुकूल बाधाओं को सहना अत्यन्त कठिन होता है। वही व्यक्ति अनुकूल बाधाओं को सह सकता है जिसने एकाग्रता की शक्ति को विकसित कर लिया है। वह चट्टान जैसा रहने में सक्षम हो जाता है।

जो व्यक्ति कायसिद्धि, वाक् सिद्धि और मनःसिद्धि कर लेता है, वही इस प्रकार की चेतना का विकास कर सकता है। उसमें कोई प्रकंपन नहीं होता, कोई विचलन नहीं होता। जो अपने शरीर, वाणी और मन को स्थिर रखना नहीं जानता, उसके लिए पग–पग पर विचलन है। ऐसा आदमी परिस्थिति न आये, तब तक अविचलित रहता है, परिस्थिति सामने आते ही डगमगा जाता है।

बाधक है इच्छाओं का द्वन्द्व

नैतिक होने के लिए आध्यात्मिक होना बहुत जरूरी है। आध्यात्मिक होने का अर्थ है–अपने भीतर प्रवेश करना, अन्तर्जगत् में होने वाले प्रकंपनों और घटनाओं का अनुभव करना। क्षण–क्षण में उत्पन्न होने वाली इच्छाओं को जानना। इच्छा के प्रति जागरुकता बढ़ते ही उसे भोगने की बात कमजोर हो जाती है। कोई आदमी इच्छा को जानकर ही नैतिक बन सकता है। आज का कथन है–वर्तमान परिस्थिति नैतिक होने में बाधक है। यह निष्कर्ष सही नहीं है। बाधा परिस्थिति पैदा नहीं करती। बाधा पैदा करता है इच्छाओं का द्वन्द्व।

इच्छा का अपने–अपने क्षेत्र में महत्त्व है। वह मानवीय चरित्र की अभिव्यक्ति है, जीवन–यात्रा का एक अनिवार्य अंग है। उसकी उपेक्षा करना संभव नहीं है और उसकी हर आज्ञा को शिरोधार्य करना खतरे से खाली नहीं है। इन दोनों के बीच में मार्ग खोजना है और वह है इच्छा का परिष्कार। इच्छा के परिष्कार का दूसरा नाम है – नैतिकता।

प्रेरक प्रसंग

सच्ची शिक्षा

एक संत बहुत विद्वान थे। साधना में भी वे उच्च सोपान पर पहुँचे हुए थे। सादा जीवन और उच्च विचार ही उनकी संपदा थी। अनेक शिष्य उनके पास रहकर शिक्षा ग्रहण करते थे।

एक दिन महात्मा जी प्रवचन के लिए किसी दूसरे स्थान पर जाने वाले थे। शिष्यों ने पूछा– "गुरुवर! हमारी शिक्षा कब पूर्ण होगी और हम कब इस लायक बनेंगे कि कहीं अन्यत्र जाकर आपकी ही तरह लोगों को धर्म का पाठ पढ़ा सकें?"

महात्मा जी ने कहा, "तुम सभी मेरे साथ चलो, तुममें से जिसने शिक्षा पूर्ण कर ली होगी, अगली बार से प्रवचन के लिए जा सकता है।"

सभी शिष्य अपने गुरु के साथ रवाना हो गये। महात्मा जी के प्रवचन के बाद भक्तों ने उन्हें बहुमूल्य उपहार भेंट किये। महात्मा जी सारी सामग्री के साथ एक अन्य स्थान के लिए रवाना हुए। रास्ते में भारी बारिश के कारण उनकी गाड़ी एक नाले में फँस गयी। महात्मा जी ने शिष्यों से कहा, "इस गाड़ी में जो बहुमूल्य सामान है, उसे यहां से बाहर निकाल कर किसी सुरक्षित स्थान पर ले चलो।"

सभी शिष्य जहां जल्दी–जल्दी भक्तों द्वारा दी हुई बहुमूल्य सामग्री समेटने में लग गये, वहीं एक शिष्य महात्माजी को संभाल कर गाड़ी से बाहर लेकर आया।

महात्मा जी ने पूछा– "वत्स ! तुम भक्तों द्वारा दी गयी बहुमूल्य सामग्री क्यों नहीं समेट रहे हो?"

शिष्य ने उत्तर दिया, "महाराज जी, मेरे लिए तो सबसे बहुमूल्य आप हैं। आप जहां हैं, वहां ये वस्तुएं अनेक बार आ सकती हैं, लेकिन ये वस्तुएं आपका एक अंश भी पैदा नहीं कर सकती हैं।"

महात्मा जी मुस्कुराये और उस शिष्य से बोले, "तुमने अपनी शिक्षा सही अर्थों में पूरी की है। तुम लोगों को ज्ञान बाँटने जा सकते हो...बाकी शिष्यों को अभी और शिक्षा–दीक्षा की जरूरत है।"

जैसी करनी वैसा फल

■ डॉ. विजयप्रकाश त्रिपाठी ■

अक्सर लोग यह कहते सुने जाते हैं कि यदि ईश्वर समदर्शी होता तो विश्व में इतनी विषमता नहीं दिखायी देती। किसी के पास तो कुबेर जैसी अकूत सम्पत्ति है तो कोई बिलकुल विपन्न है। कहीं स्वर्ग का सुख है तो कहीं नरक जैसी यातनाएं। यदि हम कर्म–फल–व्यवस्था का गहराई से अध्ययन करें तो पायेंगे कि भगवान का इस तथ्य से कोई लेना–देना नहीं है। वह न तो किसी पर प्रसन्न होकर उसे धनवान बनाता है और न कुपित होकर किसी पर कहर बरपाता है। यदि ऐसा होता तो वह नास्तिकों को बर्बाद कर देता, परन्तु देखा जाता है कि समाज में नास्तिक भी खूब फलते–फूलते हैं।

वास्तविकता तो यह है कि जीवन की बगिया में कर्म के रूप में हम जो कुछ बोते हैं, वही काटते रहते हैं। इसमें न प्रकृति–सत्ता की कोई भागीदारी है और न ही उसका कोई सरोकार है। यहाँ अच्छा–बुरा जो कुछ हम भोगते हैं, वह सब कुछ कर्मों की प्रकृति के हिसाब से हमें प्राप्त होता रहता है। कुछ की प्रतिक्रिया शीघ्र परिणाम प्रस्तुत कर देती है तो कुछ में लंबा समय लग जाता है।

कर्मों के शुभाशुभ परिणाम क्रिया के भीतर निहित हैं। जिस प्रकार बीज से वृक्ष का जन्म होता है, वैसे ही अच्छे का अच्छा और बुरे का बुरा फल कर्मों की प्रकृति के अनुरूप मिलता रहता है। बीज यदि अच्छे हों, तो फसल अच्छी होकर रहेगी, जबकि खराब बीज से अच्छे साधन के बावजूद अच्छी फसल नहीं हो सकती। परिस्थितियां, वातावरण, खाद, पानी, जैसे बाह्य कारण तो न्यून अंशों में ही फसल को प्रभावित कर सकते हैं। मुख्य कारक तो बीज के भीतर उपस्थित है।

शरीर की छाया सदैव साथ रहती है। इसे मिटाना असंभव और मूर्खता है। शरीर जैसा होगा, उसी के अनुरूप उसका बिम्ब भी दुबला, लम्बा, मोटा, छोटा होगा। इसके स्वरूप को परिवर्तित करना संभव ही नहीं है। फिर कर्मफल तो मानव की पहुँच से नितान्त परे है। भला उसे वह कैसे बदल सकता है? उत्थान– पतन, रोग–निरोग जैसी परिस्थितियां भी उन कर्म–बीज के प्रतिफल हैं, जो कभी बोये गये थे।

इस तरह यहां जो कुछ बोया जाता है, वही काटने का विधान है। बोने और काटने में देर हो सकती है, पर काटा वही जायेगा जो बोया गया था, इससे कम या ज्यादा कुछ भी नहीं। चूंकि इसमें कर्मफल की स्वयं संचालित प्रक्रिया के अनुसार कर्ता को दण्ड या पुरस्कार मिलता है। अतः ईश्वर को इसके लिए दोषी नहीं ठहराया जा सकता। ठीक उसी प्रकार जैसे दीवार पर गेंद मारने से वह मारने वाले की ओर लौट आती है। इसमें न गेंद का दोष है, न दीवार का। स्वयं संचालित न्याय–विधान को तब मनुष्य और सरलता से समझ पाता, यदि प्रत्येक व्यक्ति को अपने पूर्व जन्म देख लेने की दिव्य दृष्टि प्राप्त होती। फिर व्यक्ति आसानी से जान लेता कि आज वह जो कुछ भुगत रहा है, वह उसके बीते हुए कल के कारनामों का प्रतिफल है। किन्तु कर्मफल विधान प्रक्रिया के अनुसार यह सब मुहरबन्द है।

कर्मफल की उक्त व्याख्या वैज्ञानिकों, नास्तिकों जैसे अनीश्वरवादी लोगों के लिए भी उतनी ही मान्य है, जितनी आस्तिकों के लिए। अतएव उन्हें इस भ्रम में नहीं पड़ना चाहिए कि उनके समाज और समुदाय में ईश्वरीय सत्ता की अवधारणा नहीं होने मात्र से ही वे कर्मों के फल से बचे रह जायेंगे। कर्मफल का सच्चा कारण स्वयं कर्ता के कर्म हैं। इसे भली प्रकार समझने से स्पष्ट हो जाता है कि मनुष्य स्वयं अपने भाग्य का निर्माता है।

कानपुर निवासी लेखक जाने–माने साहित्यकार तथा रामकथा व रामलीला के विश्लेषक हैं। ये शताधिक सम्मानों से अलंकृत हो चुके हैं तथा सम्प्रति कानपुर से प्रकाशित 'जयतु हिन्दू विश्व' मासिक के प्रधान सम्पादक हैं।

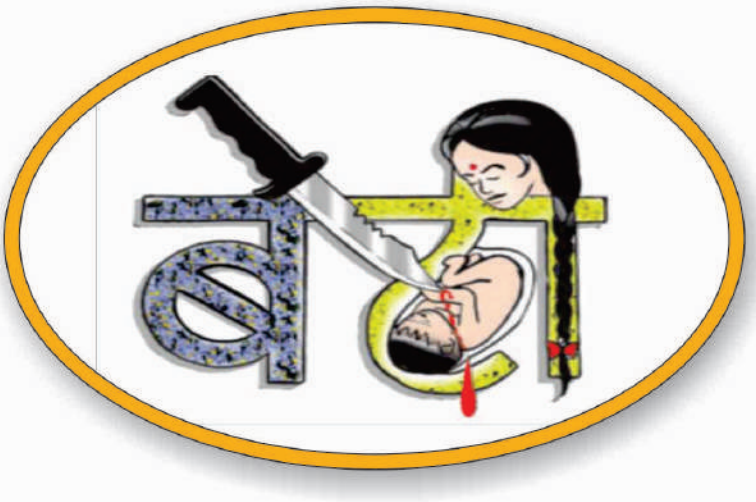

भ्रूण हत्या : मानवता के सिर पर कलंक

■ मुनि मदनकुमार ■

मानव–हत्या के तीन प्रकार हैं– आत्महत्या, पर हत्या और भ्रूण हत्या। मानव जाति के लिए ये तीनों ही अभिशाप हैं। आत्महत्या करने वाला आवेश और निराशा से ग्रस्त होकर अपनी इहलीला को समाप्त कर देता है, पर हत्या करने वाला प्रतिक्रिया और प्रतिशोध की ज्वाला से आहत होकर दूसरों के जीवन को नष्ट कर देता है। भ्रूण हत्या की विडम्बना तो यह है कि जन्म से पहले ही शिशु की हत्या कर दी जाती है। कैसी साजिश है यह! जन्मदात्री माता और जीवनदाता डॉक्टर दोनों मिलकर इस काली करतूत को अंजाम देते हैं। यह क्रूरता की पराकाष्ठा है।

भ्रूण हत्या समनस्क पंचेन्द्रिय प्राणी की हिंसा है और वह भी ममता की प्रतिमूर्ति कहलाने वाली माता के द्वारा। प्रायः स्त्री भ्रूण की हत्या की जाती है। क्या यह नारी के द्वारा नारी की घोर अवहेलना नहीं है? भगवान महावीर ने कहा– "सभी जीवों में जिजीविषा होती है और सुख की आकांक्षा होती है। इसलिए हर प्राणी जीवन के लिए लाख प्रयत्न करता है और सुख प्राप्ति के लिए करोड़ प्रयत्न। जीवन की चाह मौलिक प्रेरणा है। शायद प्राणों की भिक्षा माँगता हुआ भ्रूण मानसिक स्तर पर प्रार्थना कर रहा है – "हे मां। मैं आपकी पुत्री राजकुमारी हूँ। मेरी जगह यदि भाई का जन्म होता तो क्या आप उसका पालन–पोषण नहीं करतीं? यदि मैं जन्म लेती हूँ तो इसमें मेरा क्या दोष? मैं कन्या हूँ, इसलिए आप तिरस्कार करती हैं तो यह आपके मातृत्व को शोभा नहीं देता। मैं अबोल हूँ और अपने प्राणों की भीख माँगती हूँ। क्या आप इसे ठुकराने का साहस करेंगी ?" दुःख में व्यक्ति परमात्मा को अवश्य याद करता है। निराशा के बादलों में वही आशा की किरण है, इसलिए उसे ही आलम्बन भूत माना जाता है। भ्रूण भी संभवतः अंतिम निवेदन यही करता होगा– "पुत्र प्राप्ति की लालसा में किसी अबोध बालिका को बलि पर चढ़ाना कहां का न्याय है? संसार में प्रचलित सभी धर्मों में भ्रूण हत्या को महापातक एवं जघन्य अपराध माना गया है। तुम इस कृत्य को दुनिया से भले ही छिपाओ, लेकिन सर्वज्ञ–सर्वदर्शी परमात्मा से यह बात कैसे छिपकर रहेगी?"

भ्रूण हत्या अपने ही खून का खून है। इसे मानवीय मूल्यों पर डंक समझना चाहिए। यह स्वार्थ, अज्ञान और क्रूरता की पराकाष्ठा है। भ्रूण हत्या अध्यात्म की दृष्टि से घोर पाप है एवं कानून की दृष्टि से घोर अपराध है। जो लोग भ्रूण हत्या करते हैं, वे जीवन भर संताप का अनुभव करते हैं। सभी शास्त्रों के अनुसार मानव जीवन श्रेष्ठ है, उसमें हत्या, आत्महत्या और भ्रूण हत्या तीनों ही त्याज्य हैं। स्वस्थ समाज में इनका कोई स्थान नहीं है। धार्मिकता पर यह कलंक है।

भ्रूण हत्या अहिंसा की चेतना पर कड़ी चोट है। स्त्री–पुरुष की समानता के सिद्धांत रूपी राजमार्ग पर यह एक विस्फोट है। भ्रूण पर यह कैसी आतंक की छाया है? कैसा क्रूरतापूर्ण आघात है? जो लोग भ्रूण हत्या करते हैं, समय आने पर उनमें हिंसा की वैसी भावना दूसरों के प्रति भी पैदा हो सकती है।

क्या हिंसा की प्रवृत्ति हिंसा का संस्कार पैदा नहीं करेगी? जिस समाज में अहिंसा की चर्चा हो, उस समाज में चलने वाली यह भ्रूण हत्या क्या घोर विडम्बना नहीं है? एक ओर अहिंसा की दुहाई दी जाये और दूसरी ओर यह जघन्य पाप चलता रहे, यह बुद्धिगम्य कैसे होगा? भारतीय संस्कृति का उद्घोष है– 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता।' एक ओर नारी की महिमा का गायन और दूसरी ओर नारी का नाश। भारत और चीन के ताजा आंकड़े बता रहे हैं कि स्त्री और पुरुष का संतुलन बुरी तरह डगमगा रहा है

▼ भ्रूण हत्या अहिंसा की चेतना पर कड़ी चोट है।
▼ स्त्री- पुरुष की समानता के सिद्धांत रूपी राजमार्ग पर यह एक विस्फोट है।
▼ जो लोग भ्रूण हत्या करते हैं, समय आने पर उनमें हिंसा की वैसी भावना दूसरों के प्रति भी पैदा हो सकती है।

और अपराध–वृत्ति बढ़ रही है। समाज की स्वस्थता के लिए संतुलन जरूरी है। अनुपात बिगड़ना नहीं चाहिए। महान दार्शनिक आचार्य श्री महाप्रज्ञ विनोद के स्वर में कहा करते थे कि यों ही भ्रूण हत्या का दौर चलता रहा तो स्त्री जाति ही समाप्त हो जायेगी और फिर पुरुष भी कहां रहेंगे? इस दुर्दान्त समस्या का समाधान यही है कि जीवन में करुणा का विकास किया जाये। कुछ लोग दहेज प्रथा के भय से स्त्री–भ्रूण की हत्या करते हैं, किंतु दहेज की ओट में भ्रूण हत्या को उचित नहीं ठहराया जा सकता। दहेज को बंद किया जा सकता है किंतु भ्रूण को कदापि न मारें। विज्ञान ने भ्रूण के लिंग–परीक्षण की सुविधा प्रदान की है किंतु यह आज हिंसा का पैगाम बनकर दुविधामूलक बन गया है।

धर्मावलम्बी लोग भ्रूण हत्या और दहेज हत्या की बात सोच भी कैसे सकते हैं? जो ऐसी हिंसा में संभागी बनते हैं, उन्हें धार्मिक मानने में भी लज्जा का अनुभव होता है। अध्यात्म शिरोमणि आचार्य श्री महाप्रज्ञ कहते हैं कि जिस समाज में नशा, हत्या, भ्रूण हत्या और तलाक की प्रवृत्ति चलती है, वह रुग्ण समाज है। ऐसी हिंसा में प्रवृत्त होने से पहले मनुष्य यह सोचे कि मुझे आगे भी जन्म लेना है तथा मैं साथ में क्या लेकर जाऊँगा? अनुभव का स्वर है कि हिंसा जघन्य अपराध है। अनजान में हुई हिंसा क्षम्य हो सकती है, किंतु जान–बूझकर की गयी यह घोर हिंसा क्षम्य कैसे हो सकती है? स्वस्थ समाज संरचना में स्त्री और पुरुष एक–दूसरे के पूरक हैं, फिर यह रुग्ण मानसिकता क्यों अपनायें?

अणुव्रत आचार संहिता का पहला नियम है – *"मैं किसी निरपराध प्राणी की हत्या नहीं करूँगा।"* इस नियम को स्वीकार कर लेने पर भ्रूण हत्या जैसी पापकारी प्रवृत्ति को घर–परिवार में पनपने का मौका ही नहीं मिलता है। यह नियम अहिंसक जीवन शैली का आधार बन सकता है और भ्रूण हत्या की भयानक प्रवृत्ति से मुक्ति दिला सकता है।

लेखक जैन तेरापंथ परम्परा के महाव्रती संत हैं। सामाजिक समस्याओं के समाधान की दिशा तथा अणुव्रत के प्रति उनकी अभिरुचि लेखनी के माध्यम से सामने आती रहती है।

शब्द–शब्द में इत्र

■ अशोक अंजुम ■
गीतकार और ग़ज़लकार – अलीगढ़

माँ थी घर में जब तलक, जुड़े रहे सब तार।
माँ के जाते ही उठी, आँगन में दीवार।।

माँ ने बचपन में दिये, जो–जो हमें उसूल।
जीवन में वे सर्वदा, बनकर महके फूल।।

सदा पिताश्री से मिला, हमको यूँ अनुराग।
अन्दर–अन्दर मोम था, ऊपर–ऊपर आग।।

वाह–वाह री जिंदगी, क्या दिखलाती रंग।
साँसों–सोचों में बसी, अन्धी एक सुरंग।।

चलो निकल जायें कहीं, लेकर अपनी पीर।
लेकिन पाँवों में पड़ीं, बड़ी–बड़ी जंजीर।।

जिन्हें सुनाने हम गये, यारो अपना हाल।
वे ज्यादा बदहाल थे, और अधिक वाचाल।।

श्वेद–बूँद पाकर उगे, बंजर में भी अन्न।
तू प्रसन्न तो हर तरफ धरती रहे प्रसन्न।।

ओ मेहनत के देवता, मत आशाएँ छोड़।
देखें जीते कौन तब तुझसे लेकर होड़।।

भयाक्रांत पीपल खड़ा, डरा–डरा–सा नीम।
नाप–तौल क्यों कर रही, बाबूजी की टीम।।

अरे मूर्ख, ये काटकर, आँगन वाला नीम।
तुमने आमंत्रित किये, घर में वैद्य–हकीम।।

हम हैं गायक वक्त के, सच–सच करते बात।
हर युग में जीते रहे, बनकर हम सुकरात।।

मीरा गायें प्रेम–पद, तुलसी राम–चरित्र।
कितने ही कवि रच गये, शब्द–शब्द में इत्र।।

विश्व शांति का सच्चा नारा

भाईचारा...भाईचारा

विश्व अंतर धार्मिक सद्भावना सप्ताह पर विशेष

■ गिरीश पंकज ■

अणुव्रत की आचार संहिता का अगर जन–जन के जीवन में ईमानदारी के साथ पालन कर लिया जाये तो सम्पूर्ण विश्व में एक स्वस्थ वातावरण का निर्माण हो सकता है। अणुव्रत का सिद्धांत कहता है कि मैं मानवीय एकता में विश्वास करूँगा। जातीय रंग के आधार पर ऊँच–नीच का भेद नहीं मानूँगा। मैं छुआछूत से दूर रहूँगा। मैं धार्मिक सद्भाव और सहिष्णुता का पालन करूँगा। ऐसी अनेक सुंदर बातें अणुव्रत के माध्यम से हमें प्राप्त होती हैं। वैसे भी भारतीय संस्कृति का आदर्श वाक्य रहा है– विश्व बंधुत्व और इस महान चिंतन को स्थायी भाव प्रदान करने के लिए संसद के प्रवेश कक्ष में भी अंकित कर दिया गया है :

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम् ।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।

अर्थात् यह अपना है, वह उसका है, यह सोच तो संकुचित मानसिकता वालों की होती है। उदार चरित्र वालों के लिए तो पूरी पृथ्वी ही अपना कुटुम्ब है।

और सच कहें तो पूरी दुनिया का यही मूल मंत्र होना चाहिए। इसी सोच से अनुप्राणित होकर संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी सन् 2010 से प्रतिवर्ष फरवरी के पहले सप्ताह में 'विश्व अंतर धार्मिक सद्भावना सप्ताह' (यूएन इंटरफेथ हार्मनी वीक) की महती शुरुआत की। तब से फरवरी का पहला सप्ताह पूरी दुनिया में सद्भाव सप्ताह के रूप में मनाया जाता है। इस दौरान बड़े–बड़े आयोजन होते हैं। उपस्थित जनसमूह भाईचारे की भावना को और मजबूत करने का संकल्प लेता है।

कौमी एकता की मिसाल भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में यत्र–तत्र–सर्वत्र देखी जा सकती है। हमारा राष्ट्र धर्मनिरपेक्ष है, जहां हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई सब आपस में भाई–भाई की तरह रहते हैं। सबकी अलग–अलग उपासना पद्धति हो सकती है। कोई भगवान कहता है। कोई अल्लाह कहता है। कोई गॉड कहता है। कोई वाहेगुरु कहता है। लेकिन हर कोई उस अज्ञात सत्ता को ही याद करता है, जिसके कारण यह सृष्टि चल रही है। जिसे किसी ने देखा नहीं है लेकिन एक विश्वास है कि कोई ताकत है, जो पूरी दुनिया को संचालित कर रही है। वैसे ईमानदारी से देखा जाये, तो हर व्यक्ति जाति और धर्मविहीन काया के साथ इस धरा पर जन्म लेता है। यह अलग बात है कि धर्म, जाति की सामाजिक व्यवस्था के कारण कोई व्यक्ति रामलाल हो जाता है तो कोई रहमान तो कोई जोसफ। हालांकि कुछ नादान लोग भेद करने की कोशिश करते हैं लेकिन जब भाईचारा का भाव जगाने वाली संस्थाएं भ्रम दूर करने का काम करती हैं, तो भ्रम दूर भी होते हैं और अलग–अलग उपासना पद्धति वाले भी एक मंच पर आकर 'हम एक हैं' का नारा बुलंद करते हैं।

साहित्य का कर्तव्य है दिलों को जोड़ना। लोगों की छोटी सोच समाज को तोड़ने का काम करती है, लेकिन साहित्य की ऊँची सोच समाज को जोड़ने का काम करती है। जोड़ना ही हर समझदार व्यक्ति की संस्कृति है और अलगाव की भावना फैलाना महज विकृति। इस विकृति को कभी भी स्वीकृति नहीं दी जानी चाहिए। विकृति से ग्रस्त प्रकृति के लोगों से दूर रहना ही इंसानियत की सच्ची संस्कृति है। जो लोग इस सोच वाले होते हैं, वे ही विश्व नागरिक कहलाते हैं।

आज हम ग्लोबल विलेज के दौर में रह रहे हैं। तकनीकी दृष्टि से अब पूरी दुनिया एक–दूसरे के साथ गहराई से जुड़ गयी है। सदियों पहले हमारे धर्मग्रंथों ने 'वसुधैव कुटुंबकम्' और 'विश्व बंधुत्व' का नारा दिया था। सर्वोदय के प्रणेता आचार्य विनोबा भावे ने 'जय–जगत' की बात की। यह 'जय जगत' का भाव ही विश्व नागरिकता का विस्तार है। हम किसी भी देश में रहें, लेकिन हमारा दिल पूरी मानवता के लिए धड़कता रहता है। दुनिया के किसी कोने में जब हम अत्याचार देखते हैं,

तो उसके विरुद्ध आवाज उठाते हैं। यह आवाज उठाना ही विश्व नागरिकता का बोध कराता है। चाहे वह रंगभेद की मानसिकता हो या हिंसा की वारदात, उसके विरुद्ध जब हस्तक्षेप की आवाज उठती है, तो विश्व नागरिकता और विश्व भाईचारा की भावना मजबूत होती है। दुनिया के किसी भी कोने में होने वाले अन्याय का प्रतिकार अगर हम अपने देश में रहकर करते हैं, तो विश्व नागरिक होने का फर्ज निभाते हैं। अब समय आ गया है कि हम अपने बच्चों को भाईचारे का महत्व समझायें। सद्भावना की परंपरा से उनको जोड़ें। नफरत हमें क्रूर बनाती है, मगर सद्भावना हमें दयालु बनाती है। हमें मनुष्य बनाती है। महान इंसान बनाती है।

जिस तरह विश्व अहिंसा दिवस, विश्व योग दिवस, विश्व महिला दिवस आदि मनाये जाते हैं, उसी तरह 'विश्व सद्भाव सप्ताह' भी हम सबको उत्साह के साथ मनाना चाहिए और अनिवार्य रूप से इसका विश्वव्यापी आयोजन होना चाहिए। मगर अफसोस, आम तौर पर ऐसे आयोजन केवल सरकारी बनकर रह जाते हैं। जबकि हमें यह अपेक्षा नहीं करनी चाहिए कि सरकार कोई फंड मुहैया करायेगी, तब हम सद्भाव सप्ताह मनायेंगे। मुट्ठी भर लोग मिल–बैठकर आयोजन कर सकते हैं। विद्यालयों में तो सैकड़ों बच्चे उपस्थित रहते हैं। वहां किसी विद्वान को बुलाकर भाईचारे की बात की जानी चाहिए। सद्भावना के गीत गाये जाने चाहिए। इस विषय पर भाषण–निबंध प्रतियोगिताएं होनी चाहिए। अगर नियमित रूप से ऐसे आयोजन होते रहें तो समाज में फैली अलगाव की भावना खत्म होगी और हर व्यक्ति के अंतर्मन में विश्व नागरिकता का बोध भर जायेगा। सभी विश्व नागरिक हो जायेंगे।

हमने कभी–कभी यह देखा–सुना भी है कि किसी मंदिर में किसी व्यक्ति को नमाज पढ़ने की जगह दी गयी। संकट के समय मस्जिद में पंडित को रहने की जगह दी गयी। गोस्वामी तुलसीदास जैसा व्यक्ति जो राम की कथा कहता है लेकिन मस्जिद में सोने की बात भी करता है–'मांग के खाइबो और मसीद में सोइबो।' इससे बड़ी सद्भावना की मिसाल और क्या हो सकती है। हम खोजेंगे, तो ऐसे अनेक उदाहरण मिल जायेंगे, जहां मंदिर–मस्जिद का भेद खत्म हो जाता है। हम हिंदू–मुसलमान न रहकर मनुष्य मात्र रहते हैं। हमें उसी चेतना को लोकव्यापी बनाना है। यह तभी संभव है, जब हम पूरी उदारता के साथ विश्व नागरिक बन जायेंगे। विश्व बन्धुत्व की बात करेंगे और मिलजुल कर आवाज बुलंद करेंगे : "विश्व शांति का सच्चा नारा, भाईचारा... भाईचारा"!

रायपुर निवासी लेखक साहित्य अकादेमी के पूर्व सदस्य तथा सम्प्रति छत्तीसगढ़ राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के प्रांतीय अध्यक्ष हैं। विभिन्न विधाओं में इन्होंने लगभग सौ पुस्तकें लिखी हैं।

हम कहते पालनहार...

■ सतीश उपाध्याय ■

राष्ट्रीय हरित वाहिनी के जिला समन्वयक–मनेन्द्रगढ़ कोरिया

युगों–युगों से हम पर जिसने,
किया सदा उपकार।
जग कहता है इसे 'पेड़',
हम कहते पालनहार।।

ऐसा रिश्ता संबंधों का,
दिखला सकता कोई।
जब भी चोटिल हुईं जड़ें,
शाख–शाख तक रोयी।
आदिकाल से बाँट रहा ये,
सब को गले लगाकर प्यार।
जग कहता है इसे पेड़,
हम कहते पालनहार।।

निकट रहे जब तक वृक्षों के,
तब तक रहे निरोगी।
सुविधाभोगी कंक्रीट ने,
हमें किया अब रोगी।
वक्त यही है करो नमन,
इन को शत–शत बार।
जग कहता है इसे पेड़,
हम कहते पालनहार।।

शांत झील–सा निर्मल मन,
तन में है करुणा का जल।
परोपकार का भाव लिये,
दे सबको सेवा का फल।
ये काष्ठ और पात नहीं हैं,
ये देवों के हैं उपहार।
जग कहता है इसे पेड़,
हम कहते पालनहार।

इसकी सदा निनाद सुनी,
वेद, ग्रंथ और संतों ने।
देवतुल्य ही इसे बताया,
सभी सनातन पंथों ने।
ये तरुवर आराध्य हमारे ,
और यही मुक्ति के द्वार।
जग कहता है इसे पेड़,
हम कहते पालनहार।।

स्वतंत्रता संग्राम की मशाल को जलाये रखने तथा राष्ट्रीय एकता के समन्वय में भारतीय भाषाओं का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के 75वें जन्मदिवस पर प्रकाशित हुआ था दिव्य और भव्य अभिनन्दन ग्रन्थ। समस्त भारतीय भाषाओं के प्रतिनिधि कवियों की रचनाएं थीं शामिल।

चल पड़े कोटि पग उसी ओर...

■ देवर्षि कलानाथ शास्त्री ■

भारत के स्वतंत्रता आंदोलन को भारतीय भाषाओं के साहित्य ने प्रारंभ से ही इतना विपुल और सशक्त समर्थन दिया था, जो पत्रकारिता द्वारा दिये गये संबल के समानांतर और अतुलनीय सिद्ध होता है। क्रांतिकारी आंदोलन की भावभूमि को समर्थन देने वाले साहित्य के साथ ही उस कालावधि के अनंतर गांधीजी के राष्ट्रीयता अभियान, असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन, सत्याग्रह और नरम दलीय संघर्ष को प्रत्यक्ष–परोक्ष समर्थन देने वाला जितना साहित्य समस्त भारतीय भाषाओं में लिखा गया है, उसका आकलन और मूल्यांकन समग्र दृष्टि से तो हो ही नहीं पाया है। क्रांतिचेता शहीदों द्वारा लिखे गये साहित्य (बिस्मिल की आत्मकथा, भगत सिंह की डायरी आदि) के अतिरिक्त क्रांतिकारी आंदोलन को भावनात्मक संबल देने वाला जो साहित्य मराठी, बांग्ला आदि भाषाओं में लिखा गया, उसका झीना–सा विवरण अलग–अलग प्रसंगों में साहित्य के इतिहासकारों ने अवश्य दिया है।

बंकिम का 'आनंद मठ' साहित्य के द्वारा क्रांति के शंखनाद की गूँज फैलाने वाला साहित्य ही तो है। सुब्रमण्यम भारती दूसरी धारा की राष्ट्रीय चेतना के वाहक काव्य के प्रणेता रहे। यह दूसरी धारा 20 वीं सदी के तीसरे दशक से गांधीजी के भारतीय राजनीतिक क्षितिज पर उभरने के बाद से स्वतंत्रता प्राप्ति तक निरंतर प्रवाहमान रही, विपुल से विपुलतर होती गयी और एक व्यापक फलक पर विभिन्न विधाओं के माध्यम से देश के विभिन्न अंचलों के जनमानस को प्रेरित करती रही। मैथिलीशरण गुप्त की 'भारत भारती' और जयशंकर प्रसाद के नाटकों जैसे साहित्य से देश की प्राचीन गरिमामयी निधि का गौरव बोध कराने का जो अभियान प्रारंभ किया गया, उसका पूरक रहा बालकृष्ण शर्मा नवीन, सोहनलाल द्विवेदी, माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्रा कुमारी चौहान आदि अगली पीढ़ी के कवियों का काव्य सृजन। इन सबका तो कुछ आकलन साहित्य–इतिहास के अनुसंधान ने किया है किंतु भारतीय भाषाओं ने इस समूचे राष्ट्रीय महायज्ञ में एक–दूसरे के साहित्य से प्रेरित, अनुप्राणित और अनु समर्थित होकर किस प्रकार का पृष्ठ पोषण देश के स्वतंत्रता सेनानियों को दिया था, इसका समग्र अनुशीलन अभी होना है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के अनंतर तो विभिन्न उपक्रमों के द्वारा सभी भारतीय भाषाओं को एक मंच पर लाकर भावनात्मक एकता को मुक्त रूप में प्रतिफलित दिखाने वाले प्रयास हमारी जानकारी में आये हैं। जैसे आकाशवाणी द्वारा गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर समग्र भारतीय भाषाओं के प्रतिनिधि कवियों की एक सर्व भाषा कवि सभा आयोजित करना किंतु स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान ऐसे सुनियोजित प्रयास कौन करता? सरकारी स्तर पर ऐसे किसी प्रयास की क्या उन दिनों कल्पना भी की जा सकती थी?

फिर सभी भारतीय भाषाओं को एक सूत्र में पिरो कर साहित्य–सुमनों की माला राष्ट्र देवता को अर्पित करने की कोई अवधारणा उन दिनों किसी के मानस में अंकुरित हुई भी होगी या नहीं, ऐसी जिज्ञासा भी आज एक अकल्पनीय–सा स्वप्न लगती है। किंतु यह जानकर आपको संतोष मिश्रित आश्चर्य होगा कि स्वतंत्रता से पूर्व भी समस्त भारतीय भाषाओं के पारस्परिक सहकार और समवेत सद्भाव से अनुप्राणित किसी प्रकार के समन्वित मंच की अवधारणा उस समय के सुधी राष्ट्रचेताओं के मानस में सहज और स्वतः स्फुरित रूप में जागने लगी थी। इसके अनेक छिटपुट प्रमाण उपलब्ध होते हैं।

उस समय सभी भारतीय भाषाओं को मंच देने वाली कोई संस्था गठित हुई थी या नहीं, यह तो ज्ञात नहीं है, पर राष्ट्रीय महत्त्व के विशिष्ट प्रयासों में सभी भारतीय भाषाओं का स्वैच्छिक सहज रूप से स्वतः स्फुरित सहकारात्मक समन्वय होने लगा था। एकात्मता की भावना भारतीय भाषाओं के साहित्यकारों को सद्भाव के सूत्र में बाँधे रखती थी।

जब स्वतंत्रता संग्राम तीव्रता के शिखर पर था, स्वाधीनता का निर्णायक दौर चल रहा था, सारा देश गांधीजी के नेतृत्व में एकजुट था, गांधीजी 75 वर्ष के हुए, तब उस तरह न तो स्वर्ण जयंती, हीरक जयंती, कौस्तुभ जयंती समारोह या अमृत महोत्सव के आयोजन होते थे

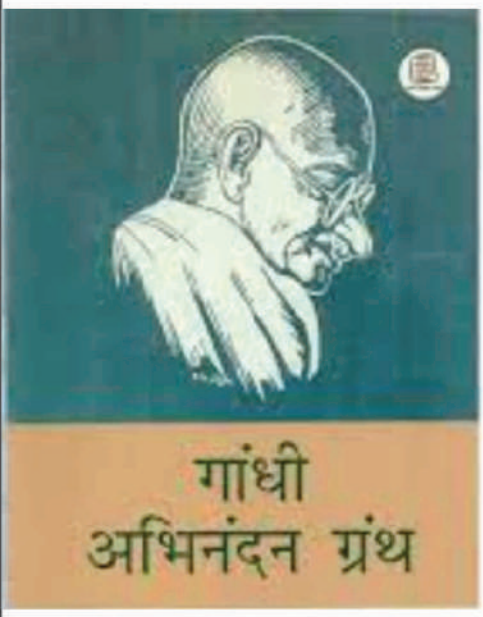

जैसे आज की सत्ताधारी और विशिष्ट हस्तियों के होते हैं और न गांधीजी जैसे निर्लिप्त व अर्थशुचि महापुरुष के लिए कोई ऐसे तड़क–भड़क वाले या खर्चीले उपक्रम की कल्पना भी कर सकता था। किसी तरह के अभिनंदन के प्रस्ताव को ठप करने के लिए गांधीजी की एक डांट ही काफी थी।

उस समय राष्ट्र सेवा के प्रयोजन को सामने रखकर गांधीजी के जन्मदिन (75वीं जन्मतिथि) के अवसर पर जो आयोजन हुए, उसी कड़ी में साहित्यकारों की ओर से यह आयोजन कस्तूरबा स्मारक निधि के बैनर तले हुआ। गांधी अभिनंदन ग्रंथ के प्रकाशन की परिकल्पना की गयी, जिसमें समस्त भारतीय भाषाओं के प्रतिनिधि कवियों द्वारा गांधीजी के प्रति आदर–उद्‌गार व्यक्त करने हेतु लिखी कविताएं शामिल हों। घनश्याम दास बिरला, बद्रीदास गोयनका, भागीरथ कानोडिया आदि उद्योगपतियों और डॉ. अमरनाथ झा, पुरुषोत्तम दास टंडन आदि वरिष्ठ नागरिकों ने बढ़े हुए मूल्य में यह ग्रंथ लेने के नाम पर जो धनराशि दी, उससे यह अभिनंदन ग्रंथ छपा। इसकी विक्रय राशि महादेव भाई स्मारक कोष में गयी।

अभिनंदन ग्रंथ जितना सादगीपूर्ण था, उतना ही भव्य भी। इसका संपादन किया था वरिष्ठ कवि पंडित सोहनलाल द्विवेदी ने जिनकी गांधीजी को समर्पित कविता 'चल पड़े जिधर दो डग मग में चल पड़े कोटि पग उसी ओर' इसमें ही छपी थी। इस अभिनंदन ग्रंथ की भूमिका डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने लिखी। अमरनाथ झा, पुरुषोत्तम दास टंडन, संपूर्णानंद, गोपीनाथ बारदोलाई आदि ने संक्षिप्त शुभकामनाएं दीं। नंदलाल बोस, रविशंकर रावल, मनोज भाई, कनु देसाई, महादेवी वर्मा और कनु गांधी जैसे साहित्यकारों और कलाकारों ने कविताओं के साथ जाने वाले चित्र बनाये। संस्कृत, हिंदी, उर्दू, बांग्ला, गुजराती, मराठी, ओड़िया, मैथिली, राजस्थानी, सिंधी, तमिल, तेलुगू, मलयालम, कन्नड़, अंग्रेजी समेत 17 भाषाओं के शिखरस्थ और विश्व प्रसिद्ध कवियों की गांधीजी को समर्पित कविताएं हिंदी अनुवाद सहित इसमें छपीं। इनमें से कुछ कविताएं आज अमर हो गयी हैं। गांधीजी ने इसे सहर्ष स्वीकार कर 16 अक्टूबर 1944 का लिखा अपना भावभीना आशीर्वाद इसे दिया जो प्रथम पृष्ठ पर छपा।

इसमें विभिन्न भाषाओं के जिन कवियों ने भागीदारी निभायी, उनमें कैसे–कैसे कालजयी विराट व्यक्तित्व हैं, यह देखकर रोमांच होता है। डॉ. राधाकृष्णन ने कविताएं संकलित कीं जिनमें कोलकाता शांति निकेतन के विधु शेखर और काशी के महादेव शास्त्री आदि तो थे ही, जयपुर से मथुरा नाथ शास्त्री भी थे। हिंदी में जगन्नाथ दास रत्नाकर, सत्यनारायण कवि रत्न, मैथिलीशरण गुप्त, सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा, रामकुमार वर्मा, रामधारी सिंह दिनकर, हरिवंश राय बच्चन, गोपाल सिंह नेपाली, बालकृष्ण शर्मा नवीन, रामनरेश त्रिपाठी आदि वे सभी कवि थे जो उस समय अग्रणी पंक्ति में थे। इनके अलावा गोपीनाथ अमन आदि 15 उर्दू शायर, रवीन्द्र नाथ, सत्येन्द्र नाथ दत्त, बुद्धदेब बसु आदि 12 बांग्ला कवि, झवेरचंद मेघाणी, अमरिंदर जोशी आदि 11 गुजराती के, 12 मराठी के, रवि ठाकुर, सरोजिनी नायडू, हुमायूं कबीर, हरिंद्रनाथ चट्टोपाध्याय जैसे अंग्रेजी के 11 कवि, सुब्रमण्यम भारती जैसे तमिल कवि, वल्लतोल जैसे मलयालम के कवि का प्रतिनिधित्व इसमें था।

इस विराट उपक्रम में जिस प्रकार सारी भारतीय भाषाएं अपने आप सहज और स्वतंत्र प्रेरणा से एक मंच पर आयीं, उसे देखते ही यह आकलन हो जाता है कि एकजुटता की उत्कट प्रेरणा ने उन्हें अनुप्राणित कर रखा था।

जयपुर में रहने वाले लेखक भारत सरकार के अधीन गठित संस्कृत आयोग के सदस्य तथा राजस्थान संस्कृत अकादमी के पूर्व अध्यक्ष हैं। ये राजस्थान सरकार के संस्कृत शिक्षा एवं भाषा विभाग के निदेशक भी रहे हैं।

साँसों की सरगम

■ कल्पना मनोरमा ■

परिवर्तन शाश्वत है, सत्य और प्रवाहमान है। प्रत्येक क्षण पृथ्वी पर बदलाव अंकित होते देखे जा सकते हैं। प्रकृति के साथ मनुष्य भी कुछ नया धुनता–गुनता रहता है। मौजूदा दौर में एक अलग तरह का सन्नाटा हमारे इर्द–गिर्द महसूस होता है जो हमें दबोचता जा रहा है। भीड़ में रहकर भी हम अकेले होते जा रहे हैं। पर ताज्जुब इस बात का है कि इसका हमें दुःख तो है लेकिन 'एनी हाऊ' 'कुछ अनोखा' है जिसे अकेले ही पाना चाहते हैं। 'भई गति साँप छछूंदर केरी' जैसी नौबत जान पड़ती है।

देह के पिंजरे में आदमी तोते की तरह कैद हो चुका है लेकिन हवा–हवाई योजनाएं बनाने से बाज नहीं आता। वह दिन में रात और रात में सूरज खोजना आखिर कब बंद करेगा? मन का अन्वेषण करने पर पता चलता है कि जिस अनोखी वस्तु की मनुष्य खोज कर रहा है वह 'सत्य' है। लाख परेशानियां बर्दाश्त कर हम सत्य को पा लेना चाहते हैं क्योंकि सत्य ही खुशी, प्रेम और भाईचारा है।

भौतिकतावाद कितना भी हावी क्यों न हो जाये, हम अपनी मूल प्रवृत्ति जानते हैं। तभी तो हम सत्य के उसी ढाँचे की तलाश में हैं जो कभी संवेदना के चौखटे से बँधा होता था। उसमें करुणा, दया, दान, धर्म मानवीय पुलक के छोटे–छोटे रंग–बिरंगे फुदने लगे होते थे। बीते वक्त में सत्य का अनोखा चौखटा हर घर की दीवार पर सजा होता था और हम प्रत्येक आने–जाने वाले को पुलक–पुलक बताते नहीं थकते थे कि "ये जो सत्य आप देख रहे हैं न! इसे बिल्कुल अपना ही समझिए।" लेकिन न जाने किस घड़ी में सामंती विकास ने अपने ऋतुराजी तरकश में से अमोघ तीर छोड़ा जिसने हमारी भोली–भाली सगुणी पुरवाई को घायल करके रख दिया। हमारी कोमल संवेदनाओं को गठियावात ने घेर लिया। गीली भावनाओं की आर्द्रता को सोखकर 'बी–प्रैक्टिकल' वाला व्यवहार सौंप दिया।

...और हमारे हृदय का तहखाना प्रीतिकर भावना से रिक्त होता चला गया। तथाकथित विकास के तकनीकी भारी–भरकम लिहाफ में उलझकर हम अपनी आत्मा पर बोझ महसूस करने लगे। हमारी बोली–वाणी अपना स्वरूप ऐसे बदलने लगी कि जैसे पतझड़ के आगमन पर पत्ती–दर–पत्ती अपना रंग बदल लेती है।

जीवन और कर्म के मेल से जो शब्दावली प्रकट होनी थी, वह मृतप्राय होने पर विवश है। हमारी जाग्रत चेतना को तो जैसे लकवा मार गया है। इसका न कोई ढंग का इलाज है और न ही चतुर चिकित्सक, लेकिन रुकना मना है। क्यों भई? यदि पूछा जाये तो हर दूसरा व्यक्ति कहता मिलता है,"रुक कर पीछे देखोगे तो पिछड़ जाओगे।" जबकि सब जानते हैं, यादों का बसेरा बीते हुए काल में ही होता है। कभी–कभी तो यादें मरहम का काम भी करती हैं। ऊपर से ऐसे उकताये–ऊबे समय में यदि पीछे मुड़कर न देखा जाये तो जिया कैसे जाये?

जिस रेस में हम दौड़ रहे हैं, क्या उसका कोई चरम बिंदु है? या सुनसान रास्ते हैं और दौड़ते–दौड़ते चुक जाना ही उद्देश्य! जब फेफड़ों में वायु कम होने लगेगी तब क्या पीछे मुड़ने का वक्त मिलेगा? फिर क्या करेंगे...? इसलिए भले ही जो अच्छी यादें विकास पथ पर दौड़ते हुए बहुत पीछे छूट गयी हैं, उन स्मृतियों में हमें रुकना सीखना पड़ेगा और अपनों को सिखाना भी पड़ेगा क्योंकि उसी पुरातन चित्रशाला में हमें मन बहलाने के लिए निश्छल बच्चों के कहकहे, अपनों की मीठी बतकहियाँ, निश्छल लेन–देन, किसी को बिना फायदा उठाये सांत्वना देते हुए भोले–भाले जनों की झाँकियाँ, वेद की निर्मल ऋचाएँ, शुद्ध जीवन जीने की सूक्तियाँ मिल सकेंगी जो ज्यादा नहीं तो पल दो पल ही सही, हमारे जीवन को खुशी से तर करने जैसी 'फीलिंग' से भर जायेंगी।

खुद में रुकना उतना ही जरूरी है जितना आँखों में पानी का होना। वैसे भी आज के हाहाकारी समय में जीने वाले अति व्यस्त मानव को देखकर लगता है कि इसकी

पर सन्नाटे का पहरा

अब तो यह डर सताने लगा है कि आधुनिक विकसित मशीनी उजाले इतने न बढ़ जायें कि हमारी मृदु स्मृतियों की छायाएँ भी मृतप्राय होकर अपना वजूद खो बैठें। हमारी आधुनिक परछाइयाँ इतनी बड़ी न हो जायें कि हमारा आपा ही हिल जाये। इतिहास गवाह है जब-जब ऐसा होता है, तब-तब हमारे पास अपना अस्तित्व भी नहीं बचता।

परवरिश परिवार में न होकर किसी मशीनी आवे में हुई है। चारों ओर 'बी प्रैक्टिकल' और 'पर्सनल प्राइवेसी' वाले शोर से कोमल भावनाओं के हृदय विदीर्ण होते जा रहे हैं।

अब इस बात से कौन मना करेगा कि जब हमारी दुनिया बिन मोबाइल के थी, हम एक–दूसरे के सुख–दुःख में कितने नजदीक थे। सोते–जागते, उठते–बैठते यहां तक कि लड़ते–भिड़ते हुए भी हम अपनों के साथ होते थे। टोला–पड़ोस के सुख–दुःख में भी हम पूरे–पूरे शामिल हो जाते थे। वसंत की आहट पर जितना हम साथ–साथ खिलते थे, उतना ही पतझड़ में भी शरीक हो जाते थे। तब हर उठती–गिरती साँसों की सरगम पर मानवता के गीत गूँजना निश्चित थे।

इतने अपनापे के बाद भी हम महीनों क्या, सालों एक–दूसरे के हाल–चाल नहीं पूछ पाते थे। लेकिन मजाल है कि कोई बुरा मान जाये। क्योंकि तब दूर बैठे व्यक्ति को इतना भरोसा रहता था कि जब भी वह अपने छोर से आवाज लगायेगा, दूसरी ओर से बंदा दौड़ा चला आयेगा। यहां तक कि दूर ब्याही बेटियों को सालों–साल मायके की खैर–खबर की चिट्ठियाँ नहीं पहुँच पाती थीं। फिर भी बेटियों का विश्वास अडिग रहता था कि उनके अपनों ने उन्हें भुलाया नहीं होगा। शायद तब हम तन से दूर और मन से नजदीक थे।

फिर एक दिन हरित क्रांति की तरह मोबाइल क्रांति हुई। अपनों से बिछड़े लोगों ने सोचा अब तो नजदीक आने का उनके पास सुनहरा अवसर है। मोबाइल देवता की अनुमति से आपस में सारा–सारा दिन बातें होना शुरू हुईं किन्तु कुछ ही समय बाद प्रेम बढ़ने की जगह घटने लगा। कटुता आँचल फैलाने लगी। क्यों? क्योंकि इस यंत्र के मार्फत हम सभी एक दूसरे के सुख–दुःख पर निगरानी रखने लगे। किसी के आँगन में सुख की फुलवारी देखकर आज का समय भला कैसे हर्षित हो सकता था सो ईर्ष्या, कुंठा और अहं ने गहरी चुप्पियाँ रचना शुरू कर दीं। अब परिवार के हर सदस्य के पास मोबाइल है लेकिन सन्नाटे हैं कि सिमटने का नाम नहीं लेते। इसे देखते हुए तो यही लगता है कि बातें दिल में जगह होने से होती हैं, जेब में मोबाइल होने से नहीं। कारण सभी जानते हैं लेकिन गुत्थी कोई सुलझाना नहीं चाहता। अच्छी–भली सुसभ्य जिंदगी में मोबाइल नामक यंत्र ने हंगामा खड़ा कर दिया।

अब तो यह डर सताने लगा है कि आधुनिक विकसित मशीनी उजाले इतने न बढ़ जायें कि हमारी मृदु स्मृतियों की छायाएँ भी मृतप्राय होकर अपना वजूद खो बैठें। हमारी आधुनिक परछाइयाँ इतनी बड़ी न हो जायें कि हमारा आपा ही हिल जाये। इतिहास गवाह है जब–जब ऐसा होता है, तब–तब हमारे पास अपना अस्तित्व भी नहीं बचता।

हमारी भावी पीढ़ी का आधुनिक विकास सैद्धांतिक विकास न होकर पथ से भटका हुआ न बन जाये, इसका ध्यान हमें ही रखना होगा। हमारे युवा भारत को बहुत सचेत रहना होगा। उसे प्रौद्योगिकी का शऊर तो सीखना होगा लेकिन संस्कार मूलक सभ्यता को बिना भुलाये। जैसे समय की थरथराहट में सारे मौसम निहित हैं, उसी प्रकार हमारे पास आधुनिक और पुरातन सारे विकल्प उपलब्ध हैं, क्यों न हम एक मध्यम मार्ग का चुनाव कर जीवन को त्वरा प्रदान करें और बुद्धिमानी से अपना विकसित रास्ता प्रशस्त करें।

दिल्ली में रहने वाली लेखिका राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में अध्यापन के साथ ही स्वतंत्र लेखन करती हैं। 'कब तक सूरजमुखी बनें हम' समेत कई पुस्तकें प्रकाशित।

जीवन की दूसरी इनिंग

■ रेनू सैनी ■

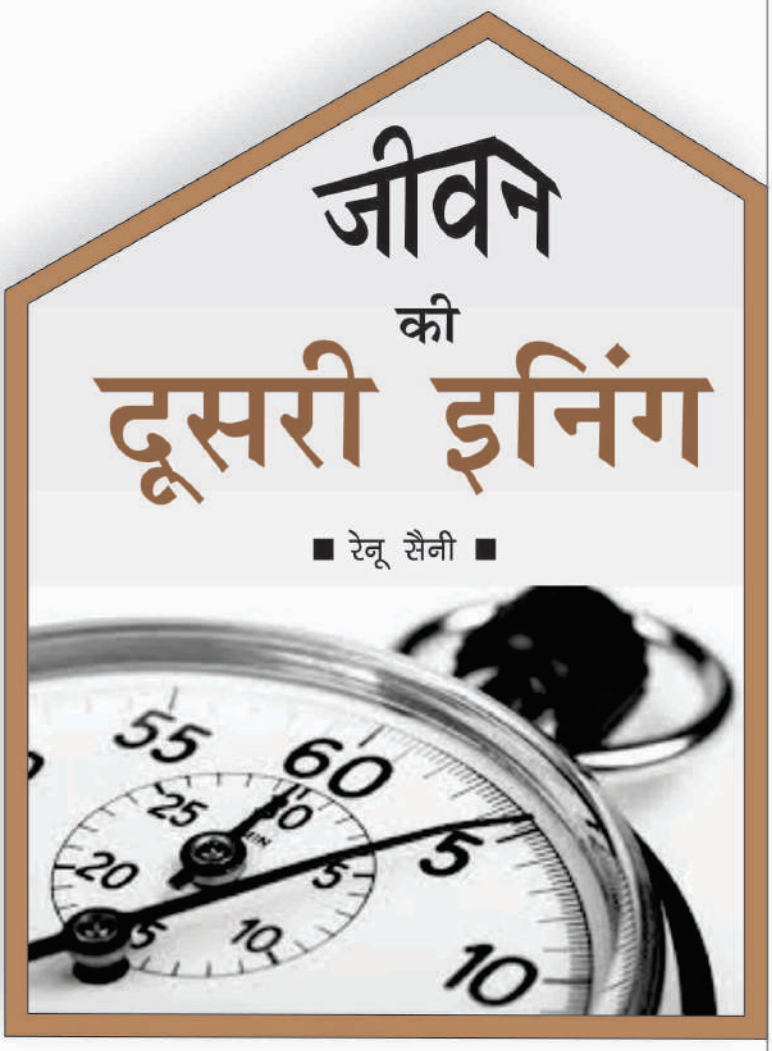

उम्र बढ़ते–बढ़ते व्यक्ति स्वयं के लिए निश्चित दायरे निर्धारित करना आरंभ कर देता है। धीरे–धीरे वह मानने लगता है कि अब उसके मन–मस्तिष्क एवं शरीर में कुछ भी नया करने की हिम्मत एवं उत्साह नहीं रहा। कहते भी हैं कि जो हमारा मन सोचता है, हमारा शरीर भी वैसी ही प्रतिक्रियाएं देने लगता है। शरीर और मन का कनेक्शन एक –दूसरे से जुड़ा हुआ होता है। एक भाग जैसा महसूस करता है, दूसरा भाग भी वैसी ही अनुभूति प्राप्त करता है। ऐसा ही दिमाग के साथ भी होता है।

जॉर्ज ए. डोर्सी कहते हैं, ''आप अपने दिमाग का जितना ज्यादा इस्तेमाल करते हैं, आपके पास इस्तेमाल करने के लिए उतना ही ज्यादा दिमाग रहेगा।'' उम्र व्यक्ति की शारीरिक क्षमता कम कर सकती है लेकिन उसके अनुभव, संघर्ष व उत्साह को नहीं।

नार्मन विन्सेन्ट पील का मानना है, "संघर्ष, लक्ष्य और उत्साह जैसे तत्व ही किसी को चैम्पियन बनाते हैं।" और ये तत्व किसी भी व्यक्ति के अंदर हो सकते हैं। इनका उम्र से कोई लेना–देना नहीं होता। नौकरी पाने की एक निश्चित आयु हो सकती है लेकिन शिक्षा प्राप्त करने, संघर्ष करने, अपनी कम्पनी या नया स्टार्टअप शुरू करने व लक्ष्य पाने की कोई उम्र नहीं होती। कई बार युवाओं के अंदर भी जुनून, तन्मयता एवं संघर्ष का अभाव दिखता है, वहीं 50 पार के कई व्यक्तियों का तन–मन उन्हें जिंदगी में कुछ विशेष हासिल करने के लिए प्रेरित करता रहता है। ऐसे लोग निरंतर अपने कार्य में लगे रहते हैं। वे अपने कार्यों में इतने मग्न रहते हैं कि उम्र उन पर हावी हो ही नहीं पाती।

आइलीन क्रेमर, फाल्गुनी नायर एवं गीता सिंह गौर इस बात का जीता–जागता प्रमाण हैं। ये तीनों ही अलग–अलग क्षेत्रों से हैं। आइलीन क्रेमर 107 साल की महिला हैं। वे ऑस्ट्रेलिया में रहती हैं। वे एक डांसर, आर्टिस्ट, फिल्मकार, कोरियोग्राफर, प्रस्तुतकर्ता और एक सफल लेखक हैं। कुछ समय पहले उन्होंने 7 सफल डांस परफॉर्मेंस के साथ–साथ तीन बड़े डांस कॉन्सर्ट में हिस्सा लेकर न केवल सबको चकित कर दिया अपितु यह कहकर सभी को दाँतों तले अंगुली दबाने पर मजबूर कर दिया कि ''मैं खुद को बुजुर्ग नहीं मानती। ऐसा लगता है कि मैं उड़ सकती हूँ। मैं आज भी स्वयं को टीनएजर मानती हूँ। इसलिए मुझे वृद्धावस्था जैसा आभास नहीं होता।'' 107 साल की उम्र में परफॉर्मेंस देना वास्तव में यह साबित करता है कि आइलीन क्रेमर पर वृद्धावस्था कतई हावी नहीं है।

इसी तरह फाल्गुनी नायर 58 साल की हैं। जब लोग अपने रिटायरमेंट की योजनाएं बनाने लगते हैं, उस उम्र में इन्होंने अपना स्टार्टअप शुरू किया। वह भी एक अच्छी–खासी नौकरी को छोड़कर। जब इन्होंने नौकरी छोड़ी, उस समय इनकी आयु 50 वर्ष थी और ये एक इनवेस्टमेंट बैंक में कैपिटल इनवेस्टमेंट मैनेजिंग डायरेक्टर के पद पर कार्यरत थीं। इस उम्र में एक अच्छे पद को त्याग कर अपना स्टार्टअप शुरू करना निश्चित ही एक जोखिम एवं चुनौती भरा कार्य था, जिसे इन्होंने बखूबी निभाया। हाल ही में इनकी ब्यूटी यूनिकॉर्न नायका फर्म ने शेयर बाजार में प्रवेश करते ही रिकॉर्ड कमाई की और वे ब्लूमबर्ग बिलियनेयर्स इंडेक्स के अनुसार भारत की सबसे धनी स्वनिर्मित (self made) महिला अरबपति बन गयीं।

अब बात करते हैं गीता सिंह गौर की। मध्यप्रदेश के ग्वालियर की रहने वाली गीता एक साधारण गृहिणी हैं। वे गत नवम्बर में आम प्रतिभागियों की तरह टीवी शो 'कौन बनेगा करोड़पति' में भाग लेकर हॉट सीट तक पहुँचीं और जिस उम्र में लोग अपनी याददाश्त कमजोर होने की शिकायत करने लगते हैं, उस उम्र में अपनी याददाश्त एवं सामान्य ज्ञान में रुचि रखने के कारण एक करोड़ रुपये की विजेता बनीं।

53 वर्षीया गीता सिंह का कहना है कि मात्र 19 साल की उम्र में उनकी शादी हो गयी थी। इसके बाद उन्होंने अपनी पूरी जिंदगी बच्चों की परवरिश में गुजार दी, लेकिन दूसरी इनिंग में वह खुद के लिए जीने की ख्वाहिश रखती हैं। ये सभी महिलाएं पूरी दुनिया के लिए एक प्रेरणा हैं।

आज वह समय बहुत पीछे छूट चुका है, जब यह कहा जाये कि पुरुष तो अपने जीवन की दूसरी इनिंग अच्छी तरह आरंभ कर सकते हैं, लेकिन महिलाएं नहीं कर सकतीं। उपरोक्त उदाहरणों से तो यही प्रतीत होता है कि महिलाओं में अपने लक्ष्य के प्रति जुनून, योग्यता, एकाग्रता और क्षमता कहीं अधिक होती है। उम्र का बढ़ना एक सामान्य प्रक्रिया है, लेकिन इस पर नकारात्मक प्रक्रिया देना मनुष्य के जीवन में अपने लिए अवरोध उत्पन्न करना है। मानसिक अवरोध न केवल कार्य में रुकावट उत्पन्न करते हैं, अपितु धीरे–धीरे तन मन में जंग लगाने का कार्य भी करते हैं। इसलिए प्रयास करना चाहिए कि ऐसे अवरोधों को अपने जीवन में स्थान ही न दिया जाये।

यदि व्यक्ति अपनी आंतरिक शक्तियों को जागृत कर ले और हर काम को लगन व जोश से करने की ठान ले तो वह किसी भी उम्र में सफलता की ऊँचाइयों को छू सकता है।

हितोपदेश में कहा गया है, "जिस तरह समय बीतकर नहीं लौटता, उसी तरह आयु भी नहीं लौटती।" आयु बढ़ने के साथ–साथ अनुभव बढ़ता है। इसलिए अनुभवों का प्रयोग अपने जीवन के साथ ही समाज और राष्ट्र को सुखद व बेहतर बनाने में करना चाहिए। यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन की दूसरी इनिंग का स्वागत मुस्कुराते हुए कुछ नया करने का निश्चय करके करेगा, तो जीवन बेहद सुखमय हो जायेगा।

राष्ट्रीय स्तर की एंकर, हिन्दी कमेंटेटर तथा समाचार पत्र–पत्रिकाओं में स्वतंत्र लेखन। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पुरस्कार समेत अन्य पुरस्कारों से सम्मानित। दिल्ली में रहती हैं।

लघुकथा

मंगल

■ दिलीप भाटिया ■

रावतभाटा निवासी लेखक सेवानिवृत्त परमाणु वैज्ञानिक तथा मोटिवेशनल स्पीकर हैं।

सासूजी ने बहू प्रतीक्षा को टोका, "अब तो तुम्हारी परीक्षा हो चुकी है, अपने गहने पहन लो।" प्रतीक्षा बोली– "मम्मीजी, गहने बेचकर स्कूल में गरीब छात्राओं की बोर्ड परीक्षा फीस के लिए विद्यार्थी सहायता कोष में जमा कर दिये हैं।" सासूजी हतप्रभ रह गयीं। "सुहाग के आभूषण दान करने की क्या जरूरत थी? मेरे बेटे का कुछ अमंगल हो जायेगा, यह भी नहीं सोचा?"

प्रतीक्षा का स्पष्टीकरण था–"प्रतियोगिता परीक्षा में गहने पहन कर नहीं जा सकती थी। परीक्षा केंद्र जयपुर भी एक दिन पहले पहुँचना था। गेस्ट हाउस के रूम में किसके भरोसे रखती? इसलिए यहीं सारे गहने उतारकर गयी थी। तीन दिन मंगलसूत्र, अंगूठी, टॉप्स, लौंग, चूड़ियों के बिना रही। इस दौरान मेरे पति परमेश्वर अर्थात् आपके राजा बेटे का कोई अमंगल नहीं हुआ। लेकिन मैं सारे सूत्र पढ़कर गयी थी। मेरा मंगल होने एवं परीक्षा में सफल होने की पूरी संभावना है। इसलिए मेरा निर्णय रहा कि पति के मंगल–अमंगल होने में मंगलसूत्र एवं सुहाग के गहनों की कोई भूमिका नहीं है। मुझे गहने आपने और मेरे पापा–मम्मी ने उपहार स्वरूप दिये थे। इन उपहारों का निर्णय मुझे स्वयं लेने का अधिकार है।"

सासूजी ने फिर टोका, "मेरे रिश्तेदारों की शादियों में तुम्हें बिना गहने पहने नहीं ले जा सकूँगी, ध्यान रखना।"

प्रतीक्षा का दो टूक जवाब था–"आपका आदेश सिर माथे पर, मेरे बिना कोई शादी रुकेगी नहीं। मुझे स्कूल से छुट्टी भी नहीं लेनी होगी। मेरी स्टूडेंट्स की पढ़ाई का नुकसान भी नहीं होगा। थैंक यू मम्मीजी।" सासूजी चुप रह गयीं। बहू से हारने पर कुछ बोल भी नहीं सकीं।

स्वास्थ्य का दुश्मन है क्रोध

■ लायक राम मानव ■

क्रोध एक ऐसा मनोविकार है, जो हमारे स्वास्थ्य का सबसे बड़ा दुश्मन है। यह एक ऐसा विषधर है, जिसे हम स्वयं अपने अंदर पालते हैं और यह हमें ही हर पल डसता रहता है। क्रोध में इंसान बुद्धि–विवेक खो देता है। यह छल, कपट, हिंसा, अधर्म, क्रूरता, निर्लज्जता, अनीति और नीचता का जन्मदाता है। क्रोध के क्षणिक आवेश में आकर व्यक्ति ऐसे काम कर बैठता है, जिससे जीवन भर पछताना पड़ता है। पूरा परिवार कष्ट भोगता है। क्रोध अपनों को अपने से दूर कर देता है। क्रोधी व्यक्ति को कोई पसंद नहीं करता, न कोई उसका सम्मान ही करता है। जेल में बंद अधिकांश कैदी ऐसे होते हैं, जिन्हें उनके क्रोध ने ही वहां तक पहुँचाया है।

क्रोध से केवल सामाजिक जीवन ही नष्ट नहीं होता, बल्कि शारीरिक स्वास्थ्य भी नष्ट हो जाता है। यह हमारे स्वास्थ्य को दीमक की तरह चाटता रहता है और इस तरह नष्ट हुए स्वास्थ्य का कोई इलाज भी नहीं है। अभी तक ऐसी दवा नहीं बनी, जो क्रोध के दुष्प्रभाव को बेअसर कर सके। जब क्रोध आता है तो खून गर्म हो जाता है और इसके प्रवाह की गति भी बढ़ जाती है, जिसके कारण नाड़ी की गति तेज हो जाती है। चेहरा लाल हो जाता है। क्रोध आने पर व्यक्ति की ताकत कुछ समय के लिए कई गुना बढ़ जाती है, किंतु क्रोध शांत होने के बाद वह खुद को अत्यंत दुर्बल और कमजोर अनुभव करता है। उसके सारे अंग–प्रत्यंग शिथिल पड़ जाते हैं। अत्यधिक क्रोध के कारण खून में एक प्रकार का विष पैदा हो जाता है, जो शरीर के हर अंग को नुकसान पहुँचाता है।

भोजन करते समय क्रोध करने पर दूषित भोजन और दूषित रक्त से पाचन क्रिया पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। अध्ययन बताते हैं कि क्रोध में बनाया गया, परोसा गया और खाया गया भोजन पचने में अपेक्षाकृत अधिक समय लेता है। कभी–कभी तो पचता ही नहीं है। इससे पेट दर्द, गैस, एसिडिटी, उल्टी–दस्त आदि दिक्कतें पैदा होती हैं। क्रोध से दूषित भोजन और दूषित रक्त के कारण शरीर के सभी अंग प्रभावित होते हैं। वे ठीक से अपना काम नहीं कर पाते। फलस्वरूप शरीर तरह – तरह के रोगों का शिकार होता जाता है। सामान्य तौर पर दूध, फल, सब्जियाँ और पौष्टिक व्यंजन हमारे स्वास्थ्य के लिए उत्तम होते हैं, परन्तु क्रोध के कारण ये अपने उत्तम और कल्याणकारी गुण खो देते हैं।

क्रोधी व्यक्ति अक्सर तनाव, डिप्रेशन, सिरदर्द और अनिद्रा जैसी समस्याओं से जूझता रहता है, जिससे वह किसी भी प्रकार के शारीरिक, मानसिक, भौतिक, पारिवारिक व सामाजिक सुखों का अनुभव नहीं कर पाता। क्रोध हमारे शरीर को धीरे–धीरे गलाता और क्षय करता है। इससे शरीर सूखता जाता है। बुढ़ापा जल्दी आ जाता है और उम्र भी कम हो जाती है।

क्रोध कभी–कभी हमारे लिए प्राणघातक भी हो जाता है। अत्यधिक क्रोध के कारण ब्लड प्रेशर बढ़ जाता है, जिसके फलस्वरूप हार्ट अटैक आ सकता है, ब्रेन हैमरेज हो सकता है या लकवा मार सकता है।

मुश्किल नहीं है क्रोध से छुटकारा पाना

क्रोध से छुटकारा पाना जितना कठिन है, उतना ही आसान भी है, बशर्ते हम अपने इस सबसे बड़े दुश्मन को पहचान लें। हम क्रोध से उत्पन्न तरह–तरह के रोगों के इलाज के लिए यहां–वहां भटकते फिरते हैं, परंतु कोई लाभ नहीं होता। तब अक्सर यह सोचते हैं कि हम पौष्टिक भोजन करते हैं, हरी साग–सब्जियाँ खाते हैं, दूध पीते हैं, हर तरह के फल और मेवा खाते हैं, फिर भी जाने क्यों बीमारियाँ पीछा नहीं छोड़तीं। इस तरफ ध्यान ही नहीं जाता कि इन बीमारियों की जड़ क्रोध है। यही हमारा सबसे बड़ा दुश्मन है और इस दुश्मन को हमें जड़ से उखाड़ फेंकना है। जब हम यह ठान लेंगे तो क्रोध से छुटकारा पाना आसान हो जायेगा। इसमें ये उपाय आपकी मदद कर सकते हैं :

- क्रोध रूपी दुश्मन को पहचानें और फिर इसका समूल नाश करने का प्रण कर लें।
- अपने बीते हुए जीवन पर विचार करें। देखें कि इस क्रोध ने अब तक आपका कितना नुकसान किया है। साथ ही क्रोध में आकर आपने औरों का कितना नुकसान किया है।
- गौर करें कि जब आप पर कोई क्रोध करता है, अपशब्द कहता है तो आपको कितना बुरा लगता है, कितना दुःख पहुँचता है। इसी प्रकार

आपके क्रोध के कारण दूसरों को भी कष्ट पहुँचता है, जो किसी भी तरह से उचित नहीं है।

* रोज रात में सोने से पहले थोड़ी देर चुपचाप लेटे–लेटे आत्मनिरीक्षण करें और देखें कि आज पूरे दिन में आपने किस–किस पर क्रोध किया और क्यों किया। आपकी वजह से किस–किस को दुःख पहुँचा। क्या सचमुच वे कारण ऐसे थे, जिनके चलते इतना क्रोध किया जाये। उसके बाद निश्चय करें कि कल से ऐसे किसी कारण पर क्रोध नहीं करेंगे।
* दूसरों को अपनी पूरी बात कहने का मौका दें। उनकी बातों पर विचार करें। उनकी भावनाओं और परिस्थितियों को समझें, उसके बाद ही कोई निर्णय लें।
* ध्यान और योग का नियमित अभ्यास आवेग पर नियंत्रण का सबसे प्रभावी उपाय है। निश्चित समय पर प्रतिदिन कम से कम आधा घंटा ध्यान और योग के लिए निर्धारित करें और इसे अपनी आदत बनायें।
* भोजन बनाते समय, परोसते समय और खाते समय मन में यह भाव रखें कि भोजन जीवन का आधार है। यही हमें स्वस्थ और ताकतवर बनाता है। अतः हमें भोजन का सम्मान करना है। मन को शांत रखना है। क्रोध नहीं करना है। प्रेमपूर्वक स्वयं भी भोजन करना है और दूसरों को भी करने देना है।
* कभी किसी की बात बुरी लगे, उस पर क्रोध आने लगे तो चुप रहें और वहां से हट जायें। अपना ध्यान किसी दूसरे कार्य में लगायें।
* क्या आप अपने दुश्मन को अपने घर में रखना पसंद करेंगे? बिल्कुल नहीं करेंगे। तो फिर क्रोध जैसे दुश्मन को अपने अंदर क्यों बिठा रखा है आपने। उसे भगा दीजिए, मिटा दीजिए। प्रेम, शांति, दया, करुणा आदि ऐसे शस्त्र हैं, जो क्रोध को मारने में आपकी मदद करेंगे।
* दूसरों को क्षमा करना सीखें। क्षमा का भाव क्रोध को शांत करता है।

क्रोध हिंसा को जन्म देता है और हिंसा करना पाप है। इस पाप से अपने आप को बचाना है। ऐसा भाव अपने मन में रखें और क्रोध को पास न फटकने दें।

लखनऊ निवासी लेखक बच्चों और प्रौढ़ों के लिए लेखन में संलग्न रहते हैं। साहित्य की विभिन्न विधाओं में अब तक 43 पुस्तकें प्रकाशित। उ.प्र. हिन्दी संस्थान सहित विभिन्न संस्थाओं से सम्मानित हो चुके हैं।

संवेदन

दिव्यांग बच्चों की मसीहा

गुजरात के जूनागढ़ की रेखा बेन परमार, अपनी बड़ी बहन नीलम बेन के इलाज के लिए राजस्थान के नारायण सेवा संस्थान गयी थीं। नीलम बचपन से ही 80 प्रतिशत दिव्यांग हैं। वहां दोनों बहनें करीब डेढ़ साल तक रुकीं। इस दौरान उन्होंने अनेक दिव्यांगों के दुःखों को समझने का प्रयास किया, उनके दर्द को खुद भी महसूस किया और फिर दोनों बहनों ने दिव्यांग बच्चों की सेवा करने का विचार बना लिया।

उन्होंने 3500 रुपये मासिक किराये पर एक कमरा लिया और दौलतपारा के स्लम एरिया से दो ऐसी लड़कियों को लेकर आयीं, जो मानसिक रूप से कमजोर थीं। इन लड़कियों के माता–पिता भी दिव्यांग थे। उस दौरान, नीलम घर पर ट्यूशन पढ़ाती थीं और रेखा जूनागढ़ की एक कम्पनी में काम करती थीं। दोनों मिलकर महीने के 20 हजार रुपये कमाती थीं। उन्होंने अपने दम पर दोनों लड़कियों की सेवा का काम शुरू किया। तकरीबन एक साल बाद उन्होंने जूनागढ़ के पास वडाल गाँव में किराये पर एक छोटा घर लिया। यहां आने के बाद लड़कियों की संख्या भी बढ़कर पाँच हो गयी।

वर्ष 2012 में इन्होंने अपनी संस्था 'सांत्वन विकलांग विकास मंडल' का पंजीकरण कराया। जैसे–जैसे लोगों को पता चला, वे मदद करने लगे। आज यहां 40 दिव्यांग बच्चे हैं। इन्हें नृत्य, क्राफ्टिंग आदि का प्रशिक्षण भी दिया जाता है। नीलम बेन कहती हैं, "यहां रहने वाली ज्यादातर लड़कियां बेसहारा हैं। इनकी सेवा करते हुए मैं अपनी तकलीफ भूल जाती हूँ।"

कहानी

सीख

■ हंसा दसानी गर्ग ■

जब से रमाकांतजी को अपने बेटे सुभाष के समाचार मिले हैं, उनका मन बहुत विचलित है। उनकी पत्नी राधा देवी का तो और भी बुरा हाल है, वे बार–बार उनको ही कोस रही थी कि बरसों पहले यदि वे सुभाष के प्रति इतनी सख्ती नहीं अपनाते और उसकी बात मान लेते तो उनका इकलौता बेटा कभी उनसे संबंध तोड़कर, रूठकर नहीं चला जाता। उस समय भी राधा देवी ने उनसे कितनी मिन्नतें की थीं, मगर उन्होंने स्पष्ट कह दिया–''तुम लोग मुझ पर कितना ही दवाब क्यों न डालो, मैं अपने फैसले पर अटल हूँ।''

बाप–बेटे के बीच अनबन की वजह भी कोई अलग या अनोखी नहीं थी। अधिकतर बेटों की तरह सुभाष भी उन पर दवाब डाल रहा था कि वे अपना पुश्तैनी मकान और जमीन–जायदाद बेचकर उसके एवज में उसे शहर में एक बड़ा मकान दिलवा दें और उसके साथ ही शहर चल कर रहें। सुभाष अपनी बात के समर्थन में यह दलील देता था–''बाऊजी, दिल्ली जैसे महानगर में दो बेडरूम के छोटे से फ्लैट में रहकर गुजारा करना कितना मुश्किल होता है, आप समझ सकते हैं। इससे तो बेहतर होगा कि क्यों न हम एक बड़ा फ्लैट खरीद कर अपनी जिंदगी और जीवनस्तर को सुधारें? बड़े फ्लैट में रहने से मैं भी आपको अपने पास रख सकूँगा, जिससे वृद्धावस्था में आपको गाँव में अकेले नहीं रहना पड़ेगा। वैसे भी आपके बाद यह सारी जमीन–जायदाद मेरी ही होनी है क्योंकि मैं आपका इकलौता वारिस हूँ। वैसे भी आप जानते ही हैं कि मैं, मेरी पत्नी या मेरे बच्चे तो कभी गाँव में आकर रहने वाले हैं नहीं, तो क्यों नहीं आप अपने जीवनकाल में ही अपनी जायदाद बेचकर मुझे शहर में फ्लैट दिलवा दें? जिस तेजी से शहरों में जमीनों के दाम बढ़ रहे हैं, वैसे में हम जितनी देर करेंगे, उतना ही हमें नुकसान होगा।''

पर रमाकांत जी ने स्पष्ट कह दिया–''देखो बेटा, मैंने तुम्हें पहले भी कई बार कहा है कि मैं अपने जीवनकाल में अपनी सम्पत्ति, जमीन या जायदाद न तो बेचूँगा, न ही तुम्हारे नाम करूँगा। मैंने तुम्हें पढ़ा–लिखा कर लायक बनाया, तुम्हारी पसंद से तुम्हारी शादी कर दी, अब तुम अपने दम पर अपना भविष्य बनाओ और उन्नति करो।''

सुभाष ने उन्हें फिर समझाना चाहा–''बाऊजी, जैसा मेरा जॉब है उसमें यह संभव नहीं होगा कि मैं बार–बार दिल्ली से दौड़कर आप लोगों की देखभाल करने आऊँ। यदि आपकी तकलीफ या बीमारी के समय किसी वजह से मैं समय पर नहीं आ पाऊँ तो आप लोग तो आज की पीढ़ी को खुदगर्ज, स्वार्थी और न जाने क्या–क्या कहकर कोसते रहेंगे। इससे तो बेहतर है कि शहर चलकर हमारे साथ रहें। वहाँ आपकी देखभाल भी अच्छे से हो पायेगी।''

राधा देवी दोनों पिता–पुत्र की बात सुन रही थीं। सुभाष की बात का समर्थन करते हुए बोलीं–''यह ठीक

ही तो कह रहा है। बुढ़ापे में हम अकेले गाँव में रहने के बजाय बच्चों के साथ शहर में ही क्यों न रहें? आखिर इसके अलावा हमारा है कि कौन? मैं तो कहती हूँ इतनी जिद ठीक नहीं। बेटे की बात मानने में ही हमारी भलाई है।'' इसके बावजूद वे झुके नहीं। उन्होंने अपने तरीके से बेटे को समझाना चाहा–''बेटे, हम आजीवन जिस परिवेश में रहे हैं, हमें वहीं सकून मिलेगा। आज भले ही तुम हमें उत्साह के साथ शहर ले चलने की बात कर रहे हो, पर मैं जानता हूँ कि छोटी–छोटी बातों में हमारे बीच मनमुटाव होने की आशंका रहेगी। मैं नहीं चाहता कि स्वयं को संभालने का सामर्थ्य होते हुए भी हम बिना वजह तुम पर भार बनें। अभी तो ईश्वर की कृपा से हम स्वस्थ हैं, अपना खयाल रख सकते हैं, आगे की समय आने पर सोचेंगे। वैसे भी आज तुम इस लायक हो गये हो कि अपने दम पर अच्छी–खासी जिंदगी गुजार सकते हो। कुछ अधिक परिश्रम करोगे तो अपने बलबूते पर स्वयं अच्छा मकान भी ले सकते हो। मुझे ही देखो, मैं तो तुम्हारे जितना पढ़ा–लिखा भी नहीं हूँ, पर आज जो कुछ मेरे पास है, वह मैंने अपनी मेहनत से अर्जित किया है, अपने बाप–दादाओं से किसी प्रकार की कोई उम्मीद नहीं रखी थी। इसलिए मैं चाहता हूँ कि तुम भी बार–बार मुझ पर दबाव नहीं डालो तो बेहतर होगा।''

उनके दृढ़ रुख को देखकर सुभाष हैरान था। वह तो बहुत उम्मीदें लेकर आया था, पर उन्होंने तो उसे पूरी तरह नाउम्मीद कर दिया था। उसने पहले तो अनुनय–विनय करके उनसे अपनी बात मनवानी चाही, पर जब इसका कोई असर नहीं हुआ तो उसने धमकी दी कि यदि वे उसकी बात नहीं मानेंगे तो उनसे सारे संबंध तोड़ लेगा। जाते–जाते उनकी निष्ठुरता और एकांगी सोच पर कटाक्ष करते हुए कह गया–''आप इतने खुदगर्ज हो जायेंगे, मैं सपने में भी नहीं सोच सकता था। आपने मुझे पढ़ाया–लिखाया, मेरी शादी की तो कौन–सा मुझ पर एहसान कर दिया। यह तो आपका फर्ज था। अपने रिश्तेदारों, दोस्तों को देखें, क्या उन्होंने अपने बच्चों की खुशियों के लिए त्याग नहीं किया, रघु बाबा को देखें, छगन मामा को देखें, उन सबने भी तो अपने बच्चों की खातिर अपनी जमीन–जायदाद बेचकर उनकी बात मानी कि नहीं? पर आपको कहने का क्या फायदा, आपको तो अपने तथाकथित सिद्धांतों के आगे अपने इकलौते बेटे की भी परवाह नहीं है। जब आपको मेरी सुख–सुविधाओं की फिक्र नहीं तो फिर मुझसे भी उम्मीद न रखें कि मैं आपकी मुसीबत में सेवा करूँगा।''

बेटे की बात सुनकर रमाकांत जी ने इतना ही कहा ''बेटा आज तुम्हें मेरी बातें कड़वी लग रही हैं, अभी तुम मुझे स्वार्थी और हृदयहीन समझ रहे हो, लेकिन जब तुम मेरी उम्र के होगे तब तुम्हें एहसास होगा कि मैं आज जो कुछ भी कह रहा हूँ या कर रहा हूँ, तुम्हारे अच्छे के लिए ही कर रहा हूँ।''

वे आगे कुछ कह पाते, इससे पहले ही उनकी बात काटते हुए उसने कहा–''मैं कोई बच्चा नहीं हूँ, आपके मन में क्या चल रहा है, सब समझता हूँ। हां, इतना जरूर कहूँगा कि मैं कभी आपकी तरह इतना आत्मकेन्द्रित नहीं बनूँगा। मैं अपने बच्चों की खुशियों के लिए उनको मेरी तरह तरसने नहीं दूँगा। जा रहा हूँ। आपकी सम्पत्ति और जमीन–जायदाद आपको मुबारक हो।'' कहता हुआ आवेश और गुस्से में बौखलाया हुआ सुभाष उसी समय घर छोड़कर निकल गया था। उसकी मां ने उसके पीछे–पीछे दौड़कर उसको मनाने और रोकने की बहुत कोशिश की, पर नाकाम रहीं।

सुभाष उस दिन रूठकर गया तो आज तक नहीं लौटा। रमाकांत जी जब अपनी पत्नी को बेटे के गम में उदास देखते तो कभी–कभी उन्हें लगता कि कहीं अपने बेटे को सीख देने के चक्कर में उन्होंने उसके साथ ज्यादती तो नहीं कर दी, पर फिर वे अपने आप को सजग करते कि यदि वे जरा भी कमजोर होकर सुभाष के सामने झुक जाते तो वह जीवन में हमेशा अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए उनका सहारा तलाशता रहता।

हालांकि सुभाष ने उनसे तो सारे संबंध तोड़ लिये थे, पर अपनी मां से पत्रों के माध्यम से कभी–कभी सम्पर्क बनाये रखता। अपने बच्चों की शादियों में भी उसने उन्हें तो नहीं बुलाया, पर अपनी मां को निमंत्रण जरूर भेजा था। उन्हें सुभाष की बेरुखी देखकर धक्का भी लगा था, पर वे कभी मां–बेटे के संबंधों के बीच आड़े नहीं आये, न ही उन्होंने राधा देवी को अपने बेटे से मिलने या उसके पास जाने से कभी रोका। राधा देवी जब भी अपने पौत्रों की शादी से लौटतीं, सुभाष की तारीफ करते नहीं थकतीं। इस बार भी जब उसके दूसरे बेटे की शादी के बाद लौटी तो उन्हें सुनाती हुई कह रही थीं–''सुभाष अपने बच्चों से कितना प्यार करता है, उसने अपना सबकुछ अभी से अपने बच्चों के नाम करने का फैसला कर लिया है। आपने उसकी बात नहीं मानी तो क्या हुआ, आज उसने अपने दम पर बड़ा–सा फ्लैट, कार, नौकर–चाकर आदि सारी सुविधाएं जुटा ली हैं।''

राधा देवी सुभाष की बातें सुनाते–सुनाते रो पड़ी थीं।

रमाकांत जी उनकी बात सुनकर केवल इतना ही बोले–''राधा, जो कुछ तुमने सुभाष के बारे में बताया वह सुनकर बहुत अच्छा लगा, पर मैं अब भी कहता हूँ कि मैंने जो भी निर्णय लिया, वह भले ही तुम्हें गलत लगे, पर आगे जाकर देखना मेरा फैसला हमारे और सुभाष दोनों के लिए ही हितकर था।''

समय व्यतीत हो रहा था। सुनने में आया कि सुभाष के बच्चों के भी बच्चे हो गये थे, वे भी अपने जीवन में सुस्थापित हो गये थे। सुभाष की पारिवारिक

जिम्मेदारियां भी कम हो गयी थीं। इसीलिए उसने दो साल पूर्व ही स्वैच्छिक रिटायरमेंट ले लिया था। इसी बीच एक बुरी खबर आयी कि सुभाष की पत्नी नेहा का अचानक हृदय–गति रुकने से स्वर्गवास हो गया था। उनकी पत्नी तो समाचार सुनते ही बेटे के पास जाने को तैयार हो गयी। अचानक पुत्रवधू की मृत्यु का समाचार सुनकर वे भी दुःखी हो गये थे। उनके बेटे ने भले ही सुख के क्षणों में उन्हें न बुलाया, पर दुःख की घड़ी में तो वे बिना बुलाये भी उसके पास जा सकते थे, यही सोचकर वे भी अपनी पत्नी के साथ बेटे से मिलने के लिए रवाना हो गये। सुभाष को उनके आने की न तो कोई खबर थी और न ही उम्मीद। इसलिए उनको देखकर वह एक बार तो चौंक ही गया। कुछ क्षण तो दोनों एक–दूसरे को देखते ही रह गये। सुभाष कितना बदल गया था। पत्नी की मृत्यु के गम में वह बहुत कमजोर और दुःखी लग रहा था। उन्होंने जब उसकी पीठ पर हाथ रखकर उसे सांत्वना देनी चाही तो उसकी आँखें भर आयीं। सुभाष ने उन्हें अपने बेटों गौरव और सौरव से, पुत्रवधुओं और बच्चों से मिलवाया। सुभाष के बेटों को उन्होंने बचपन में आठ–दस वर्ष की उम्र में देखा था। अब तो वे काफी स्मार्ट हो गये थे। गौरव इंजीनियरिंग की पढ़ाई के बाद किसी मल्टीनेशनल फर्म में था और सौरव चार्टर्ड अकाउंटेंट बनकर प्रतिष्ठित बैंक में कार्यरत था। उसकी दोनों पुत्रवधुएं भी जॉब कर रही थीं। बरसों बाद स्वयं को भरे–पूरे परिवार के बीच पाकर उन्हें भी बहुत खुशी हो रही थी।

हालांकि उसके घर में रहने के कुछ घंटों बाद ही उन्हें महसूस हुआ कि ऊपरी तौर पर सबकुछ सामान्य और सहज लगने के बावजूद कहीं न कहीं कुछ बात जरूर थी जो सुभाष को कचोट रही थी। वह भले ही उनके सामने अपने परिवार के साथ अपनी घनिष्ठता दिखला रहा था, पर उनकी अनुभवी नजरों ने ताड़ लिया था कि सुभाष अंदर से बहुत दुःखी और टूटा हुआ था। उसके और बच्चों के बीच कहीं न कहीं कुछ दरक जरूर गया था। सुभाष ने हालांकि अपने घर में उनका कोई अनादर नहीं किया था, पर बरसों के अंतराल ने, उन दोनों के मध्य औपचारिकता और संकोच की दीवार जरूर खड़ी कर दी थी, इसीलिए दो दिन उसके पास रहकर उन्होंने गाँव लौटने का निर्णय कर लिया था। उनकी पत्नी सुभाष के अकेलेपन को बाँटने के लिए, कुछ दिन उसके पास रहने का मानस बनाकर आयी थीं, पर दो दिनों के प्रवास में ही उन्हें लगने लगा कि उनकी उपस्थिति उनके पौत्रों और पौत्रवधुओं को गवारा नहीं हो रही थी। अपने प्रति उनकी बेरुखी देखकर उन्हें भी वहाँ ठहरना मुनासिब नहीं लगा, इसलिए वे भी पति के साथ वापस चलने के लिए तैयार हो गयीं। उन्हें अधिक आश्चर्य तो इस बात का हो रहा था कि रिटायरमेंट के बाद सुभाष के व्यक्तित्व में बहुत बड़ा परिवर्तन आ गया था। अपने बच्चों के सामने वह बहुत दबा हुआ और असहाय नजर आ रहा था, तभी तो उन्होंने जब वापस जाने की बात की तो उसने औपचारिकतावश भी उन्हें कुछ दिन और ठहरने का अनुरोध नहीं किया।

सुभाष के घर से लौटने के बाद रमाकांत जी का मन वैसे ही उदास था, पर उनके किसी रिश्तेदार ने बताया कि अपनी पत्नी के जाने के बाद अपने बच्चों की बेरुखी से वह बहुत निराश और क्षुब्ध रहने लगा है। अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद वह स्वयं को बहुत अकेला और अशक्त अनुभव करने लगा है। रिटायरमेंट के कारण सारा समय घर में रहने से उसकी उपस्थिति उसके बच्चों को भार स्वरूप लगने लगी है। मन की थकान ने उसके तन पर भी असर दिखाना शुरू कर दिया है, डायबिटीज, उच्च रक्तचाप के कारण वह शारीरिक रूप से भी बहुत कमजोर हो गया है। सुभाष के समाचार जानकर उनका मन कर रहा था कि अविलंब उसके पास जाकर उसे अपने साथ ले आयें, पर अपने बेटे की जिद और हठी स्वभाव को देखते हुए उन्हें आशंका थी कि सुभाष उनकी बात मानेगा भी? वे समझ नहीं पा रहे थे कि क्या करें? इसी पशोपेश में पंद्रह दिन निकल गये कि एक दिन अचानक उन्हें सुभाष का पत्र मिला। उसने लिखा था –

आदरणीय बाऊजी,

प्रणाम। शायद अचानक मेरा पत्र पाकर आपको आश्चर्य होगा, पर आज स्वीकार करता हूँ कि अपने ज्ञान और अनुभव से निःसंदेह आप मुझसे बहुत आगे हैं। आज मुझे यह कहने में जरा भी संकोच नहीं हो रहा है कि जीवन के प्रति आपकी सोच और समझ में आप जीत गये हैं और मैं हार गया हूँ। जिन बच्चों की खुशियों के लिए मैंने सब कुछ न्यौछावर कर दिया, उनके लिए ही मैं अब भारस्वरूप बन गया हूँ। मेरे अपने ही घर में मेरी स्थिति एक रद्दी के सामान की तरह हो गयी है, जिससे जितनी जल्दी निजात पायी जाये, उतना ही बेहतर होता है। जिस घर को बनाने में मैंने अपना तन, मन, धन सब कुछ लगाया, उसी घर का एक कोना भी मेरे लिए छोड़ने में मेरे बच्चों को आज तकलीफ हो रही है, तभी तो आज मुझे वृद्धाश्रम भेजने का प्रस्ताव लेकर आने में उन्हें जरा भी झिझक नहीं हुई। एक बार तो मुझे विश्वास ही नहीं हुआ कि जो कुछ मैं सुन रहा था वह सच था, पर जब उन्होंने अपनी बात को फिर से दोहराया तो मुझे यकीन करना ही पड़ा। बाऊजी, उस समय मुझे आपकी कही गयी एक–एक बात की बहुत याद आयी। वाकई, आपका चिंतन और आपकी सोच कितनी व्यापक थी।

बाऊजी, आज उम्र के इस पड़ाव पर आकर मुझे एहसास हुआ कि आपके जिस निर्णय को मैंने आपकी खुदगर्जी समझा, वह आपकी दूरदर्शिता थी। दूसरों की कीमत पर अपना स्वार्थ साधना अवश्य ही स्वार्थपरता हो सकती है, पर अपनी वृद्धावस्था के लिए समय से पूर्व ही सजग होना जागरुकता कहलाती है। आपने ऐसा किया, इसीलिए जीवन की शाम में भी आप खुश और प्रसन्न हैं, मैंने ऐसा नहीं किया, तभी मैं आज स्वयं को मझधार में पा रहा हूँ। शेष कुशल,

आपका बेटा–सुभाष।

सुभाष के दर्द और व्यथा से भरे पत्र को पढ़कर उनकी आँखें भर आयीं। हालांकि अपने पत्र में सुभाष उनसे इस अवस्था में भी किसी प्रकार की सहायता की अपेक्षा नहीं कर रहा था, पर वे अपने जीते जी अपने बेटे को वृद्धाश्रम में कैसे रहने दे सकते थे? जो कुछ उनका था, वह अंततः उन्हें सुभाष को ही देना था। आज की परिस्थितियों ने सुभाष के मन की आँखें खोल दी थीं। अब तो उनके सामने सुभाष से सम्पर्क करने में असमंजस की स्थिति भी नहीं रही थी। मन में कुछ निश्चय करके उन्होंने पत्नी को आवाज लगायी–"राधा! कल सुबह सुभाष की पसंद की रसोई बनाकर तैयार रखना। बरसों बाद हमारा बेटा अपने घर लौट रहा है, मैं अभी उसको लाने जा रहा हूँ।"

राधा देवी कुछ क्षणों तक तो समझ नहीं पायीं कि उनके पति क्या कह रहे थे। वे अवाक् होकर अपने पति की ओर देखने लगीं। जब तक वे समझतीं, उनके पति जा चुके थे। इतने बरसों से दूर हुए बेटे के पुनः घर लौटने की खुशी में उनके पाँव जमीन पर नहीं पड़ रहे थे। आज अपने पुत्र के घर आने की खुशी और प्रसन्नता की जो झलक उनके चेहरे पर दिखायी दे रही थी, वह अनुपम और अलौकिक थी।

अजमेर निवासी लेखिका की रचनाएं देश की प्रमुख पत्र –पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। अब तक छह कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।

अतीत के झरोखे से...

इस स्तम्भ में 'अणुव्रत' पत्रिका के अर्द्धशती पूर्व के अंकों से चयनित सामग्री पुनर्प्रकाशित की जा रही है ताकि अणुव्रत आंदोलन के स्वर्णिम इतिहास को हम वर्तमान से जोड़कर भविष्य की दिशा तलाश सकें। इस अंक में प्रकाशित चार पृष्ठ की यह सामग्री 'अणुव्रत' पाक्षिक के मार्च 1970 के अंक से ली गयी है।

बालक में हीन भावना : कारण व निवारण

शिवचरण मन्त्री

समाज में कई व्यक्ति ऐसे दृष्टिगत होते हैं जो अपने आप को अन्य व्यक्तियों की अपेक्षा कम महत्वपूर्ण समझते हैं। यद्यपि ऐसे व्यक्तियों में अपने आप को महत्त्वशाली समझनेवाले व्यक्तियों की अपेक्षा किसी भी गुण या अच्छाई की कमी नहीं होती है। ऐसे व्यक्ति अपने व्यक्तित्व को सदा छिपाये रखने का प्रयास करते हैं। कतिपय छोटे बालकों में इस प्रकार की भावना अति प्रबल होती है। ऐसे बालक प्राय: घर, विद्यालय या अपने मित्रों की छोटी-छोटी बातों से यह अर्थ लगाते हैं कि उनका कोई महत्व नहीं है। बालक के प्रति तिरस्कार की भावना या उसकी आलोचना के कारण बालक में भय की प्रतिक्रियाएँ हीन भावना उत्पन्न करती हैं। सामाजिक परिस्थितियों से भय की प्रतिक्रियाएँ सम्बन्धित हो जाती हैं, ऐसी प्रतिक्रियाओं में तिरस्कृत मनोवेगों का समावेश होता है तथा इससे व्यक्तिगत हीन भावना उत्पन्न होती जाती है।

इस भावना के उत्पन्न होने के निम्नलिखित कारण हो सकते हैं :

1. भय- बालक भय के कारण ऐसे स्थानों से पलायन करने का प्रयास करता है, जहां उसे किसी प्रकार का भय अनुभव हो। बालिकाओं में हीन भावना का प्रमुख कारण भय ही होता है। अशिक्षित माताएं या घरेलू स्त्री नौकर बालकों की परेशानियों से अपना पीछा छुड़वाने के लिए भूत-प्रेत या किसी व्यक्ति विशेष का नाम लेकर या बन्द अन्धेरे कमरे में बालक को ले जाकर डराने का प्रयास करती हैं। इसका प्रतिफल होता है बालक में हीन भावना का बीजारोपण। इस प्रकार से डराये गये बालक चुपचाप बिना किसी से बातचीत किये एकान्त में बैठे रहना अच्छा समझते हैं। विशेष रूप से बालिकाएँ परिवार के किसी भी धार्मिक, कट्टर, अति क्रोधी सदस्य से बहुत सहमी रहती हैं ।

2. वातावरण - कई बालकों को उनके माता-पिता घर से बाहर अपने इस झूठे सन्देह के कारण नहीं भेजते कि बालक अन्य बालकों के संसर्ग से बिगड़ जायेगा या मोहल्ले या गली के बालकों के साथ खेलने से उनकी प्रतिष्ठा कम हो जायेगी। कई बार बड़े घरों में जहां बालक के साथ खेलने वाला उसका कोई भाई-बहिन न हो या पड़ोस में कोई समवयस्क बालक न हो तो उसे अकेले रहने की आदत पड़ जाती है। इस प्रकार के बालक अपने घर पर बड़े उद्दण्ड होते हुए भी बाहर किसी के साथ जाने पर चुपचाप बैठे रहते हैं तथा माता-पिता या कोई भी पारिवारिक सदस्य यदि उनके साथ हों तो उनके चारों ओर चक्कर लगाया करते हैं या उनको अपने निवास स्थान पर चलने के लिए बार-बार कहते रहते हैं।

3. शारीरिक कारण-कई माता, पिता, संरक्षक या पारिवारिक सदस्य बालक की उसकी ईश्वर प्रदत्त शारीरिक बनावट के कारण आलोचना करना प्रारम्भ कर देते हैं। इस प्रकार की आलोचना के कारण बालकों में हीन भावना पैदा होती है। अन्धे, लूले, लंगड़े, काले, काने, बहरे, गूंगे आदि प्रकार के विकलांग बालकों को उन नामों से पुकारना न्यायसंगत नहीं कहा जा सकता है किन्तु जब माता, पिता, अध्यापक ही ऐसे बालकों को उपरोक्त किसी एक नाम से या स्थानीय बोली में किसी नाम से पुकारते हैं तो बालक में असुरक्षा की भावना पनपने लगती है। इससे बालक अपने बाल समाज में रुचि नहीं लेता और धीरे-धीरे उसे अपने माता-पिता, संरक्षक या अध्यापक से भी लगाव कम होने लगता है।

4. माता-पिता या संरक्षक का व्यवहार- माता-पिता या संरक्षक का

बालक के प्रति क्रोधपूर्ण, असंयत, असहानुभूतिपूर्ण तथा उपेक्षित व्यवहार से बालक अनुभव करने लगता है कि घर में उसकी कोई महत्ता नहीं है और इसलिए बालक घर से बाहर रहना पसन्द करता है। इसके कई कारण हो सकते हैं – घर में माता -पिता का रोज ही झगड़ना, मां को शराबी पिता द्वारा प्रायः पीटना, पिता का घर से लम्बी अवधि के लिए बाहर रहना, मां या पिता का दूसरा होना, माता-पिता में से किसी एक या दोनों का मर जाना या एक-दूसरे को त्याग देना, माता-पिता द्वारा बालकों को सदा उपदेश ही देते रहना आदि।

5. आर्थिक कारण- समाज में धनिकों के बालकों की अधिक महत्ता निर्धन बालकों में हीन भावना को विकसित करने के लिए पर्याप्त होती है। निर्धनों के बालक समाज में प्रायः तिरस्कृत भावना से देखे जाते हैं। धनवान व सम्पन्न गृहों के बालक गरीब घर के बच्चों के साथ अभद्र व्यवहार करने में नहीं चूकते।

नौकर व मालिक के एक साथ रहने पर या नौकर व सरकारी अफसर के एक ही बंगले के भिन्न कमरों में रहने पर बालक में आर्थिक स्थिति की असमानता के कारण हीन भावना पनप जाती है।

आर्थिक स्थिति के अनुसार रहन-सहन के स्तर में भी काफी अन्तर होता है। जब गरीब व अमीर परिवारों के बच्चे एक ही स्कूल में एक साथ पढ़ते हैं या एक ही मोहल्ले में रहने के कारण एक साथ खेलते हैं तो गरीब घरों के बच्चे अमीर बच्चों का पहनावा और रोब देखकर अपने को हीन समझते हैं।

6. तुलना करना - घर पर माता-पिता या संरक्षक व विद्यालय में अध्यापक प्रायः बालकों की परस्पर तुलना करते रहते हैं। कई माताएं तो अपने बालकों की तुलना करते हुए सदा ही दूसरे के बालक को अच्छा बतलाती हैं। अपने सामने सदा ही दूसरे बालक को श्रेष्ठ बताये जाने के कारण, बालक अपने आपको अयोग्य समझकर श्रेष्ठ बालक से विद्वेष की भावना रखना प्रारम्भ कर देता है और उसमें हीन भावना पनपने लगती है।

7. लालन पालन - माता-पिता दोनों के नौकरी करने के कारण या बालकों को नौकर या आया के सहारे छोड़ कर उसका लालन-पालन करवाने में ही अपनी प्रतिष्ठा समझने वाले धनिक परिवारों के बालकों में भी हीन भावना विकसित होने की सम्भावना रहती है।

माता -पिता दोनों के नौकरी करने की दशा में दोनों ही शाम को घर आकर अपने आपको थका हुआ समझते हैं और बालक को पूरा स्नेह नहीं मिल पाता है। आया या नौकर मालिक की अनुपस्थिति में बड़ी गैर जिम्मेदारी से काम करते हैं और इससे बालक में असुरक्षा की भावना घर कर जाती है।

8. असफलता - लगातार छोटा बालक जब किसी परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो जाता है तो वह बड़ा निराश होता है। वह अपने आपको अयोग्य समझने लगता है। बालिकाएं परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने पर अपने आपको इस भावना से अधिक प्रभावित पाती हैं। खेल-कूद या विद्यालय में या इसके बाहर होनेवाली खेलकूद प्रतियोगिताओं में भी जब बालक का किन्हीं कारणों से चयन सम्भव नहीं हो पाता है तो वे इस प्रकार की प्रतियोगिताओं में भाग लेना बन्द कर देते हैं।

9. हीन भावना का प्रदर्शन- हीन भावना से ग्रसित बच्चे सदा एकान्त चाहते हैं। वे चाहते हैं कि उनके खेल या अन्य कार्यों में अन्य बालक किसी प्रकार का व्यवधान उपस्थित न करें। बालिकाएँ बैठी-बैठी अपनी अंगुलियां चटकाया करती हैं।

बालक नाखूनों को दाँतों से कुतर कर, चेहरे को बराबर सिकोड़ कर, चलते-चलते फर्श की चौकियों को गिनकर या सीढ़ियों को गिनकर हीन भावना को व्यक्त करते हैं। हीन भावना से ग्रसित बालक प्रायः अपनी प्रशंसा सुनने को बड़े आतुर रहते हैं।

इस प्रकार के बालक बातचीत के मध्य ही अपनी बात कहना, सुनना या बतलाना चाहते हैं। बालक का तनिक-तनिक सी बातों पर गुस्सा होना या नेता के गुण न होने पर भी नेता बनने का इच्छुक होना इस भावना का द्योतक है।

उपचार

हीन भावना को खत्म करने का सबसे अच्छा उपचार है उन कारणों को जानना जिनके कारण यह भावना

विकसित हुई है। यदि उन कारणों का निवारण कर दिया जाये तभी सबसे अच्छा उपचार हो सकेगा। प्राय: पढ़ने के लिए या अन्य कारणों से बालक को जब किसी मित्र या सम्बन्धी के यहां रखा जाता है तो पुरुष वर्ग का बालक के साथ सद्-व्यवहार होने पर भी महिलाओं का व्यवहार, यदि उनके बच्चे हों तो बड़ा ही उपेक्षित-सा रहता है। ऐसी दशा में बालक को ऐसे वातावरण से हटा लेना ही उचित होगा। कई बार सौतेली माता के होने के कारण भी वातावरण को बदलना अति आवश्यक हो जाता है। विद्यालय के वातावरण से हीन भावना को बल मिलता हो तो विद्यालय परिवर्तन कर देना चाहिए।

माता-पिता या संरक्षक को अपने बालक को समझने का प्रयत्न करना चाहिए। बालक की मानसिक व शारीरिक योग्यता को पूरी तरह से जान लेने पर ही उसको बड़ा बनाने की कल्पना साकार होना संभव है। बालक या बालिकाओं को उनके मानसिक स्तर व अभिरुचियों को ध्यान में रखते हुए ऐच्छिक विषय दिलवाने चाहिए। बालक के साथ माता-पिता, संरक्षक व अध्यापक का व्यवहार सहानुभूति पूर्ण होना अति आवश्यक है।

माता-पिता का बालक को तनिक-तनिक बात के लिए सदा ही डाँटते-फटकारते रहना या बिना प्रयोजन ही उससे नाराज रहना ठीक नहीं। बालक की तुलना सदा ही अन्य बालकों से न करके यह प्रयत्न करना चाहिए कि वांछित गुणों का समावेश उसमें किस प्रकार किया जा सकता है। बालकों को उनके नाम बिगाड़ कर पुकारना भी ठीक नहीं। बालक के परीक्षा में असफल होने पर सारा दोष उसके माथे न लगाकर अन्य कारणों की ओर भी दृष्टि डालनी चाहिए। बालक के एकान्त प्रिय होने की दशा में ऐसे अवसर उत्पन्न करना लाभप्रद होगा जिनसे वह अन्य बालकों के साथ में घुल-मिल सके। जैसे साथ में खेलने को प्रेरित करना, बच्चे का जन्मदिन मनाना या गुड़िया का विवाह रचाना आदि।

बालक में उत्तरदायित्व की भावना को विकसित करना भी हीन भावना को कम करने में सहायक सिद्ध होगा। अत: वे छोटे-छोटे कार्य बालक को अवश्य करने दिए जायें जो उसकी पहुँच व शक्ति में हों। इससे बालक में आत्मविश्वास उत्पन्न होगा। कक्षा में अध्यापक भी बालक की हीन भावना को कम करने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं। सदा बालक की कठिनाई को ध्यान में रखकर उसको (बालक को) माता-पिता तथा अध्यापकों द्वारा आगे बढ़ाने का ही उत्साहपूर्ण प्रयत्न होते रहना चाहिए।

दो मुक्तक

साध्वीश्री रमाकुमारी

नगर की सुरक्षा प्राकारों से है।
धारा की सुरक्षा कगारों से है।।
मनुष्य चाहे कितना ही सुंदर हो।
विवेक का प्रदर्शन व्यवहारों से है।।

शिखर तक पहुँचने के लिए अणुव्रत सोपान है।
मनुष्य का विवेकी होना प्रकृति का वरदान है।।
मोह के नशे में उन्मत्त इंसान सोचता नहीं।
यहां स्थायित्व नहीं, तू दो दिन का मेहमान है।।

तो मुझको आमंत्रण देना

साध्वीश्री संघमित्रा

जीवन के क्षण तुम्हें समर्पित, मौत यदि ललकारे तुमको।
तो मुझको आमंत्रण देना।।

मेरा कंठ बहुत कोमल है, अमृत को पीते-पीते भी
देखो घाव हुए हैं गहरे, मेरा तो पथ ही ऐसा
जिस पर कांटों का जाल बिछा है।

जिस दिन तूफानों से मेरी दो बातें नहीं हो पाती हैं
और तीर नहीं आते मुझ से हाथ मिलाने को
उस दिन चैन नहीं मिलता है, और रात न नींद आती है।

आँखों में सुख के क्षण तो तुम्हें समर्पित,
यातना यदि तुम्हें पुकारे तो मुझको आमंत्रण देना।

आंदोलन समाचार

जालंधर में अणुव्रत सेमिनार

मुनिश्री गणेशमल जी के सान्निध्य में 28 फरवरी से त्रिदिवसीय अणुव्रत सेमिनार का महत्वपूर्ण आयोजन सम्पन्न हुआ। इसमें स्थानीय नागरिकों के अतिरिक्त अमृतसर, लुधियाना, फिरोजपुर, करतारपुर के भी सैकड़ों नागरिकों ने भाग लिया। न्यायाधीश प्रथम श्रेणी श्री जयकुमार गोयल ने इस अवसर के लिए प्राप्त आचार्य श्री तुलसी का विशेष संदेश पढ़कर सुनाया। जालंधर आकाशवाणी के प्रसारक श्री बटुक, जैन नेशनल हाई स्कूल के प्रिंसिपल श्री पिण्डीदास ने भी वक्तव्य दिये। मुनिश्री गणेशमल जी तथा मुनिश्री कन्हैयालाल जी ने अणुव्रत के विभिन्न दर्शन-पक्षों का विवेचन किया। धन्यवाद ज्ञापन लाला मंगतरायजी ने किया।

9 फरवरी का आयोजन साईदास ए.एस.हा. से. स्कूल के 3500 छात्रों व अध्यापकों के बीच सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर स्थानीय दैनिक पत्रों 'हिन्दी मिलाप', 'जन प्रदीप' तथा 'पंजाब केसरी' ने अपने अणुव्रत परिशिष्टांक प्रकाशित किये।मुनिश्री कन्हैयालालजी ने 5 फरवरी को मंडी फैन्टनगंज गर्ल्स हा. से. स्कूल, 7 को सनातन धर्म हा. से. स्कूल, 9 को साईदास हा. से. स्कूल, 11 को पार्वती जैन तथा जी.एम. हाई स्कूल, 12 को गवर्नमेंट मॉडल स्कूल तथा 17 को भार्गव कैम्प गवर्नमेंट हा. से. स्कूल में प्रवचन किये। इनमें लगभग आठ हजार छात्र-छात्राओं ने भाग लिया।14 फरवरी को मुनिश्री के सान्निध्य में शिक्षक मंडल की ओर से अध्यापक सम्मेलन सम्पन्न हुआ, जिसकी अध्यक्षता डिप्टी सरकल एजुकेशन ऑफिसर सरदार कपूर सिंह ने की। 16 फरवरी को डिस्ट्रिक्ट जेल में 450 कैदियों के बीच मुनिश्री ने प्रवचन किया।

श्रेष्ठ विद्यार्थियों का नागरिक सम्मान

रायपुर अणुव्रत समिति द्वारा मुनिश्री राकेशकुमार जी की प्रेरणा से संचालित नैतिक शिक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित नैतिक परीक्षा में रायपुर नगर की प्रत्येक शाला में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त करने वाले दो-दो छात्र-छात्राओं का नगर स्तर पर सार्वजनिक सम्मान विधानसभा के सदस्य श्री मुन्नालाल शुक्ला की अध्यक्षता में 8 फरवरी को नगर निगम भवन के रविशंकर शुक्ला हॉल में किया गया। कार्यक्रम में मुनिश्री राकेशकुमार जी का प्रेरणाप्रद उद्बोधन प्रवचन हुआ, साथ ही प्रसिद्ध शिक्षा-शास्त्री श्री रणवीरसिंह शास्त्री ने भी शिक्षकों और विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया। उपस्थिति एक हजार से अधिक थी। नगर निगम के सचिव श्री एस.पी. तिवारी, उप संभागीय शिक्षाधिकारी श्री टी.पी. चौबे, शाला निरीक्षक श्री एन. गांगुली सहित प्रतिष्ठित नागरिक भी बड़ी संख्या में कार्यक्रम में उपस्थित थे।

इस समारोह में रायपुर नगर की एक सौ आठ शालाओं के विद्यार्थियों को प्रमाण-पत्र दिये गये। प्रमाण-पत्र रायपुर नगर निगम, गांधी शताब्दी समिति अणुव्रत समिति की ओर से संयुक्त रूप से दिये गये थे। इस परीक्षा में रायपुर व दुर्ग जिले की लगभग एक हजार शालाओं के एक लाख से अधिक विद्यार्थी सम्मिलित हुए। रायपुर नगर की एक सौ शालाओं के पैंतीस हजार से अधिक विद्यार्थी थे।

9 फरवरी को बरलोटा भवन में मुनिश्री के सान्निध्य में महिला सम्मेलन हुआ, जिसमें नगर की प्रमुख महिला संस्थाओं की बहनों ने भाग लिया। 15 फरवरी को भारत के मुख्य न्यायाधीश माननीय हिदायतुल्ला के साथ मुनिश्री ने अणुव्रत कार्यक्रमों के विभिन्न पहलुओं पर विचार-विमर्श किया। वार्तालाप में मध्यप्रदेश के मुख्य न्यायाधीश भी उपस्थित थे।

300 छात्राओं ने स्वीकार किये विद्यार्थी अणुव्रत

बिहार शरीफ (पटना-बिहार)। 13 फरवरी को साध्वीश्री मोहनकुमारी जी के अपनी पदयात्रा के मध्य यहां पहुँचने पर उनका भव्य स्वागत किया गया। दोपहर में उच्च बालिका विद्यालय में प्रवचन रखा गया, लगभग 300 छात्राओं ने विद्यार्थी अणुव्रत स्वीकार किये। सायंकाल सार्वजनिक सभा हुई, जिसमें 400-500 व्यक्तियों ने भाग लिया। आयोजन की अध्यक्षता डॉ. नगेन्द्र बाबू ने की, स्वागताध्यक्ष डॉ. आर ईशरी थे।

World Peace
through
Anuvrat

■ H. R. DASEGOWDA ■

The world has been well knit into a family due to the rapid growth of communication network. The quest for peace has challenged mankind throughout the recorded history. International peace is more than the temporary absence of war. To ensure human welfare peace must be secure and enduring. To be acceptable, peace must guarantee freedom, justice and progress. An acceptable security system will have to provide methods to settle controversial issues peacefully, provide nations with the security against external threats, discourage the use of armed forces and intervention in internal affairs of others and deal with the would-be aggressor firmly. Nations must be persuaded to relinquish the capability to use and threaten the use of armed forces.

Universal Peace will remain a utopian dream until the world community evolves effective mechanisms as alternatives to unilateral actions of nations. It is a matter of pleasure that numerous peace movements operating in different parts of the world are playing constructive roles in creating mass awareness inspiring people to eschew violence and hatred. There are some peace movements which emphasize that-world peace can be established only through Ahimsa or what we call 'nonviolence'. ANUVRAT MOVEMENT is rendering yeoman service in this field. ANUVIBHA is the international vehicle of peace. It has organised many International conferences on peace and nonviolent action successfully and has created a strong network of committed nonviolence activists. ANU means small or basic and Vrata means vow. ANUVRAT MOVEMENT inspires an Individual to pledge himself to adhere to basic human values enshrined in the ANUVRAT code of conduct.

There are many approaches to peace. Unfortunately, no simplistic approach has been evolved so far to usher in an era of tranquillity at the global level. Some suggestions, however, merit consideration which in the long run may contribute to global understanding. For example, dedicated followers of certain religious traditions would rely upon broad acceptance and application of religious beliefs to bring about social change paving the way for world peace. They advance the 'brotherhood concept' as the best method for bringing about an era of peace. This line of thinking was the one that Gurudev Tulsiji also advocated while launching the Anuvrat Movement in the second part of the 20th century. Having witnessed ruthless exhibition of vulgarity,

untold chaos, sorrow and misery in the aftermath of the transfer of power from the British to the people of India in 1947, Acharya Tulsi thought it fit to ask people to go to the Anuvrat way to sustain the freedom earned and to manage the nation democratically. "Anuvrat" believes firmly in reforming the individual by building inherent human values in man and in shaping a society based on basic truths like "Love thy neighbour."

All who wish to improve relationships and understanding among peoples and nations should be urged to follow the Anuvrat code of conduct. Those who work to enlarge concern for other human beings through the advocacy and practice of religious principles deserve encouragement. Those who challenge the necessity, the morality and the credibility of war as a viable means of resolving international disputes should be applauded. All such efforts help to mould world opinion towards a just and human approach to global problem solving. Likewise, efforts to build a peaceful community should be encouraged and aided. Progress towards greater understanding, better communications, and common objectives would undoubtedly improve the political climate and stimulate international cooperation. But these processes are exceedingly slow due to the great diversity of national interests. Unfortunately, the pressing critical world issues are screaming to be attended to. We must not lose time and pay immediate heed to resolving all disputes nonviolently.

Now the Anuvrat movement advocates the path of vows which leads to self-restraint and self-transformation. It enjoins its adherents to resort to religion, not as a means of absolving him from sin but as a means of avoiding sin. Religion, the essence of which is tolerance, resides in a pure heart. The aim of the Anuvrat Movement is to ensure that life becomes pure, that truth and honesty govern the daily activities of the people and that the moral basis of life widens itself.

It will be found that most of the rules laid down in the Anuvrat code are worded negatively and only a few positively. The reason is that positive injunctions cannot be framed in a way that they may be valid under all conditions. Such injunctions - do's - depend for their validity on such factors as the appropriateness of place, time, circumstances and the inclination of the person or persons concerned. The determining lines where, when, what and how much cannot be drawn uniformly. On the other hand, forbidding commandments don'ts can be set out in a uniformly valid way. Every individual has the right to exercise his freedom, but only so far as the freedom of others is not interfered with. It is because individuals do not respect this fundamental law of freedom on their own accord, hence external restraints have to be imposed on them by society. In the last resort, restraints, by their very nature, cannot but be negative for the most part. The individual who imposes restraints upon himself does not require to be brought under external restraints. It is through this self imposed form of restraint that true resistance to temptation develops and self-control grows. Activity becomes pure to the extent to which impure elements are thus kept out.

The main aim of the Anuvrat Movement is thus to help develop in each individual the power of self-protection against the infection of impure conduct. As to the promotion of pure conduct, the impetus to action will depend on the individual's particular ideals and belief. It is not possible to outline the minimum areas of positive action in the same way as it is possible to delimit the minimum areas of negative action to general satisfaction. For in the matter of positive action the determining factors vary with differing view - points of the prevailing religious beliefs.

The Anuvrat Movement does not belong to any particular form of religious belief but it is the essence of all forms of religious and moral faiths. It is not meant for the followers of any particular faith but for the followers of all faiths. Since it concerns itself with individual

character, the basic element in life, it makes no distinction between man and man on the ground of caste or creed. The only qualification that the Movement recognises is the preparedness on the part of the persons concerned for self-restraint and self-examination. As for status, it is one that one confers upon oneself by electing to become an Anuvrati (one who pledges himself to observe the Anuvrat code).

This movement is the one that aims at revolutionising life from within by reshaping the character. The world today needs this more than anything else. If the world has lost a single thing in a greater measure it is this basic element of character. One of the main causes of the world's present tragic condition is the erosion of moral and spiritual values in social life.

It is the human greed which is at the root of all conflicts in the world. One answer to the problem that suggests itself is a more equitable distribution of wealth. The economic contours of a community or nation are never static, they can and do alter from time to time. In some countries the economic upheavals have been reduced, levelled or reversed. Even though possessed of easy access to the amenities of life, the developed countries are as distraught as before. This shows that the path to peace and happiness is other than the pursuit of economic prosperity. It is the rejuvenation of moral values in individual as well as in social life. External amenities and physical comforts cannot help an individual to achieve happiness. What is wonderful and possible is that peace and happiness can be achieved by inner contentment even in the relative absence of outer amenities of life. This is the secret of self restraint.

It does not matter whether the individual concerned believes or does not believe in an immortal soul, whether he likes or dislikes asceticism or severe austerity. What matters most is whether he regards man's ethical conduct as essential for our survival. A man who does not believe in the existence of the soul may not subscribe to total non-offensiveness (AHIMSA) but he will not support or promote offensiveness (AHIMSA) as something useful or good.

Even those who believe in political expediency and even in political duplicity will not be found to endorse such conducts of their wives or husbands. For, it is the most remarkable thing-the most redeeming- thing about those given to falsehood and dishonesty that they would like other people to respect truth and honesty. Really speaking falsehood and wrongdoing but represent a man's failings-his weaknesses rather than his strengths. The normal tendency of the rational mind is to conform to the moral law. It is merely to canalise this innate tendency that the vow-taking comes into play. The Anuvrat Movement is a project for the spiritual and moral rejuvenation of life.

Anuvrat means a small or diminutive vow. No vow, truly speaking, is either small or great. What is meant by a 'small' vow is a vow that is convenient for one to practise within one's own capacity.

The purpose behind vow-taking is self purification. Vows should not be taken for the sake of material gain or reform. Material welfare follows in the wake of the observance of vows but the aim in taking them should be solely self rectification. If social reordering is what is sought, then such an objective is more directly achieved by political action than by means of these vows. Acharya Tulsi - the founder of the Anuvrat Movement rightly said, "the objective that the Vrats aim at is immensely higher than social or political good. It is spiritual good. And the spiritual good is not only the highest good but also the total good. It is both one's own good and the good of others." It indicates the presence of "the elements of World Peace".

Late H. R. Dasegowda was Professor of Law and actively associated with the Anuvrat Movement. He was Vice-President of Anuvrat Mahasamiti and President, Karnataka Chapter of Anuvrat Shikshak Sansad.

अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित

कदमों के निशां

आचार्य तुलसी ने कहा था, अणुव्रत चरित्र निर्माण का आंदोलन है। अणुव्रत पुरस्कार की स्थापना के पीछे उद्देश्य है उन लोगों का आदर जो चरित्र निर्माण के लिए कृत संकल्प हैं। अणुव्रत के आदर्शों के प्रति जिनके मन में गहरी निष्ठा है। ऐसी विभूतियों की प्रतिष्ठा से समाज में नैतिक मूल्यों के प्रति आस्था बढ़ेगी।

आचार्य महाप्रज्ञ का कहना था, "सत्य की खोज करना बड़ी बात है और उससे भी बड़ी बात है सत्य को क्रियान्वित करना। अणुव्रत पुरस्कार सत्य को क्रियान्वित करने वालों को मिलता है। अतः मैं कह सकता हूँ कि यह सबसे बड़ा पुरस्कार है।" आचार्य महाश्रमण कहते हैं, ''भारत के नागरिकों में नैतिकता के प्रति आस्था पुष्ट बने, अणुव्रत इसी दिशा में कार्यशील है। अणुव्रत पुरस्कार नैतिक मूल्यों के महत्व को प्रतिपादित करने वाला अभिक्रम है।''

वर्ष 1981 में अणुव्रत पुरस्कार की शुरुआत की गयी। तब से 26 विभूतियों को इस पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। अणुव्रत पुरस्कार के अंतर्गत प्रशस्ति पत्र, प्रतीक चिह्न और एक लाख इक्यावन हजार रुपये की राशि प्रदान की जाती है। अणुव्रत पुरस्कार प्राप्त करने वालों की जीवन गाथा से परिचित होना मानवीय मूल्यों से साक्षात करना है। आने वाली पीढ़ियां इनके जीवन से प्रेरणा लेकर स्वस्थ समाज की संरचना की दिशा में कदम बढ़ायें, इसी उद्देश्य से अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित विशिष्ट व्यक्तियों का परिचय यहां क्रमशः प्रकाशित किया जा रहा है।

शिवराज पाटिल

विनम्रता, त्याग, सेवा और सादगी के प्रतीक

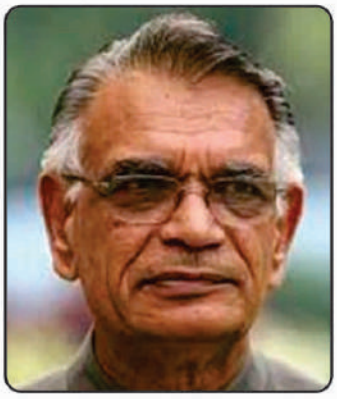

शिवराज पाटिल कृषि, वकालत और विधि व्याख्याता के रूप में जीवन–क्रम प्रारम्भ कर नगरपालिका अध्यक्ष, विधानसभा अध्यक्ष तथा लोकसभा अध्यक्ष पद तक पहुँचे। शिवराज पाटिल का जन्म 12 अक्तूबर, 1935 को महाराष्ट्र के लातूर जिले के चाकूर गाँव में हुआ था। उन्होंने उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद से विज्ञान में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। बम्बई विश्वविद्यालय से विधि में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त करने के बाद लगभग छह महीने तक अध्यापन कार्य किया। उसके बाद उन्होंने अपने गृह–नगर लातूर में वकालत शुरू करने का निर्णय किया।

वर्ष 1967 में वे लातूर नगरपालिका के अध्यक्ष निर्वाचित हुए और 1969 तक तथा 1971 से 1972 तक इस पद पर रहे। वर्ष 1972 से 1980 तक श्री पाटिल महाराष्ट्र विधानसभा के सदस्य रहे। इस दौरान उन्होंने लोक शिकायतों से संबंधित समिति के सभापति, कानून, न्यायिक, सिंचाई और प्रोटोकॉल मंत्रालय में उपमंत्री, विधानसभा सदन के उपाध्यक्ष और अध्यक्ष का पदभार सम्भाला।

वर्ष 1980 के सातवें लोकसभा चुनाव में जीत दर्ज करने के बाद वे केन्द्रीय राजनीति में शामिल हुए। इसके बाद लगातार छः लोकसभा चुनावों में उनकी विजय हुई और इस दौरान उन्होंने केन्द्र सरकार में कई मंत्रालयों का कार्यभार सम्भाला। वे वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद् के उपाध्यक्ष भी रहे।

10 जुलाई 1991 को श्री पाटिल ग्यारहवीं लोकसभा के अध्यक्ष बनाये गये। वर्ष 1995 में उन्होंने उत्कृष्ट सांसद अवार्ड की शुरुआत की। संसद के दोनों सदनों में चलने वाले प्रश्नोत्तर काल का दूरदर्शन पर लाइव प्रसारण करने की पहल भी श्री शिवराज पाटिल ने ही की थी। 2004 के लोकसभा चुनाव में लातूर निर्वाचन क्षेत्र से असफल होने के बावजूद श्री शिवराज पाटिल केन्द्रीय गृहमंत्री नियुक्त किये गये। जुलाई 2004 में वे राज्यसभा सदस्य नामित हुए, लेकिन वर्ष 2008 में मुंबई आतंकवादी हमलों की नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए उन्होंने गृहमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया।

साहित्यिक एवं आध्यात्मिक गतिविधियों में सक्रिय भूमिका के साथ–साथ पुस्तकों के अध्ययन में आपकी विशेष रुचि है। आपका जीवन विनम्रता, त्याग, सेवा और सादगी का प्रतीक है। सिद्धांतों को जीवन में सर्वोच्च महत्त्व देने वाले श्री पाटिल नैतिक मूल्यों के आंदोलन 'अणुव्रत' के प्रति आकृष्ट हुए और आचार्य तुलसी के अनन्य प्रशंसक बन गये। उच्च पदों पर रहते हुए भी आप एक कार्यकर्ता के रूप में अणुव्रत से जुड़े और सन् 1995 में अखिल भारतीय अणुव्रत समिति के अध्यक्ष पद को सुशोभित किया। 29 दिसम्बर 1993 को आयोजित समारोह में तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा के हाथों श्री पाटिल को अणुव्रत पुरस्कार से अलंकृत किया गया।

अगले अंक का विषय

परिचर्चा

कहां जाकर रुकेगी अधिक अंक पाने की आपाधापी?

परीक्षा का उद्देश्य होता है यह पता करना कि विद्यार्थी ने पाठ्यक्रम को किस हद तक आत्मसात किया है। इसका उद्देश्य न तो रटकर किसी तरह परीक्षा की वैतरणी पार करना होना चाहिए और न ही कदाचार, नकल, धौंसबाजी या येन–केन प्रकारेण परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करना। ऐसा करने से परीक्षा ही नहीं, बल्कि शिक्षा के उद्देश्यों की भी पूर्ति नहीं हो पाती।

इसके बावजूद आजकल विद्यार्थियों से लेकर उनके अभिभावकों तक में अधिक से अधिक अंक पाने की चाहत कम होने का नाम नहीं लेती। इसी का फायदा उठाकर कोचिंग संस्थानों और ट्यूशन लॉबी का इस कदर नेक्सस खड़ा हो गया है कि सच्चे मायनों में जो प्रतिभाशाली विद्यार्थी हैं, उनका सही मूल्यांकन हो ही नहीं पाता। बात यहीं तक नहीं रुकी है, ऑक्सफोर्ड, एडिनबर्ग, नॉटिंघम और लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स में विद्यार्थी इन दिनों स्टडी ड्रग्स खाकर परीक्षाएं दे रहे हैं। स्टडी ड्रग्स नींद भगाने वाली दवाएं होती हैं। इन्हें खाकर विद्यार्थी घंटों तक पढ़ाई करते हैं। उन्हें नींद नहीं आती। वे तरोताजा महसूस करते हैं, लेकिन इन दवाओं के घातक दुष्परिणाम होते हैं। ब्रिटिश विश्वविद्यालयों में हुए सर्वे में सामने आया कि लगभग 20 फीसदी विद्यार्थी इन स्टडी ड्रग्स को खाकर परीक्षाएं देते हैं। इस दवा को पाने के लिए कुछ विद्यार्थी अनैतिक हथकंडे भी अपना रहे हैं।

बच्चे हमारे भविष्य हैं। कॅरिअर के नाम पर इन नौनिहालों के जीवन से खिलवाड़ कतई उचित नहीं है। कैसे सुधर सकते हैं हालात? शिक्षा व्यवस्था और परीक्षा प्रणाली में क्या परिवर्तन किये जायें कि शिक्षा वास्तविकता में जीवन निर्माण की वाहक बन सके।

हम सभी के जीवन को प्रभावित करने वाले इस विषय पर अपने रचनात्मक विचारों को अभिव्यक्ति दें और **अधिकतम 200 शब्दों** में लिख भेजें हमें **15 फरवरी** तक **9116634512** पर व्हाट्सएप के माध्यम से। चयनित विचार मार्च अंक में प्रकाशित किये जायेंगे।

–सं.

आर्थिक असमानता का कब मिटेगा दंश

गत अंक में प्रस्तुत परिचर्चा के इस विषय पर पाठकों से प्राप्त चिंतन बिंदुओं को यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है –

जरूरत है परोपकारी जन–आंदोलन की

केन्द्र व राज्यों की सरकारों ने गरीबों के लिए अनेक कल्याणकारी योजनाएं बनायीं लेकिन वे सफल नहीं हो सकीं। आज गरीबी व अमीरी का अंतर बहुत ज्यादा हो गया है तथा सरकारों से इस अंतर को कम करने की अपेक्षा बहुत कम हो गयी है। आज जरूरत है राष्ट्रव्यापी परोपकारी जन–आंदोलन की। यह आंदोलन सामाजिक या धार्मिक संस्थाओं द्वारा शुरू किया जा सकता है। हर समाज में काफी संख्या में धनाढ्य लोग होते हैं जिनमें से कुछ अवश्य चाहेंगे कि उनके समाज में जो कमजोर आर्थिक स्थिति वाले लोग हैं उनकी दशा सुधरे। विभिन्न धर्म–सम्प्रदाय के स्तर पर भी यह आंदोलन चलाया जा सकता है। इससे निश्चय ही गरीब–अमीर के बीच के अंतर को कम करने के परिणाम दिखने लगेंगे। अक्सर देखा जाता है कि किसी ने निःस्वार्थ भाव से प्रयास किया और लोग उनके साथ जुड़ते चले जाते हैं और आगे चलकर वह एक विराट आंदोलन का रूप ले लेता है। लेकिन पहल करने वाले विरले होते हैं। बस, यही विडम्बना है। जरूरत है–प्रयास और पहल करने की।

–विनयशील जैन, जयपुर

शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार पर देना होगा ध्यान

आर्थिक असमानता और भारत एक–दूजे का पर्याय बन चुके हैं। जहां एक ओर बड़ी–बड़ी अट्टालिकाओं की शृंखला खड़ी है, वहीं समाज का एक बड़ा वर्ग उपेक्षाओं का दंश झेल रहा है। आजादी के इतने वर्षों के बाद भी विकास की आंधी में इन असहाय लोगों को हम विकास का हमसफर बना पाने में असफल रहे हैं। आखिरी पंक्ति में खड़ा व्यक्ति कितनी पीढ़ियों तक वहीं पड़ा रहेगा, इसका कोई लेखा–जोखा किसी के पास नहीं है। सरकारें संसाधनों का बंदरबांट कर वोट बैंक की राजनीति में मशगूल हैं। ऐसे में आय की अधिकतम और न्यूनतम सीमा रेखा बनाने की जरूरत है। बजट का एक बड़ा हिस्सा शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार पर लगाने की

आवश्यकता है तभी हम उन महान क्रांतिकारियों का हिंदुस्तान बना पायेंगे जिनकी आहुतियों की जमीं पर हम इठलाते रहे हैं। वर्ना कोई होरी अनंत काल तक एक गाय की लालसा में जीता रहेगा, धनिया गोदान के लिए कर्ज ढूंढती रहेगी और हमारे देश का गाढ़ी कमाई लेकर कोई माल्या और नीरव फरार होता रहेगा।

—नवलेश कुमार, वारिसलीगंज

बदलना होगा सोचने का नजरिया

आजादी पाने के लिए हमारे देश ने बहुत बड़ा मूल्य चुकाया है, लेकिन प्रारम्भ से ही हमारे यहां हर व्यक्ति के लिए जीवन को समान रूप से गतिशील रखना एक बहुत बड़ी चुनौती रही है। आर्थिक असमानता आजादी से पहले भी थी और आजादी के बाद भी बरकरार है। असमानता के कई मापदंड हैं। जैसे शिक्षा, पारिवारिक अक्षमता, बौद्धिकता, आलस्य, कर्म, समय, इन पर विचार करना अति आवश्यक है। अमीर को सम्मान और गरीब को तिरस्कार की नजर से देखना हमारा ही स्वभाव है। न तो ईश्वर ने यह व्यवस्था बनायी है न ही सरकार ने। यह हमारे नजरिये का परिणाम है। ऐसे में हमे अपने देखने और सोचने के तरीके को बदलने की आवश्यकता है, न कि व्यवस्था को।

—शर्मिला भंसाली, जोधपुर

भ्रष्टाचार पर लगाना होगा अंकुश

आर्थिक असमानता किसी भी राष्ट्र या समाज के सर्वांगीण विकास में सबसे बड़ी अवरोधक है। यह समाज में खाई ही नहीं बनाती, अपितु आपराधिक प्रवृत्ति को बढ़ावा भी देती है। सरकार तथा समाज मिलकर आर्थिक विषमता की खाई को कुछ हद तक पाट सकते हैं। सरकार बेसहारा, निर्धन तथा अक्षम लोगों के कल्याण के लिए अनेक योजनाएं तो चलाती है, परंतु ये योजनाएं भ्रष्टाचार की भेंट चढ़कर अधिकारियों व नेताओं की तिजोरियां भरती हैं तथा वास्तविक जरूरतमंद लोग वंचित रह जाते हैं। ऐसे में सर्वप्रथम भ्रष्टाचार पर लगाम लगाना अनिवार्य है। वर्तमान केंद्र सरकार द्वारा सभी योजनाओं का पैसा ऑनलाइन भेजने के कारण बहुत प्रभाव पड़ा है तथा आधार से जोड़ने के कारण भी इसका लाभ अपेक्षित व्यक्तियों तक पहुँच रहा है। मनरेगा जैसी योजनाएं भी रोजगार व रोटी प्रदान करने में विशेष भूमिका निभा रही हैं।

—सुभाष जैन, टोहाना

शिक्षा का व्यापक प्रचार–प्रसार जरूरी

देश में बढ़ते पूँजीवाद के कारण नव उदारवादी नीतियों तथा खुदरा क्षेत्र में विदेशी निवेश की नीतियां गरीबों के लिए अहितकर सिद्ध हुई हैं। नेताओं तथा अधिकारियों के बढ़ते वेतन और सुविधाएं तथा उनके द्वारा एकत्रित अरबों की सम्पत्ति से अमीरी–गरीबी की खाई दिनों–दिन बढ़ती जा रही है। ये लोग अपने हितों और स्वार्थों के लिए नीतियां बनाते–बिगाड़ते रहते हैं। सरकार को गरीबों के उत्थान के लिए जरूरी कदम उठाने चाहिए। गरीबी हटाने में शिक्षा बहुत जरूरी माध्यम है, शिक्षा का अधिक से अधिक प्रचार–प्रसार होना चाहिए। सरकारी योजनाओं का लाभ सभी जरूरतमंद लोगों को मिल सके, यह सुनिश्चित करना चाहिए। बेरोजगारों को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने चाहिए, उन्हें आत्मनिर्भर बनने की सीख देनी चाहिए।

—रश्मि चोरड़िया, कूचबिहार

गाँवों को समृद्ध बनाना होगा

हमारे देश की लगभग 70 प्रतिशत आबादी गाँवों में रहती है। यदि गाँवों को समृद्ध किया जाये तो गरीबी–अमीरी के बीच की खाई को पाटा जा सकता है। इसके लिए गाँव आधारित अर्थव्यवस्था को मजबूत करना पड़ेगा। कृषि व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन करना होगा। कम लागत में अधिक आय की व्यवस्था पर जोर देना होगा। रासायनिक खादों एवं जहरीले कीटनाशकों के अंधाधुंध प्रयोग पर अंकुश लगाना होगा। पारंपरिक खादों एवं कीटनाशकों पर जोर देना होगा। किसानों की फसल के समुचित रखरखाव की व्यवस्था गाँवों में ही होनी चाहिए। ऐसी व्यवस्था करनी होगी जिससे किसान अपने उत्पादन को सीधे न बेचकर उससे विभिन्न प्रकार की सामग्री तैयार करके बेचें। उपरोक्त सुधारों से गाँवों को आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है और गाँव यदि आत्मनिर्भर हो गये तो गरीबी–अमीरी की खाई को काफी हद तक भरा जा सकता है।

—सतीश मिश्र खुटार, शाहजहांपुर

व्यसनमुक्ति है समृद्धि का पथ

आधुनिक शिक्षा पद्धति में व्यसनमुक्त जीवनशैली की प्रेरणा का अभाव है। व्यसनों के कारण से यौवन और युवाशक्ति का ह्रास होता है। जिस ऊर्जा का उपयोग जीवन और वतन के विकास में हो सकता है, वह ऊर्जा व्यसनों की भेंट चढ़ जाती है। व्यसन के कारण व्यक्ति और परिवार कमजोर पड़ जाते हैं। अपराध बढ़ते हैं। सामाजिक उन्नति पर विपरीत असर होता है। देश और पर्यावरण पर संसाधनों का अतिरिक्त भार पड़ता है। कम अर्जित करने वाला व्यसनमुक्त व्यक्ति भी समृद्ध और संतुष्ट रहता है। इसके विपरीत अधिक अर्जित करने वाले व्यसनी भी गरीब, असंतुष्ट और समस्याग्रस्त रहता है। व्यसनमुक्त जीवन व्यक्ति को बाहर से ही नहीं, भीतर से भी समृद्ध बनाता है। व्यसनमुक्ति से समृद्धि के साथ व्यक्ति की रचनात्मकता और आत्मनिर्भरता बढ़ती है। आर्थिक विषमता की खाई को पाटने के लिए व्यसनों के विरुद्ध युद्ध करना होगा। अणुव्रत आंदोलन इसी शांत युद्ध का एक प्रखर अभियान है।

—सुरेशचन्द्र धींग, बम्बोरा, उदयपुर

भोगों पर संयम रखना सिखाता है अणुव्रत दर्शन : आचार्य श्री महाश्रमण

जयपुर। अणुविभा जयपुर केन्द्र में प्रवास के तीसरे दिन 27 दिसम्बर को अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि तीन शब्द हैं–भोग, रोग और योग। सामान्य सांसारिक आदमी भोग के प्रति आकर्षित हो जाता है, आसक्त हो जाता है। विभिन्न इन्द्रियों के माध्यम से वह भोगों को भोगता है। इन्द्रियों के, विषयों के जो भोग हैं, उनके प्रति आदमी की आसक्ति होती है, जिनके बंधन में वह बंध जाता है। बाद में बोध होने पर वह सोचता है कि मैंने भोगों को क्या भोगा, भोगों ने मुझे भोग लिया, मुझे खराब कर दिया।

अणुव्रत दर्शन में भोगों पर संयम की बात है, नशामुक्ति की बात है, नैतिकता की बात है। ये बातें आदमी के जीवन को अच्छा बनाने वाली हैं। ये आत्मा को निर्मल बनाने वाली बातें हैं। उसे कल्याण के मार्ग पर अग्रसर करने वाली हैं। भोग है, तो रोग को भी निमंत्रण मिल सकता है। भोग रोग का निमित्त बन सकता है। भोग से आत्मा के रोग भी हो सकते हैं। आत्मा को रोगमुक्त बनाना परम बात होती है।

ऐसे में हम भोग से योग की ओर आगे बढ़ें। अध्यात्म की साधना योग की साधना है। गृहस्थ आश्रम में रहकर भी योग की साधना की जा सकती है। अणुव्रतों की साधना, जप–स्वाध्याय, ध्यान ये सब भी योग हैं। हम इसकी जितनी साधना करेंगे, उतनी अधिक निर्जरा होगी और जीवन को सफल बना सकेंगे। जो आत्मा को मोक्ष से जोड़े, वह योग कहलाता है। हम जितना योग की ओर बढ़ेंगे, उतना ही अधिक आत्मा के निकट रह सकेंगे।

जैसे राह चलते हुए मंजिल पर पहुँचने के लिए समय–समय पर मोड़ लेना होता है, उसी प्रकार जीवन में भी समय–समय पर मोड़ लेना चाहिए, तभी आत्मा सही दिशा में आगे बढ़ सकेगी। उम्र बढ़ने के साथ ही साधना की दिशा में, निवृत्ति की दिशा में कदम बढ़ाने चाहिए। पारिवारिक जिम्मेदारियां पूरी होने के बाद सामाजिक–आध्यात्मिक सेवा में जीवन को लगाना चाहिए। संयम युक्त जीवन बने, इस दिशा में आगे बढ़ना चाहिए।

वरिष्ठ अणुव्रती श्री जी. एल. नाहर को मिला अणुव्रत गौरव सम्मान

आज के कार्यक्रम में वरिष्ठ अणुव्रती श्री घीसूलाल नाहर को अणुविभा द्वारा प्रतिष्ठित अणुव्रत गौरव सम्मान प्रदान किया गया। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण ने अपने आशीर्वचन में कहा कि आचार्य तुलसी का महत्वपूर्ण अवदान है अणुव्रत आंदोलन, जिसे आचार्य महाप्रज्ञ का संपोषण प्राप्त हुआ। इस आंदोलन को आगे बढ़ाने में अनेक समर्पित कार्यकर्ताओं का योगदान रहा है। उन्हीं कार्यकर्ताओं की शृंखला में श्री जी. एल. नाहर भी हैं। वर्ष 2008 में आचार्य श्री महाप्रज्ञ के चातुर्मास के समय श्री नाहर समय–समय पर अणुव्रत के विषय में महत्वपूर्ण चर्चा किया करते थे। अब इस उम्र में भी आप अणुव्रत आंदोलन को अपना सहयोग देते रहें, यही मंगलकामना है।

अणुविभा के अध्यक्ष **श्री संचय जैन** ने कहा कि विभिन्न प्रकल्पों के माध्यम से देशभर में हजारों समर्पित अणुव्रत कार्यकर्ता अणुव्रत आंदोलन की मशाल को लेकर आगे बढ़ने को तत्पर हैं। देशभर में सक्रिय 176 अणुव्रत समितियां इस दिशा में निरंतर प्रयासरत हैं। पिछले 7 दशक से अधिक की अवधि से यह आंदोलन गतिशील है और इसमें हजारों ऐसे कार्यकर्ता हैं, जिन्होंने अपने जीवन को खपाया है, हजारों ऐसे लोग हैं जिन्होंने अणुव्रत की जीवनशैली को अपने जीवन में उतारा है और अणुव्रत के आचार और व्यवहार से इस देश–दुनिया को एक नयी दिशा दी है। चाहे प्रथम अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य तुलसी रहे हों, अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ जी और वर्तमान में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी का आशीर्वाद ऐसे हजारों–हजारों अणुव्रत कार्यकर्ताओं को मिलता रहा है और उन्हीं की प्रेरणा से, उसी ऊर्जा से उन कार्यकर्ताओं ने अणुव्रत आंदोलन के लिए अपनी सेवाएं दी हैं।

हालांकि हर एक कार्यकर्ता को किसी सम्मान के रूप में, किसी पुरस्कार के रूप में प्रमुख पंक्ति पर लाकर खड़ा करना संभव नहीं होता, लेकिन ऐसे कुछ कार्यकर्ता होते हैं जो निश्चित रूप से सभी के लिए प्रेरणा के स्रोत बनते हैं। अणुव्रत पुरस्कार, अंतरराष्ट्रीय शांति एवं अहिंसा अणुव्रत पुरस्कार, अणुव्रत सेवी, अणुव्रत लेखक पुरस्कार और अणुव्रत गौरव सम्मान जैसे अनेक ऐसे प्रकल्प हैं जिनके माध्यम से ऐसे कार्यकर्ताओं को सम्मानित किया जाता है। वैसे देखें तो यह उन कार्यकर्ताओं को तो सम्मान है ही, उस बात का भी सम्मान है कि किस तरह से अणुव्रत को जीवन में अपनाकर व्यक्ति उदाहरण बन सकता है, तो निश्चित रूप से यह सम्मान उन व्यक्तियों के साथ–साथ अणुव्रत आंदोलन का भी सम्मान है। इसी शृंखला में **अणुव्रत गौरव सम्मान** कुछ वर्ष पहले ही प्रारम्भ किया गया था। **डॉ. सोहनलाल गांधी, डॉ. महेन्द्र कर्णावट, श्री बी. एन. पाण्डेय, श्री धनराज बैद** को अणुव्रत गौरव सम्मान से सम्मानित किया जा चुका है। **2020 का अणुव्रत गौरव सम्मान श्री जी. एल. नाहर साहब** को प्रदान किया जाना है और **2021 के सम्मान के लिए श्री निर्मल रांका** को चयनित किया जा चुका है।

आज हमारे लिए शुभ अवसर है कि गुरुदेव की सन्निधि में जयपुर में अणुव्रत गौरव सम्मान का यह कार्यक्रम आयोजित हो रहा है और जयपुर के ही जाने–माने कार्यकर्ता श्री जी. एल. नाहर साहब को यह सम्मान दिया जाना है, जिन्होंने अणुव्रत आंदोलन को अपनी लंबी सेवाएं दी हैं। आपके जीवन में अणुव्रत हमेशा बोलता रहा है। अणुव्रत के मिशन के लेकर आपने इतनी यात्राएं की हैं, इतने लोगों से संपर्क किया है, मुझे लगता है, यह भी एक कला है कि किस तरह से लोगों को अणुव्रत के मिशन से जोड़ा जाये। मैं चूँकि अनेक वर्षों तक जयपुर रहा हूँ और राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के नाहर साहब अनेक वर्षों तक अध्यक्ष रहे और महामंत्री के रूप में मेरे बड़े भाई साहब पंचशील जी उनके साथ जुड़े थे, तो मुझे भी लंबा अवसर मिला नाहर साहब के साथ काम करने का। उनकी कार्यशैली से हमेशा मैं प्रेरित होता रहा हूँ कि किस तरह वे अलग–अलग धर्म व सम्प्रदाय के लोगों को अणुव्रत मिशन से जोड़ते थे और लगभग सभी कार्यक्रमों में उन लोगों की उपस्थिति रहती थी। इसके साथ ही अणुव्रत का प्रतिनिधित्व उनके सभी कार्यक्रमों में होता रहता था। नाहर साहब का जीवन निश्चित रूप से अणुव्रत कार्यकर्ताओं के लिए प्रेरणा है।

अपने परिवार में भी अणुव्रत के संस्कार उसी रूप में आपने आगे बढ़ाये हैं और मुझे यह अवसर भी मिला कि आपके सुपुत्र अविनाश जी नाहर के साथ चाहे युवक परिषद में उनके साथ काम करने का अनुभव मिला और उसके बाद अणुव्रत विश्व भारती में अविनाश जी के साथ लंबे समय से काम करने का अनुभव मिल रहा है। निश्चित रूप से यह एक उदाहरण है कि एक व्यक्ति में यदि अणुव्रत के संस्कार आते हैं, अणुव्रत की जीवनशैली उस व्यक्ति में आती है तो न केवल उस व्यक्ति को वरन् उसके पूरे परिवार को इसका लाभ मिलता है और अणुव्रत की दिशा में पूरा परिवार और उनके आसपास जुड़े हुए सभी लोग प्रेरित होकर आगे बढ़ते हैं। आज इस अवसर पर मैं पूज्य प्रवर के प्रति अपनी कृतज्ञ भावना निवेदन करता हूँ कि आपने अणुव्रत विश्व भारती को यह अवसर प्रदान किया और आदरणीय नाहर साहब के प्रति शुभ कामना करता हूँ कि आपका जीवन हमेशा हमें प्रेरित करता रहे और लंबे समय तक अणुव्रत आंदोलन को आपका मार्गदर्शन मिलता रहे।

अणुविभा के राष्ट्रीय महामंत्री **श्री भीखमचंद सुराणा** ने अणुव्रत गौरव श्री जी. एल. नाहर के सम्मान में प्रशस्ति पत्र का वाचन किया। इसके बाद अणुविभा के अध्यक्ष **श्री संचय जैन, वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री अविनाश नाहर, महामंत्री श्री भीखमचंद सुराणा, उपाध्यक्ष श्री अशोक डूंगरवाल व श्री प्रताप दुगड़, अणुविभा के परामर्शकगण श्री गौतम चोरड़िया, श्री मूंलचंद नाहर, श्री गौतम सेठिया एवं श्री राजेंद्र सेठिया, अणुव्रत समिति जयपुर के अध्यक्ष श्री विमल गोलछा** तथा अन्य गणमान्य जनों ने अणुव्रत गौरव सम्मान 2020, स्मृति चिह्न, प्रशस्ति पत्र प्रदान कर तथा अणुव्रत दुपट्टा पहनाकर श्री जी. एल. नाहर को सम्मानित किया।

इस अवसर पर अणुव्रत गौरव **श्री जी. एल. नाहर** ने अपने संक्षिप्त उद्बोधन में कहा, मनुष्य को सफलता प्राप्त करने के लिए गुरुकृपा, मां कृपा, संतों का मार्गदर्शन और घर वालों का सहयोग आवश्यक होता है। मैं सौभाग्यशाली हूँ कि मुझे ये चारों ही प्राप्त हुए। आचार्यप्रवर कहते हैं कि मन को शांत करने के लिए प्रयास करना चाहिए, मैं निरंतर इस दिशा में प्रयासरत रहूँ, यही कामना है। इसके साथ ही श्री नाहर ने अणुव्रत गौरव पुरस्कार से अलंकृत करने के लिए अणुविभा के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का गरिमापूर्ण संचालन मुनिश्री दिनेश कुमार जी ने किया।

अणुव्रत सम्पर्क यात्रा

गुजरात–महाराष्ट्र

वर्ष 2021 की जनवरी–फरवरी में राजस्थान, तमिलनाडु और कर्नाटक से अणुव्रत सम्पर्क यात्राओं का सिलसिला शुरू हुआ था। कोविड जनित परिस्थितियों के बावजूद अगस्त में असम और बिहार की यात्रा जारी रही। सितम्बर में अणुविभा मुख्यालय राजसमन्द में अणुव्रत अधिवेशन के दौरान अनेक अणुव्रत समितियों के प्रतिनिधियों से मुलाकात और सार्थक संवाद का सुयोग बना। ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर 'संवाद अणुव्रत समितियों के साथ' भी देशभर के कार्यकर्त्ताओं के साथ नियमित सम्पर्क का एक सशक्त माध्यम बन चुका है। नवम्बर में राजस्थान, असम, पश्चिम बंगाल और बिहार की सम्पर्क यात्रा के दौरान कई अणुव्रत समितियों के साथ संवाद का सुअवसर प्राप्त हुआ। वर्ष 2021 का अंतिम महीना गुजरात व महाराष्ट्र की एक दर्जन से अधिक अणुव्रत समितियों की सम्पर्क यात्रा के नाम रहा।

अणुविभा अध्यक्ष
श्री संचय जैन की रिपोर्ट

संपर्क यात्रा के क्रम में **गुजरात** की यात्रा बहुत सफल और उपलब्धिपूर्ण रही। इसकी शुरुआत महाराष्ट्र की दो अणुव्रत समितियों – पालघर और बोईसर से हुई। 17 दिसंबर को मैं उदयपुर से मुंबई पहुँचा और एयरपोर्ट पर ही अणुविभा के उपाध्यक्ष भाई **श्री राजेश सुराणा,** संगठन मंत्री **श्री विनोद कोठारी** और महाराष्ट्र राज्य प्रभारी **श्री रमेश धोका** मिल गये और वहीं से हम सीधे पालघर के लिए रवाना हो गये। दो घंटे के इस सफर में हमने एक सप्ताह की इस यात्रा को सफल बनाने की दृष्टि से विचार–विमर्श किया एवं कार्ययोजना बनायी।

यात्रा के प्रथम पड़ाव **पालघर** में जब अणुव्रत समिति की बहनों ने तिलक लगाकर और गुड़ खिलाकर हमारा स्वागत किया तो लगा कि वे इस पूरी यात्रा के लिए हमें शुभकामनाएं दे रही हैं। वहीं, खूबसूरत रंगोली पूरे माहौल को आत्मीयतापूर्ण बना रही थी। यहां का सभा भवन कुछ विशिष्टता लिये हुए है। इस भवन में अनेक परिवारों का आवास भी है। इन्हीं में से एक परिवार भारती जी रमेश जी तलेसरा के घर पारिवारिक स्नेह के साथ भोजन का आनंद लिया और उसके बाद विचार गोष्ठी हुई। पालघर समिति की अध्यक्ष **निधि जी सिंघवी** और मंत्री **प्रीतम जी राठौड़** के साथ उनकी युवा टीम की सक्रियता और रचनात्मकता पावर पॉइंट के माध्यम से प्रस्तुत रिपोर्ट में झलक रही थी। सभा अध्यक्ष नरेश जी राठौड़, महिला मंडल अध्यक्ष अनोखा बाई बादामिया, युवक परिषद् अध्यक्ष प्रकाश जी बाफना सहित महिला शक्ति और युवा वर्ग की उपस्थिति उत्साहित करने वाली थी। अणुव्रत आंदोलन के उज्ज्वल भविष्य के प्रति आश्वस्त भाव के साथ हम अगले पड़ाव बोईसर के लिए रवाना हुए।

बोईसर में अणुव्रत समिति अध्यक्ष **गणेश जी नांदेचा,** मंत्री **ख्यालीलाल जी खोखावत** सहित अनेक अणुव्रत कार्यकर्ताओं व समाज के गणमान्यजनों के साथ सार्थक चर्चा हुई। संगोष्ठी में सभा अध्यक्ष दिलीप जी राठौड़, महिला मंडल मंत्री ललिता जी परमार सहित अणुव्रत कार्यकर्ताओं के समर्थन व उत्साह को देखकर खुशी हुई। अणुविभा टीम के हम चारों साथियों ने अपनी बात कही। भाई राजेश जी की वक्तृत्व शैली विशिष्ट है और अणुव्रत आंदोलन को इसकी विशेषता के अनुरूप व्यापक जनाधार का आंदोलन बनाने की उनकी अपील का अच्छा असर होता है। विनोद जी संगठन की सुदृढ़ता के लिए बिंदुवार अपनी बात कहते हैं और स्थानीय समितियों द्वारा प्रस्तुत किये जाने वाले रिकॉर्ड, फाइल, रजिस्टर आदि का अवलोकन कर उचित मार्गदर्शन भी देते हैं।

आज का रात्रि प्रवास हमें **वापी** में करना था। रमेश जी धोका को पुनः मुंबई लौटना था, अतः वे वापी से लौट

गये। रमेश जी लम्बे समय से अणुव्रत से जुड़े रहे हैं और समर्पण भाव से अणुव्रत आंदोलन को अपनी सेवाएं दे रहे हैं। **वापी** अणुव्रत समिति की संगोष्ठी में समिति के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं के अतिरिक्त अच्छी संख्या में विभिन्न सभा–संस्थाओं के प्रतिनिधिगण मौजूद थे। अणुव्रत के कार्य को कैसे आगे बढ़ाया जाये, इस सन्दर्भ में व्यापक चर्चा हुई। सर्वधर्म सद्भाव जैसे महत्त्वपूर्ण विषय पर स्थायी रूप से काम करने का सर्वसम्मत चिंतन सामने आया।

वापी

समिति अध्यक्ष विमल जी झाबक, मंत्री **विवेक जी बोथरा** के साथ ही सभा अध्यक्ष सम्पत जी कोठारी, तेरापंथ ट्रस्ट अध्यक्ष श्रीचंद जी दुगड़, तेयुप मंत्री विजय जी बोथरा, महिला मंडल अध्यक्ष करुणा जी वागरेचा और अणुव्रत समिति के अनेक पदाधिकारी व कार्यकर्ताओं की आत्मीय व सार्थक सहभागिता संगोष्ठी में रही। विमल जी के घर भोजन लेकर होटल पहुँचे तब तक रात के 11 बज चुके थे। समिति कोषाध्यक्ष घेवर जी चावत भी बराबर हमारे साथ रहे। दूसरे दिन सुबह सूरत से गुजरात राज्य प्रभारी अरविन्द भाई शाह वापी पहुँच गये थे और उनके साथ ही हम सचिन के लिए रवाना हो गये।

सचिन

पता चला कि सचिन से कुछ दूर एक गाँव में **मुनिश्री आलोककुमार जी** का विराजना हो रहा है। इच्छा हुई कि आशीर्वाद लेकर आगे बढ़ें, लेकिन हमें सीधा ही निकलना पड़ा क्योंकि यात्रा के पूर्व अनुभवों को देख हम यह सुनिश्चित करना चाहते थे कि सब जगह हम निर्धारित समय पर पहुँचें और किसी को इंतजार न कराना पड़े। यहां सबसे पहले अणुव्रत समिति के पूर्व अध्यक्ष **राजमल जी काल्या** से मुलाकात हुई जिनकी समाज में सर्व स्वीकार्यता और समन्वय कौशल ने हमें प्रभावित किया। समिति के अध्यक्ष **पवन जी गांधी** और मंत्री **भीखम जी मुणोत** युवाशक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं। युवाशक्ति का अणुव्रत आंदोलन से बढ़ता जुड़ाव निश्चित ही उत्साहित करता है। सचिन सभा अध्यक्ष महेंद्र जी कोठारी, महिला मंडल अध्यक्ष रिंकू जी मुणोत, युवक परिषद मंत्री पिंटू जी मुणोत सहित विभिन्न सभा–संस्थाओं के पदाधिकारियों की बड़ी संख्या में उपस्थिति ने संगोष्ठी को सार्थकता प्रदान की। सूरत से मात्र 10–12 कि.मी.दूर स्थित सचिन अब सूरत महानगर का ही हिस्सा बन गया है। भारत की दूसरी बड़ी लाजपोर जेल और बड़ी संख्या में कारखाने सचिन को विशेष बनाते हैं। जेल सुधार और कारखानों में नशामुक्ति, इन दोनों ही क्षेत्रों में अणुव्रत का रचनात्मक और निरंतर काम करने पर व्यापक चर्चा हुई। आशा है सचिन समिति इस दिशा में जल्दी ही ठोस कदम उठायेगी।

चलथान

हमारा अगला पड़ाव था **चलथान**। चलथान एक सक्रिय समिति रही है लेकिन हाल ही में **लीना जी चोरड़िया** का समिति की नयी अध्यक्ष के रूप में चयन होने के बाद थोड़ी संशय की स्थिति बनी हुई थी। पता चला कि लीना जी और उनकी टीम काम करने को तैयार हैं लेकिन चुनाव की प्रक्रिया को लेकर हुए कुछ विरोध के चलते वे पद की जिम्मेदारी से मुक्त होना चाहती हैं। मैंने, राजेश जी और विनोद जी ने सबसे बात की।

मुनिश्री सुब्रत कुमार जी चलथान सभा भवन में ही विराज रहे थे। मुनिश्री ने आचार्य तुलसी के युग का स्मरण किया और पिताजी मोहनभाई के प्रति अत्यंत ही सम्मानजनक उद्गार व्यक्त किये। मेरे बालपन में संस्कार निर्माण समिति के मंच पर गाये गीतों को भी याद किया। संगोष्ठी में आपका सान्निध्य हमारे लिए विशेष उपलब्धिकारक रहा। मुनिश्री की प्रेरणा से निराशा के बीच आशा की कोंपल फूटी और सब के समन्वय, उत्साह और समर्पण भाव से यह विश्वास बना है कि इस क्षेत्र में शीघ्र ही अणुव्रत का और भी व्यापक स्वरूप निखर कर सामने आयेगा। चलथान सभा, महिला मंडल, युवक परिषद सहित विभिन्न सभा–संस्थाओं के पदाधिकारियों की उपस्थिति के साथ ही अणुव्रत समिति के निवर्तमान अध्यक्ष **बाबूलाल जी नौलखा** का उत्साह और अणुव्रत के प्रति समर्पण भाव उत्साहित करने वाला था।

चलथान में सामूहिक रूप से दाल–बाटी–चूरमा का आनंद लेकर हम बारडोली पहुँचे, तब तक नियत समय से विलम्ब हो चुके थे। न चाहते हुए भी हो रही समय प्रबंधन की यह चूक दिल को कचोट रही थी। बारडोली वह अणुव्रत समिति है जिसके आमंत्रण को केंद्र में रखकर ही गुजरात यात्रा का यह कार्यक्रम बना था। एक बड़ी मैराथन करने की उनकी योजना को कोरोना जनित परिस्थितियों के चलते स्थगित करना पड़ा था। यहां की अध्यक्ष **पायल जी चोरड़िया** और उनकी टीम के सदस्य अणुव्रत के अत्यंत ही उत्साही कार्यकर्ता हैं। इंतजार के बावजूद बड़ी संख्या में उपस्थिति थी। तिलक–स्वागत के बाद पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन, बच्चों द्वारा नाट्य प्रस्तुति, गीत व वक्तव्यों से समृद्ध एक व्यवस्थित कार्यक्रम चला। युवक परिषद् के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष भाई जयेश जी मेहता ने मधुर अंदाज में सुन्दर विचार रखे और अणुव्रत के कार्यों को पूरे बारडोली समाज के सहयोग व समर्थन की बात कही।

बारडोली

बारडोली सभा अध्यक्ष राजेंद्र जी बाफना, महिला मंडल अध्यक्ष संगीता जी सरणोत सहित विभिन्न सभा–संस्थाओं के पदाधिकारियों की उपस्थिति ने हमें उत्साहित किया। अणुव्रत समिति की निवर्तमान अध्यक्ष **सोनिया जी बडोला** की, जो वर्तमान में अणुविभा कार्यसमिति सदस्य हैं, इस क्षेत्र में अणुव्रत के कार्य को गति देने में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। पायल जी के पति राजेश जी चोरड़िया और उनके परिवार का अणुव्रत से जुड़ाव देख सुखद अनुभूति हुई। मुझे शक हुआ, राजेश जी कहीं गुटका तो नहीं खाते हैं! मन में उठी आशंका को राजेश जी से ही अकेले में पूछ लेना मैंने उचित समझा। मेरी आशंका गलत निकली। वे सेंटेड सुपारी के शौकीन हैं। लेकिन अणुव्रत में काम करते हुए आशंकाओं को उठने का मौका ही न मिले, इस भावना से स्वप्रेरित हो, उन्होंने उसी दिन से सेंटेड सुपारी भी न खाने का संकल्प ले लिया। एक अणुव्रत कार्यकर्ता की यह जागरुकता बहुत सुकून देती है। मंत्री के रूप में **केतन जी मेडतवाल** जैसे चिंतनशील युवक का जुड़ना बारडोली समिति के लिए सुखद योग है।

आज के अंतिम चरण में **व्यारा** पहुँचे तो हम काफी लेट हो चुके थे। यहां 20 किलोमीटर में कई क्षेत्रों से

व्यारा

कार्यकर्ता आये हुए थे। अध्यक्ष **आशा जी चोरडिया** और मंत्री **वनिता जी भटेवरा** दोनों ही पारिवारिक स्वास्थ्य कारणों से व्यारा से बाहर थीं। उपाध्यक्ष **डॉ. जयंतीलाल जी जैन** और कोषाध्यक्ष **सविता जी जैन** सहित अनेक अणुव्रत कार्यकर्ताओं के साथ ही सभा मंत्री मुकेश जी सुकलेचा व अन्य गणमान्यजनों की उपस्थिति में अणुव्रत के कार्य को इस रूप में आगे बढ़ाने पर चर्चा हुई जिससे सामाजिक बदलाव के लक्ष्य को हासिल किया जा सके। जीवन विज्ञान के कार्य को व्यवस्थित रूप में आगे बढ़ाने की विशेष रुचि सामने आयी। आशा जी की अनुपस्थिति में आपके सुपुत्र, पुत्रवधू व परिवारजनों ने रात्रि भोजन पर हमें आत्मीयता से भरपूर अतिथि सत्कार प्रदान किया। देर रात हम सूरत पहुँचे। संपर्क यात्रा में परिवारजनों से मिलना हालांकि अंतिम प्राथमिकता में रहता है, आज रात्रि प्रवास के लिए मैंने रवींद्र जी दस्साणी, विनोद जी ने मीठालाल जी भोगर और राजेश जी ने अपने घर पर रुकने का फैसला किया।

ग्रेटर सूरत

19 दिसंबर का दिन **सूरत** समिति द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की व्यस्तता में बीता। **समिति अध्यक्ष विजयकांत जी खटेड़** और मंत्री **सुनील जी श्रीश्रीमाल** सहित उनकी टीम के अनेक सदस्य बराबर हमारे साथ रहे। सुबह सिटी लाइट सभा भवन में लगभग 100 ट्रैफिक कर्मियों के साथ कार्यशाला न केवल सार्थक रही, वरन अणुव्रत के कार्य को नियमित रूप से करने के लिए एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र उद्घाटित हुआ। मुझे मुख्य वक्तव्य देना था जिसमें मैंने ट्रैफिक कर्मियों द्वारा कठिन परिस्थितियों में काम करने से जुड़े कुछ पक्षों जैसे तनाव, नशा, भ्रष्टाचार, प्रदूषण आदि पर चर्चा करते हुए अणुव्रत को एक समाधान के रूप में प्रस्तुत किया। साथ ही महाप्राण ध्वनि का प्रयोग भी कराया। राजेश जी का भी वक्तव्य हुआ।

ट्रैफिक के प्रमुख पदाधिकारी **एएसआई प्रवीण भाई, सुपरवाइजर हंसराज जी, जीतेन्द्र जी और चिमन जी** ने अणुव्रत समिति के साथ मिलकर काम करने की इच्छा प्रकट की। समिति इस कार्य को एक नियमित प्रकल्प के रूप में हाथ में लेने पर विचार कर रही है।

उधना, पर्वत पाटिया, अडाजण आदि क्षेत्रों को प्रतिनिधित्व देते हुए सूरत समिति को गत वर्ष ग्रेटर सूरत का नाम दिया गया था। उसी अनुरूप आज का मुख्य कार्यक्रम उधना सभा भवन में आयोजित हुआ जिसमें विभिन्न क्षत्रों का प्रतिनिधित्व करते हुए 200 के करीब लोग मौजूद थे। महासभा के संगठन मंत्री प्रकाश जी डाकलिया, महिला मंडल की राष्ट्रीय महामंत्री मधु जी देरासरिया व ट्रस्टी कनक जी बरमेचा सहित सूरत, उधना, पर्वत पाटिया, अडाजण, लिम्बायत आदि स्थानों की सभा, युवक परिषद्, महिला मंडल, प्रोफेशनल फोरम आदि के अध्यक्ष व अन्य पदाधिकारीगण उपस्थित थे। अणुविभा कार्यसमिति सदस्य अलका जी सांखला, मीडिया टीम से पवन जी फूलफगर, बालचंद जी बेताला, सुआलाल जी बोल्या, अर्जुन जी मेड़तवाल, राजेश जी कावड़िया, महेश जी नानावटी, अमित जी नाहर सहित अनेक प्रमुख लोग उपस्थित थे। राजेश जी का वक्तव्य अणुव्रत के महत्त्व को उजागर करने वाला तथा कार्यकर्ताओं में जोश भरने वाला था। विनोद जी ने सूरत समिति की सक्रियता की प्रशंसा करते हुए संगठन को मजबूत और व्यापक बनाने की बात कही। मेरा वक्तव्य अणुव्रत में संस्थागत शुचिता, आर्थिक शुचिता और आयोजन शुचिता पर केंद्रित था। अणुविभा ने इन तीनों ही मुद्दों पर स्वयं ने पहल की है और अपनी कार्यशैली में इन्हें शामिल किया है, इस बात को व्यापक समर्थन मिल रहा है।

सूरत रेलवे स्टेशन

भोजन के बाद इसी स्थान पर **ग्रेटर अणुव्रत समिति** की कार्यसमिति बैठक भी होनी थी। यह देखकर अच्छा लगा कि टीम में अनेक प्रतिभाशाली सदस्य शामिल हैं। हम लोगों ने कुछ सुझाव भी दिये। जीवन विज्ञान के क्षेत्र में व्यापक कार्य करने की प्रचुर सम्भावना यहां दृष्टिगोचर हुई। यहां से हम सीधे **सूरत रेलवे स्टेशन** पहुँचे जहां समिति के प्रयासों से अणुव्रत नियमों की जानकारी देने वाले **एलईडी बोर्ड लगाने का महत्त्वपूर्ण कार्य** किया गया है। इस स्टेशन पर प्रतिदिन लगभग एक लाख यात्री आते हैं। रेलवे के प्रमुख पदाधिकारियों की उपस्थिति में मैंने सब साथियों के साथ इसका लोकार्पण किया। इस कार्य के लिए समिति को श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा ट्रस्ट, सूरत से आर्थिक सहयोग मिला है। समिति की सक्रिय कार्यकर्ता मंजू जी भंसाली की इस कार्य को सफल बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। साध्वीश्री लब्धिश्री जी के दर्शन लाभ का भी हमें सुअवसर प्राप्त हो गया। वहीं पर 50 से भी अधिक दिनों से संथारारत श्री बाबूभाई जी मेहता के भी दर्शन हो गये। रवीन्द्र जी दस्साणी अपनी कार के साथ दिन भर हमारे साथ बने रहे। आज के व्यस्त दिन की सम्पन्नता समिति के साथियों के साथ सहभोजन और सहचर्चा के साथ खुशनुमा माहौल में हुई।

सूरत में 20 दिसंबर का दिन मुख्यतः मेल–मुलाकात के नाम रहा। **राजीव जी जैन** से उनके ऑफिस में कई मुद्दों पर लम्बी बातचीत हुई। व्यावसायिक सफलता की ऊँचाइयां छूने वाले राजीव जी के व्यवहार में सरलता, सहजता और सादगी झलक रही थी। उनकी टेबल पर 'अणुव्रत' का नवीन अंक पड़ा देख कर खुशी हुई। अणुविभा के प्रकल्पों को उन्होंने रुचि के साथ देखा, समझा और पूर्ण सहयोग का भरोसा दिलाया। उधना में **भाई अनिल जी चिंडालिया** के घर कई विषयों पर चर्चा हुई। आप अणुविभा से जुड़े रहे हैं और अभी महासभा को अपनी महत्त्वपूर्ण सेवाएं दे रहे हैं। आसपास के क्षेत्रों में नयी अणुव्रत समितियों के गठन पर भी उन्होंने कई जगह बात की। आपके पिताश्री का भी आशीर्वाद हमें मिला और **अणुव्रत संरक्षक** के रूप में एक लाख का आत्मीयतापूर्ण सहयोग भी। आज रात का स्नेह और मनुहार से भरा भोजन समिति के निवर्तमान अध्यक्ष **नेमीचंद जी कावड़िया** के घर था। आपके भाई डॉ. विमल जी कावड़िया और उनकी धर्मपत्नी डॉ. सीमा जी कावड़िया राजसमंद में अणुविभा के कार्यक्रमों से बहुत नजदीक से जुड़े हैं। **श्री भरत भाई शाह** द्वारा बहुत बड़े स्तर पर चिकित्सा और शिक्षा के क्षेत्र में किये जा रहे सेवा कार्यों और कार्यशैली को जानकार सात्विक गौरव हुआ। उन्होंने अपना पूरा हॉस्पिटल हमें दिखाया।

बचकानिवाला स्कूल भी हम गये जिसने स्वयं को तीस साल पहले ही **अणुव्रत स्कूल** घोषित कर रखा है। इसका एक बोर्ड आज भी लगा है। यहां बच्चों से संक्षिप्त संवाद हुआ। अलका जी सांखला इस स्कूल से निरन्तर जुड़ी हुई हैं। प्रिंसिपल **रीटा बेन फूलवाला** अणुव्रत और जीवन विज्ञान जैसे प्रकल्पों को अपने स्कूल का गौरव मानती हैं। आने वाले समय में यह स्कूल अणुव्रत और जीवन विज्ञान का एक मॉडल स्कूल बने, यह जिम्मेदारी

ग्रेटर सूरत अणुव्रत समिति पर और **अलका जी, अर्जुन जी मेड़तवाल** जैसे अनुभवी कार्यकर्ताओं पर है। राजेश जी सुराणा के घर भोजन पर आंदोलन के सुदृढ़ीकरण की चर्चाएं चलती रहीं। **राकेश जी चोरड़िया** ने चुनावशुद्धि प्रकल्प पर ठोस कार्य करने की इच्छा प्रकट की। **खटेड़ जी** और **सुनील जी** भी सूरत स्तर पर ठोस काम करने के प्रति उत्साहित थे।

21 दिसंबर की सुबह हम राजेश जी सुराणा के घर से वडोदरा के लिए रवाना हुए। **वडोदरा** पिछले वर्षों में ही गठित एक नयी समिति है। अध्यक्ष **संतोष जी सिंघी**, मंत्री **राजू भाई मेहता** और यहां की टीम कोरोना काल से उबरने के बाद अब अणुव्रत का ठोस काम करने के प्रति रुचिशील है। नशामुक्ति और जीवन विज्ञान प्रकल्प पर कई जिज्ञासाएं सामने आयीं। संगोष्ठी में समिति के निवर्तमान अध्यक्ष दीपक जी श्रीमाल, सभा अध्यक्ष हस्तीमल जी मेहता, तेयुप अध्यक्ष पंकज जी बोल्या, महिला मंडल अध्यक्ष गीता जी श्रीमाल सहित अनेक गणमान्यजन शामिल हुए। सभी का मानना था कि संपर्क यात्रा के माध्यम से विचारों और सुझावों के आदान–प्रदान से स्पष्टता बढ़ी है और आने वाले समय में यहां अणुव्रत का अच्छा काम होगा।

वडोदरा से हिम्मतनगर का रास्ता अहमदाबाद से होकर ही गुजरता है। अहमदाबाद से अणुविभा के कार्यसमिति सदस्य भाई **विमल जी बोर्दिया** हमें बायपास पर मिल गये और हम पाँचों साथी हिम्मतनगर के लिए आगे बढ़ गये। **हिम्मतनगर** में हाल ही में अणुव्रत समिति का गठन हुआ है। भीलवाड़ा में **बारडोली अध्यक्ष पायल जी** से हो रही चर्चा के दौरान सुशील जी चावत भी साथ बैठे थे और बात ही बात में उन्होंने कहा कि

अणुव्रत का काम क्या हम हिम्मतनगर में नहीं कर सकते? पायल जी और उनके पति राजेश जी ने कहा कि भीलवाड़ा से लौटते वक्त हिम्मतनगर रास्ते में ही आयेगा और हम वहां रुक कर इस बारे में प्रयास करेंगे। सबके उत्साह और जागरुकता का परिणाम यह रहा कि एक महीने के अंदर ही हिम्मतनगर में अणुव्रत समिति का गठन हो गया। हम सीधे सुशील जी के घर ही पहुँचे जहां कुछ अन्य कार्यकर्ता और बहनें भी उपस्थित थीं।

संगठन मंत्री **विनोद जी कोठारी** ने उसी समय नये रजिस्टर मँगवाये और समिति गठन की प्रक्रिया, मिनट्स लिखने के तरीके और अन्य औपचारिक आवश्यकताओं की पूरी जानकारी दी। किस तरह के कार्यक्रम हाथ में लिये जायें और समिति के सदस्य के रूप में किन लोगों को जोड़ा जाये, इन मुद्दों पर भी बातचीत हुई। सबके उत्साह को देखकर लगा कि शीघ्र ही यहां अणुव्रत समिति का व्यवस्थित स्वरूप उभर कर सामने आयेगा।

हिम्मतनगर से अहमदाबाद हम संशोधित समय रात 8 बजे पहुँच गये। सूरत, वडोदरा, हिम्मतनगर और अहमदाबाद के बीच 400 किलोमीटर से अधिक का सफर तय करने में काफी समय लग गया।

अहमदाबाद में अणुव्रत समिति द्वारा कार्यसमिति बैठक और स्नेहभोज का आयोजन था। 100 के लगभग उपस्थिति थी। बैठक लम्बी चली और बहुत ही उद्देश्यपरक और सार्थक चर्चाएं हुईं। अणुविभा के संस्थागत, आर्थिक और कार्यक्रम शुचिता अभियान को व्यापक सराहना मिली। आमजन चाहते हैं कि अणुव्रत आंदोलन अपनी जड़ों से जुड़कर आंदोलन के मूलभूत सिद्धांतों को अपनी कार्यशैली में क्रियान्वित करे।

मैंने, **राजेश जी सुराणा, विनोद जी कोठारी, अरविंद जी शाह** के साथ ही अणुविभा के निवर्तमान महामंत्री और अणुव्रत संकल्प शृंखला के संयोजक भाई **राकेश जी नौलखा, विमल जी बोर्दिया, सुरेश जी वागरेचा** ने भी विचार व्यक्त किये। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष **सुरेश जी वागरेचा**, मंत्री **मनोज जी सिंघी** के साथ ही समिति की पूरी टीम, सभा अध्यक्ष अशोक जी सेठिया, तेयुप अध्यक्ष ललित जी बेगवानी, महिला मंडल अध्यक्ष चांददेवी जी छाजेड़, तेरापंथ सेवा समाज अध्यक्ष नानालाल जी कोठारी, जवेरीलाल जी संकलेचा, सज्जनराज जी सिंघवी, अमराई सभा अध्यक्ष रमेश जी पगारिया आदि गणमान्यजन उपस्थित थे।

दूसरे दिन प्रातः **शाहीबाग भवन** में **मुनिश्री हिमांशुकुमार** जी के सान्निध्य में **अणुव्रत जीवनशैली संगोष्ठी** का आयोजन हुआ। मुनिश्री ने अणुव्रत कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण की आवश्यकता बताते हुए कहा कि अणुव्रत समितियों से ऐसे व्यक्ति जुड़ें जो अणुव्रत दर्शन के प्रति गहरी आस्था रखते हों। उन्होंने कहा कि अणुव्रत कार्यकर्ता लोगों को व्रत का विज्ञान समझायें। यह अनेक समस्याओं का समाधान है। मुनिश्री हेमंतकुमार जी ने कार्यक्रमों की औपचारिकता को हतोत्साहित करने की बात कही।

अहमदाबाद में विराजित **साध्वीश्री रामकुमारी जी, साध्वीश्री रतनश्री जी** और **साध्वीश्री सरस्वती जी** के दर्शन करने एवं आशीर्वाद प्राप्त करने का भी लाभ हमें मिला। **साध्वीश्री हिमश्री जी** ने अणुव्रत विचारधारा से ओतप्रोत बहुत ही भावपूर्ण गीत सुनाया।

आज दिनभर मुलाकात का क्रम जारी रहा जिसमें हमारे साथ अणुविभा कार्यसमिति सदस्य **विमल जी बोर्दिया**, अणुव्रत समिति अध्यक्ष **श्री सुरेश जी बागरेचा**, मंत्री **मनोज जी सिंघी, बाबूलाल जी चौपड़ा** और **महेंद्र जी चौपड़ा** निरंतर सहयोगी बने रहे। सभा भवन में ही हमारी मुलाकात सज्जनलाल जी सिंघवी, कुंदनमल जी बाफना और अशोककुमार जी सेठिया से हुई। अणुविभा की आर्थिक शुचिता की बात और ष्अणुदान योजनाष आप सभी को पसंद आई और 11 – 11 हजार के अणुदान की आपने सहर्ष स्वीकृति प्रदान की। उल्लेखनीय है कि ष्अणुदान योजनाष में प्राप्त सहयोग राशि का 25: भाग संबंधित अणुव्रत समिति को उनके अंशदान के रूप में लौटा दिया जाता है।

हम श्री जसराज जी बुरड़ से मिलने उनके घर पहुँचे। उनका सहज सरल व्यक्तित्व प्रभावित करता है। यह जानकर सात्विक गौरव हुआ कि वे प्रतिदिन स्वाध्याय करते हैं, प्रवचन सुनते हैं और दर्शन की गूढ़ बातों को अपनी भाषा में लिपिबद्ध करते हैं। आपके परिवार में भी उच्च कोटि के संस्कार सहज ही दृष्टिगोचर होते हैं। आपने अणुव्रत संरक्षक के रूप में अर्थसहयोग भी प्रदान किया।

इसी कड़ी में **रायचंद जी लूणिया** से मिलना हुआ। लूणिया जी ने बड़ी आत्मीयता प्रदान की और **अणुव्रत संरक्षक** के रूप में एक लाख का चैक सहर्ष प्रदान कर दिया। अणुविभा सीएसआर फंडिंग के लिए मान्यता प्राप्त है, यह जानकर आपको खुशी हुई और आपने संस्था को बड़े अनुदान दिलाने का प्रयास करने का भरोसा दिलाया।

मनोहर जी कोठारी से मिलकर हम सभी कार्यकर्ता मानो गद्गद हो गये। आपने अणुव्रत के कार्यों की भूरि–भूरि प्रशंसा ही नहीं की, वरन इस काम में दिल से सहयोगी बनने की बात भी कही। ऐसे मौके कम ही आते हैं जब अनुरोध करने से पहले ही कोई अपने सहयोग का प्रस्ताव आपके सामने रख दे। कोठारी जी जल्दी ही राजसमंद आयेंगे।

गौतम जी बाफना से हमारा मिलना बड़ा सार्थक रहा। अपने स्तर पर भी अणुव्रत के मिशन को आगे बढ़ाने में किस तरह लोग संलग्न रहते हैं, बाफना जी के प्रयास इसका जीता–जागता उदहारण हैं। बाफना जी ने अपनी फैक्ट्री में अणुव्रतों की अनुपालना हेतु किये जा रहे कार्यों के बारे में हमें विस्तार से बताया। अणुव्रत के काम को आगे बढ़ाने में अपने पूर्ण सहयोग के प्रति भी आपने हमें आश्वस्त किया।

23 दिसंबर को **गांधीधाम और भुज** की यात्रा के साथ यह संपर्क यात्रा संपन्न होनी थी। रात को ट्रेन से रवाना होकर हम सुबह लगभग 5 बजे गांधीधाम पहुँच गये। कांडला और मुंद्रा पोर्ट की नजदीकी गांधीधाम को व्यावसायिक दृष्टि से विशेष महत्त्व प्रदान करती है। स्थानीय कार्यकर्ताओं के आग्रह पर हम यहां के पोर्ट ट्रस्ट स्टेडियम में प्रारम्भ हो रही राज्य स्तरीय फुटबॉल प्रतियोगिता के उद्घाटन के अवसर पर वहां पहुँचे और खिलाड़ियों से मिले।

गांधीधाम

अणुव्रत समिति अध्यक्ष **अनंत जी भंसाली** को अचानक परिवारजन के निधन के कारण बाहर जाना पड़ गया। चुनाव की प्रक्रिया समय पर पूर्ण नहीं होने से यहां समिति का पुनर्गठन भी आवश्यक था।

मंत्री **मुकेश जी भंसाली** ने पूर्ण सक्रियता से संगोष्ठी का आयोजन व संचालन किया। समाज के वरिष्ठ जन उपस्थित थे। मंत्री मुकेश जी सहित सबकी राय थी कि कोरोना व अन्य कारणों से अणुव्रत समिति सक्रियता से काम नहीं कर सकी लेकिन एक बार पुनः इसी टीम को अवसर दिया जाये तो अच्छा काम करने की भावना है। सब ने अपने सहयोग के प्रति भी आश्वस्त किया। अनंत जी ने भी फोन पर अपनी सहमति जतायी। सभा उपाध्यक्ष जयसिंह जी जैन व प्रकाश जी खटेड, महिला मंडल अध्यक्ष मंजू जी बोथरा, तेयुप अध्यक्ष विकास जी सुराणा व मंत्री संदीप जी सिंघवी, रेलवे अधिकारी राजेश जी गौतम, मारवाड़ी युवा मंच की तुलसी जी सुजान, फुटबॉल संघ के नन्दलाल जी गोयल एवं भैरवी जी जैन आदि की उपस्थिति में **अनंत जी भंसाली** को अणुव्रत समिति के 2021–23 कार्यकाल के लिए अध्यक्ष घोषित किया गया।

यहां के साथियों ने भुज के लिए कार की व्यवस्था की और हमने विदा ली। लेकिन गांधीधाम छोड़ने से पहले हमें विनयकांता जी का आग्रह स्वीकारना पड़ा। विनयकांता जी दुगड़ 'बच्चों का देश' पत्रिका से लगभग 20 वर्षों से बहुत आत्मीयता के साथ जुड़ी हैं और सैकड़ों बच्चों तक इस पत्रिका को पहुँचाया है। घर पर उन्होंने मातृ तुल्य स्नेह प्रदान किया।

भुज

भुज में अणुव्रत समिति के अध्यक्ष **नरेंद्र भाई मेहता** और **मंत्री जयेश भाई दोसी** अपनी टीम के साथ हमारा इंतजार ही कर रहे थे। सभा अध्यक्ष हंसमुख भाई मेहता, तेयुप अध्यक्ष आशीष जी बाबरिया, महिला मंडल अध्यक्ष जयश्री जी एवं अणुव्रत समिति के निवर्तमान अध्यक्ष **वाडीलाल भाई** सहित अच्छी संख्या में बहनें और युवा भी उपस्थित थे। अणुव्रत के कार्यक्रमों को ठोस धरातल देने के क्रम में सार्थक चर्चाएं हुईं। भुज अच्छा क्षेत्र है और यहां अणुव्रत का अच्छा कार्य हो रहा है। सभी ने आश्वस्त किया कि इस यात्रा के बाद निश्चय ही अब काम में और गति आयेगी।

भुज के समर्पित कार्यकर्ताओं के साथ स्नेहभोज के बाद राजेश जी सुराणा, विनोद जी कोठारी और अरविन्द जी शाह स्थानीय कार्यकर्ताओं के आग्रह पर उनके साथ कच्छ रण देखने के लिए रवाना हुए और मैंने फालना के लिए ट्रेन पकड़ी। फालना रात 3 बजे ट्रेन पहुँची और मैं उतर पाता इससे पहले ही ट्रेन चल पड़ी। बरसों बाद चलती ट्रेन में ही बैग लेकर उतरने का यह अनुभव रोमांचित कर गया। लेहरू सिंह के साथ गाड़ी में राजसमंद पहुँचा और एक दिन जरूरी काम निपटा कर दूसरे दिन बेटे संकेत के साथ जयपुर के लिए रवाना हो गया जहाँ अणुविभा की कार्यसमिति बैठक, अणुव्रत गौरव सम्मान का कार्यक्रम और कल्याण परिषद् में सहभागिता के महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम इंतजार कर रहे थे।

इस प्रकार **पालघर** से प्रारम्भ होकर भुज तक **13 अणुव्रत समितियों** के साथ संपर्क, संवाद का एक सप्ताह का क्रम पूरा हुआ। यह यात्रा साथी कार्यकर्ताओं के साथ घनिष्ठता और आत्मीयता का भी दुर्लभ अवसर दे गयी। एक सप्ताह तक साथ रहना, विचारों का आदान–प्रदान करना और आगे की योजनाएं बनाना जहां संस्था के स्वरूप को निखारने में मददगार होता है, वहीं आपसी समन्वय स्थापित करने में भी बड़ी भूमिका निभाता है। अपनी पारिवारिक और व्यावसायिक जिम्मेदारियों को एक हद तक गौण कर सामाजिक सरोकारों के लिए निर्लिप्त भाव से जुट जाना निश्चय ही साथियों के समर्पण भाव को दर्शा रहा था।

भाई **राजेश जी** की कार्यशैली और वक्तृत्व शैली को इस एक सप्ताह में और भी नजदीक से देखने का मौका मिला। अपनी बात कहने और लोगों से संपर्क बनाने की उनकी कला विशिष्ट है। **विनोद जी कोठारी** अपने पिताश्री डालचंद जी साहब की विरासत को बखूबी आगे बढ़ा रहे हैं, यह देखकर सात्विक गौरव हुआ। **अरविन्द भाई** की सरलता, जिंदादिली और सहयोग की भावना प्रभावित करने वाली थी। यह यात्रा कई मायनों में उपलब्धिपरक रही और आगे बढ़ने की नयी ऊर्जा दे गयी।

...और छूट गयी गुटखे की लत

सूरत में एक ऐसे व्यक्ति से मिलना हुआ जिनका जिक्र करने से मैं स्वयं को रोक नहीं पा रहा हूँ। हम उन्हें अणुव्रत के उद्देश्यों और विभिन्न प्रकल्पों की जानकारी दे रहे थे। बात ही बात में पता चला कि वे अपने ऑफिस में अणुव्रत के संकल्प पत्र रखते हैं और उनसे मिलने आने वाले प्रत्येक व्यक्ति को संकल्प लेने के लिए प्रेरित करते हैं। उनकी फैक्ट्री में काम करने वाले हर एक कर्मी को प्रतिवर्ष ये संकल्प लेने होते हैं। जब उनसे इसकी प्रेरणा का स्रोत जानना चाहा तो एक विस्मित करने वाली कहानी उभर कर सामने आयी। यह कहानी है गौतम जी बाफना की।

गौतम जी बाफना को गुटखा खाने की आदत थी। उनके पिताजी श्री घीसूलाल जी बाफना को जब पता चला तो उन्होंने अलग-अलग तरीकों से बेटे की बुरी लत छुड़वाने के कई प्रयास किये। इसके बावजूद जब वे यह आदत नहीं छुड़ा पाये तो केवल एक वक्त भोजन करने का संकल्प ले लिया और यह क्रम करीब दो वर्ष चक्र चलता रहा। 1997 की बात है। आचार्य तुलसी के महाप्रयाण के समाचार सुन पिताजी व अन्य परिवारजनों के साथ गुरुदेव के अंतिम दर्शन की कामना लिये गौतम जी बस लेकर निकल पड़े। खेड़ब्रह्मा के पास बस खराब हो गयी। पिताजी गुरुदेव के अंतिम दर्शन नहीं कर पायेंगे, यह बात गौतम जी को विचलित कर रही थी। गुटखा छोड़ने की पिताजी की बात नहीं रख पाने की पहले से उनके मन में ग्लानि थी। अचानक मन में विचार कौंधा कि यदि पिताजी को आचार्य श्री के अंतिम दर्शन करा सका तो गुटखा भी छोड़ दूँगा। गौतम जी की संकल्प साधना पूर्ण हुई और उस दिन के बाद उन्होंने कभी गुटखा नहीं खाया।

पिताजी की पुण्यतिथि 29 सितम्बर के दिन वे प्रतिवर्ष फैक्ट्री में काम करने वाले हर कर्मी से नशामुक्ति का संकल्प विशेष रूप से दिलवाते हैं। गौतम जी के यहां उसी व्यक्ति को नौकरी पर रखा जाता है जो नशामुक्ति का संकल्प ले।

अणुव्रत डायरी

संयोजक श्री छत्तरसिंह चौरड़िया की रिपोर्ट

अणुव्रत दर्शन को सरल-सहज शब्दों में उतारने का प्रयास है अणुव्रत डायरी, जिसके माध्यम से अणुव्रत आचार संहिता को दिन-प्रतिदिन हृदयंगम किया जा सके। अणुव्रत के सिद्धांत कागज के पन्नों से निकल कर दिनचर्या में शामिल हो सकें और बन सकें हमारे दैनन्दिन जीवन का अभिन्न अंग। अणुव्रत दर्शन के व्यापक प्रचार-प्रसार तथा अणुव्रत आंदोलन को जन-जन तक पहुँचाने के उद्देश्य से अणुव्रत समितियां अणुव्रत डायरी को आमजन से लेकर विशिष्ट जनों तक पहुँचाने में जुटी हुई हैं। प्रस्तुत है इस कार्य में अणुव्रत समितियों की सहभागिता की क्रमवार सूची –

गुवाहाटी	1150	चेन्नई	100
दिल्ली	700	सुजानगढ़	50
जयपुर	500	केसिंगा	50
छापर	467	बालोतरा	50
जोधपुर	440	कोटा	50
बेंगलुरु	370	कालाहाण्डी	50
भीलवाड़ा	220	टिटिलागढ़	50
चाड़वास	220	धुबड़ी	50
मुम्बई	220	मैसूर	50
सिलीगुड़ी	220	इस्लामपुर	50
कूचबिहार	200	हिसार	50
राजसमंद	150	चिकमंगलुरू	50
सिरसा	150	ग्रेटर सूरत	50
तेजपुर	125	कोयम्बटूर	50
फारबिसगंज	120	ढेकियाजुली	50
बीकानेर	110	उदयपुर	50
कोलकाता	100	तिनसुकिया	50
किशनगंज	100	कटक	30
बिलासीपाड़ा	100	सवाईमाधोपुर	30
मोमासर	100	बंगाईगांव	25
हुबली	100	खारूपेटिया	25
हैदराबाद	100	भट्टूमण्डी	20

● छापर : मुनिश्री पृथ्वीराज जी के सान्निध्य में विधायक श्री अभिनेष महर्षि को भेंट ● गुवाहाटी : साध्वीश्री संगीतश्री जी को भेंट ● ढेकियाजुली : असम सरकार के शहरी विकास तथा सिंचाई मंत्री श्री अशोक सिंघल को भेंट ●भीलवाड़ा : 'शासनश्री' मुनिश्री हर्षलाल जी को भेंट ● जोधपुर : मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी श्री भल्लू राम खिचड़ को भेंट।

अणुव्रत संदेश को
जन-जन तक
पहुंचाने का
एक सुन्दर माध्यम

अणुव्रत डायरी
मूल्य ₹ 100 मात्र

100 या इससे अधिक प्रतियां मंगाने
पर अणुव्रत समिति अथवा व्यक्तिगत नाम
डायरी पर प्रिंट किया जा सकेगा।

- अग्रिम बुकिंग के लिए आज ही सम्पर्क करें-
संयोजक
श्री छतर सिंह चोरड़िया
+917002468576

पाठकों के लिए
विशेष प्रतियोगिता

आपको करना है बस इतना →

❖ 'अणुव्रत पत्रिका' के जनवरी 2022 अंक को ध्यानपूर्वक आद्योपांत पढ़ना
❖ जनवरी 2022 अंक पर आधारित 10 सरल प्रश्नों के उत्तर प्रेषित करना

जनवरी 2022 अंक पर आधारित प्रश्न

1. बालोदय एजुटूर का संबंध किस स्थान से है?
2. 'हमारे पथ प्रदर्शक' पुस्तक के लेखक कौन हैं?
3. किस प्राणायाम में श्वास-नि:श्वास प्रक्रिया समान है?
4. किस महान् विचारक ने मनुष्य को Social Animal कहा है?
5. आदिवासी अंचल-कुशलगढ़ के संस्थापक का क्या नाम था ?
6. अणुव्रत के मंच से धर्मक्रांति के कितने सूत्र उद्घोषित हुए?
7. भारतीय दर्शन एवं धर्म की सर्वाधिक पढ़ी जाने वाली पुस्तक कौन-सी है ?
8. आदि शंकराचार्य ने आध्यात्मिक जगत में प्रवेश करने की पहली खिड़की किसे बताया है?
9. 'नर संहार न हो, व्यर्थ का रक्तपात न हो' - यह घोषणा करने वाले थल सेनाध्यक्ष का क्या नाम था?
10. 'शराब रूपी लाल पानी में गिरना धधकती भट्ठी या बाढ़ में गिरने से भी अधिक खतरनाक है।' - यह कथन किसका है?

ज्ञातव्य बिंदु

- प्रतियोगिता के प्रश्न जनवरी 2022 के अंक पर आधारित।
- परिवार के एक सदस्य की प्रविष्टि ही मान्य होगी।
- प्रतिभागी उत्तर के साथ पता और मोबाइल नं. अवश्य उल्लेख करें।
- उत्तर संक्षेप में दें। पत्रिका में उल्लेखित शब्द ही मान्य होंगे।
- काट-छांट व शब्दों में त्रुटि होने पर अंक काट लिये जायेंगे।
- सर्वाधिक सही उत्तर लिखकर भेजने वाला पाठक विजेता होगा।
- एकाधिक विजेता होने की स्थिति में लॉटरी द्वारा निर्धारण होगा।
- विजेता का नाम मय फोटो पत्रिका में प्रकाशित किया जायेगा।
- सही उत्तरदाताओं के नाम का पत्रिका में उल्लेख होगा ।

उत्तर इस पते पर भेजें

अणुव्रत विश्व भारती
अणुव्रत भवन,
210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली–110002
मो : 91166 34512
anuvrat.patrika@anuvibha.org

विजेता — अणुव्रत पत्रिका त्रैवार्षिक सदस्यता

प्रोत्साहन - दो — अणुव्रत पत्रिका एक वर्षीय सदस्यता

उत्तर प्राप्ति की अंतिम तिथि
15 मार्च, 2022

दिसम्बर 2021 अंक में प्रकाशित प्रतियोगिता के परिणाम

(नवम्बर 2021 अंक पर आधारित)

एकाधिक विजेता होने के कारण निर्णय लॉटरी द्वारा किया गया, जो इस प्रकार है -

विजेता

प्रणत नाहर
जोधपुर

-:: प्रोत्साहन पुरस्कार ::-

सुरेश चौपड़ा
पचपदरा

रामविलास जैन
सूरत

अन्य सही उत्तरदाताओं के नाम :-

शांतिलाल पटावरी	प्रवीण जैन	कमलेश धाकड़
कमला संचेती	विमल सामसुखा	सरस्वती देवी जैन
कविता चोपड़ा	संगीता चोपड़ा	विजया चोपड़ा
जिनेश चोपड़ा	कल्पेश संकलेचा	अलका संकलेचा
ममता संकलेचा	श्वेता जैन	लता गुप्ता
कुसुमलता वर्मा	खुशबू छाजेड़	सोहनराज छाजेड़
मंजू छाजेड़	कमल सिंह बुच्चा	सुधा भंसाली
तरुण चोपड़ा	निकिता छाजेड़	कल्याणमल विजयवर्गीय
सीमा धींग	सिद्धार्थ नाहर	इंद्रादेवी नाहटा
शशि लुंकड़	विकास लुंकड़	रेखा लुंकड़
लक्ष्मी	भावना देवी	विजय कुमार जैन
महावीर सालेचा	सोनमदेवी सालेचा	अजित प्रसाद जैन
मनाली भंसाली	श्रेयांस जैन	ऐ. पी. ठाकुर
सरला कोठारी	शशि चोपड़ा	ताराचंद जैन
हीना संकलेचा	सुनीता पारख	चम्पालाल जैन
शोभा देवी भंसाली	मंजू जोहरी	विजय कुमार जैन

अणुव्रत Q10 प्रतियोगिता

प्रश्नों के सही उत्तर

उत्तर 01	ज्येष्ठ माह की पूर्णिमा के दिन	पृ. 14
उत्तर 02	श्री ललित गर्ग	पृ. 36
उत्तर 03	पदार्थ	पृ. 10
उत्तर 04	फ्रैडरिक शूमाकर	पृ. 05
उत्तर 05	फारुक आफरीदी	पृ. 37
उत्तर 06	26 सितम्बर, 2021	पृ. 42
उत्तर 07	अणुविभा	पृ. 24
उत्तर 08	प्रकाश	पृ. 20
उत्तर 09	10 फरवरी 1989 को छापर में	पृ. 29
उत्तर 10	14 नवम्बर 1951	पृ. 18

निष्पक्ष और शुचितापूर्ण हों चुनाव

अणुविभा अध्यक्ष ने लिखा मुख्य चुनाव आयुक्त सहित प्रमुख राजनैतिक दलों को पत्र

अणुविभा अध्यक्ष **श्री संचय जैन** ने भारत के मुख्य चुनाव आयुक्त **श्री सुशील चन्द्रा** को पत्र लिखकर **उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब, मणिपुर** तथा **गोवा** में होने वाले विधानसभा चुनाव में शुचिता का आग्रह किया है। 8 जनवरी को लिखे पत्र में श्री जैन ने कोरोना संकट के चलते बड़ी रैलियों और रोड शो पर रोक लगाने के आयोग के निर्णय का स्वागत किया। चुनाव आयोग से जनता की अशाओं और अपेक्षाओं पर खरा उतरने की आशा व्यक्त करते हुए श्री जैन ने कहा है कि चुनाव आचार संहिता का निष्पक्षता और कड़ाई से पालन हो, यह देश के लोकतंत्र के लिए अत्यन्त आवश्यक है। सत्ता पाने के लिए राजनैतिक दलों द्वारा अर्थबल और बाहुबल के आधार पर जो अनैतिक तरीके अपनाये जाते हैं, वे हमारे लोकतंत्र पर काला धब्बा हैं। वोट पाने के लिए जनता के बीच नशीली वस्तुओं का वितरण उन राजनैतिक दलों और उम्मीदवारों के लिए अनैतिक और अमानवीय है जिनके हाथों में कल सत्ता आने वाली है। चुनाव आयोग के पास वह शक्ति है जो चुनाव शुद्धि के माध्यम से सत्ता से जुड़ी अनेक विद्रूपताओं का समाधान दे सकती है।

देशभर में समर्पित भाव से सक्रिय हजारों अणुव्रत कार्यकर्ताओं की भावनाओं का प्रतिनिधित्व करते हुए **अणुव्रत विश्व भारती** ने **चुनाव आयोग** से अनुरोध किया है कि *आयोग निष्पक्षता और दृढ़ता के साथ चुनावों के दौरान कालेधन के उपयोग, नशीली वस्तुओं के वितरण, अपराधी व चरित्रहीन उम्मीदवारों से चुनावों को बचा कर जनता को एक स्वस्थ लोकतंत्र के प्रति आश्वस्त करे। अणुव्रत विश्व भारती अपने चुनाव शुद्धि अभियान के माध्यम से चुनावों में शुचिता के लिए जनजागरण का यथासामर्थ्य प्रयास कर रही है। श्री जैन ने भाजपा अध्यक्ष श्री जे. पी. नड्डा, कांग्रेस प्रमुख श्रीमती सोनिया गांधी, सपा अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव, बसपा सुप्रीमो सुश्री मायावती, आम आदमी पार्टी के अध्यक्ष श्री अरविन्द केजरीवाल तथा विधानसभा चुनाव वाले पाँचों राज्यों के मुख्यमंत्रियों, नेता प्रतिपक्ष तथा इन राज्यों के राजनीतिक दलों के प्रदेशाध्यक्षों तथा प्रमुख नेताओं को भी लिखे पत्र में चुनाव में शुचिता रखने तथा आपराधिक छवि के लोगों को टिकट न देने का आग्रह किया है।*

चुनाव शुद्धि अभियान को गतिशील बनाने पर चर्चा

अणुव्रत विश्व भारती की ओर से **20 जनवरी** को वर्चुअल बैठक आयोजित की गयी जिसमें पंजाब और उत्तर प्रदेश के प्रमुख कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। इन दोनों राज्यों में होने जा रहे विधानसभा चुनाव के दौरान अणुविभा के चुनाव शुद्धि अभियान को कैसे गति प्रदान की जाये, इस पर विस्तृत चर्चा हुई। निर्णय लिया गया कि चयनित क्षेत्रों में अणुविभा प्रचार–प्रसार सामग्री भेजेगी।

पंजाब प्रांतीय सभा के अध्यक्ष **श्री केवल कृष्ण गोयल** और **श्री सुरेंद्र मित्तल** ने पंजाब के पूरे अभियान का आर्थिक दायित्व वहन करने की स्वीकृति दी। लुधियाना से **श्री कुलदीप सुराणा** ने अभियान को सफल बनाने का भरोसा दिलाया। उत्तरप्रदेश के राज्य प्रभारी और अणुव्रत समिति कानपुर के अध्यक्ष **श्री टीकम चंद सेठिया, श्री त्रिभुवन जैन और श्री पूनमचंद सुराणा** ने उत्तरप्रदेश में उपयुक्त व्यक्तियों की तलाश कर इस अभियान को आगे बढ़ाने की बात कही। शीघ्र ही हरियाणा, पंजाब और उत्तर प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में संयोजक मनोनीत कर इस अभियान को व्यापक बनाने का निर्णय लिया गया।

अणुविभा की ओर से अध्यक्ष श्री संचय जैन, वरिष्ठ उपाध्यक्ष और मध्यांचल के प्रभारी श्री अविनाश नाहर, उपाध्यक्ष एवं चुनाव शुद्धि अभियान के प्रभारी श्री राजेश सुराणा, महामंत्री श्री भीखम सुराणा और मध्यांचल के संगठन मंत्री श्री संजय जैन ने चुनाव शुद्धि अभियान की कार्ययोजना की जानकारी प्रस्तुत की। श्री राजीव अग्रवाल, श्री विनोद जैन, श्री नितिन जैन और श्री अशोक जैन ने भी पूर्ण सहयोग का विश्वास दिलाया।

संवाद अणुव्रत समितियों के साथ

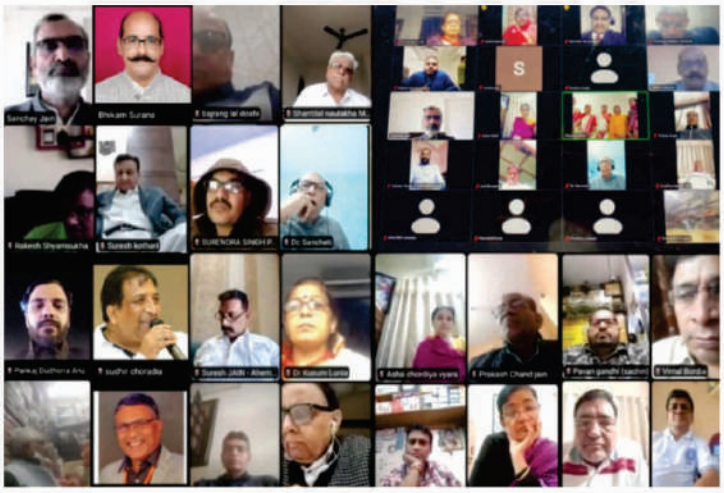

अणुव्रत विश्व भारती की ओर से **9 जनवरी** को **अणुव्रत समितियों से ऑनलाइन संवाद** का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम अणुविभा के महामंत्री श्री भीखमचंद सुराणा ने सभी का स्वागत करते हुए मुख्य बिंदुओं की जानकारी दी।

❖ अणुव्रत समिति बारडोली के अणुव्रत गीत की प्रस्तुति के साथ बैठक की शुरुआत हुई।

❖ इसके बाद अणुविभा के अध्यक्ष श्री संचय जैन ने अणुव्रत आचार संहिता का वाचन किया। अध्यक्षीय उद्‌बोधन में उन्होंने सभी प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए नववर्ष की शुभकामनाएं दीं तथा आचार्य तुलसी के सपनों को साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करने का आह्वान करते हुए कहा कि कोरोना महामारी से बचाव के साधन अपनाते हुए सामाजिक कार्य करें। संयम के कवच का उपयोग करें।

श्री जैन ने अणुव्रत आंदोलन को मजबूत बनाने के लिए तीन विषयों पर गंभीरता से काम करने की समितियों से अपील की –

❋ **आर्थिक शुचिता** – आर्थिक शुचिता का अणुविभा पूरी तरह पालन करेगी और इसकी आचार संहिता सार्वजनिक रूप से घोषित की जा चुकी है। अणुव्रत समितियां भी आर्थिक शुचिता पर कार्य करें।

❋ **कार्यक्रम की शुचिता** – हम जो भी कार्यक्रम करें, उनमें हमारे उद्देश्य स्पष्ट हों और रचनात्मकता हो। औपचारिक कार्यक्रमों से बचते हुए हमें सामाजिक बदलाव में प्रभावी भूमिका निभाने वाले कार्यक्रमों को प्राथमिकता देनी है।

❋ **संस्थागत शुचिता** – संस्थागत वैधानिकता की हर स्तर पर पालना करते हुए अपनी सदस्यता के आधार को हमें व्यापक बनाना है ताकि हर जाति, धर्म, संप्रदाय के लोग अधिक से अधिक इस आंदोलन से जुड़ कर आदर्श समाज रचना में सहयोगी बन सकें।

श्री जैन ने संगठन सुदृढ़ीकरण पर बल देते हुए कहा कि सभी समितियां ज्यादा से ज्यादा सदस्य बनायें। सदस्यता रजिस्टर को व्यवस्थित रखें। हम चाहते हैं कि पूरे देश की अणुव्रत समितियों और उनके सदस्यों का ऑनलाइन डाटा तैयार हो।

श्री संचय जैन ने कहा कि मार्च में अणुव्रत प्रबोधक कार्यशाला का आयोजन किया जाना प्रस्तावित है। सभी समितियां इसके लिए ऐसे पाँच–पाँच व्यक्तियों के नाम सुझायें जिनके जीवन में अणुव्रत बोलता हो और वे अणुव्रत प्रबोधक बनकर कार्य कर सकें।

श्री जैन ने कहा कि कर्नाटक, छत्तीसगढ़ व मध्यप्रदेश में जीवन विज्ञान का अच्छा कार्य चल रहा है। जीवन विज्ञान कार्यक्रम के लिए प्रत्येक समिति 10–10 विद्यालयों के नाम भिजवाये।

❖ संयोजक डॉ. कुसुम लूनिया ने 1 मार्च 2022 को मनाये जाने वाले अणुव्रत स्थापना दिवस के संबंध में प्रतिभागियों से सुझाव देने का आग्रह किया। सूरत समिति के मंत्री श्री सुनील श्रीश्रीमाल ने इस अवसर पर राष्ट्रीय स्तर पर कवि गोष्ठियां आयोजिन करने का सुझाव दिया।

❖ अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट–2021 के संयोजक **श्री सुधीर चौरड़िया** ने कॉन्टेस्ट की जानकारी देते हुए कहा कि कोरोना महामारी के प्रकोप के कारण तिथि आगे बढ़ाये जाने के सुझाव मिल रहे हैं। अनेक समितियों के प्रतिनिधियों ने अपनी अभिव्यक्ति में समय बढ़ाने के प्रस्ताव का समर्थन किया। (अणुविभा द्वारा सभी प्रतियोगिताओं के स्कूल स्तर की अंतिम तिथि 31 जुलाई, 2022 तक बढ़ाने की घोषणा कर दी गयी है।)

❖ अणुव्रत डायरी प्रकल्प के संयोजक **श्री छत्तरसिंह चौरड़िया** ने बताया कि इस डायरी में अणुव्रत दर्शन पर महत्वपूर्ण सामग्री का संकलन है। देशभर से 7 हजार से अधिक डायरी का ऑर्डर प्राप्त हो चुका है।

❖ अणुविभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष **श्री अविनाश नाहर** ने अर्थ सम्बल अभियान के बारे में बताते हुए कहा कि अणुव्रत कार्यक्रमों की क्रियाशीलता के लिए अर्थ की व्यवस्था आवश्यक है। 2000, 5000 और 11 हजार की अणुदान राशि प्राप्त कर ज्यादा से ज्यादा लोगों को

अणुव्रत आंदोलन से जोड़ा जाये। इसमें 25 प्रतिशत राशि पुनः अणुव्रत समितियों को लौटाने की व्यवस्था है। जयपुर और सिलीगुड़ी अणुव्रत समिति ने आगे आकर सहयोग किया है। हमारी दो मासिक पत्रिकाएं हैं – अणुव्रत और बच्चों का देश। इनके प्रकाशन में बड़ा श्रम लग रहा है। आप सभी लोग इन पत्रिकाओं के लिए विज्ञापन की व्यवस्था करें। इसमें कमीशन राशि अणुव्रत समितियों को भी मिलेगी।

❖ अणुव्रत संकल्प शृंखला के संयोजक **श्री राकेश नोलखा** ने अणुव्रत संकल्प शृंखला के बारे में बताते हुए इनके व्यापक प्रचार–प्रसार का आह्वान किया। उन्होंने अधिक से अधिक लोगों से ऑनलाइन या ऑफलाइन अणुव्रत संकल्प पत्र भरवाने की अपील की। संकल्प पत्र अणुविभा राजसमंद या दिल्ली कार्यालय से निःशुल्क मँगाये जा सकते हैं।

❖ अणुव्रत प्रबोधन प्रतियोगिता के संयोजक **श्री अशोक चौरड़िया** ने बताया कि 7 जनवरी को परिणाम घोषित कर दिया गया है। इसमें 622 प्रतियोगियों ने 400 में से 400 अंक प्राप्त किये हैं। किसी समिति को परिणाम प्राप्त न हुआ हो तो कार्यालय में सूचित करें।

❖ नशामुक्ति अभियान के संयोजक **श्री राजेश चौधरी** ने राष्ट्रीय स्तर पर स्लोगन प्रतियोगिता रखे जाने की जानकारी दी।

❖ कोषाध्यक्ष **श्री राजेश बरड़िया** ने ट्रस्ट डीड के बारे में जरूरी जानकारी देते हुए सभी समितियों से शीघ्र से शीघ्र अणुव्रत ट्रस्ट डीड रजिस्टर कराने की अपील की। हिसार समिति के अध्यक्ष श्री कुंदन गोयल ने ट्रस्ट डीड रजिस्ट्रेशन के अपने अनुभव बताते हुए कहा कि यह बहुत ही सरल प्रक्रिया है।

❖ मध्यप्रदेश राज्य प्रभारी **श्री सुरेश कोठारी** ने भी विचार रखे।

❖ श्री धनपत नाहटा, दिल्ली, श्रीमती आनंदबाला भीलवाड़ा, शांति चौरड़िया धुबड़ी, श्री शांतिलाल पोरवाल बेंगलुरु, नवीन दुगड़ कोलकाता, पृथ्वीसिंह सरदारशहर, बजरंगलाल दोसी गुवाहाटी, सुधा भंसाली जोधपुर, कंचन सोनी मुंबई, प्रभा सेठिया फारबिसगंज, भूपेन्द्र बरड़िया कोटा, पुष्पा चिण्डालिया सिलीगुड़ी, जगदीश प्रसाद जाट चाड़वास, ललित कुमार आंचलिया चेन्नई, जयश्री सिद्धा जयपुर, सुनील श्रीश्रीमाल सूरत, भंवरलाल गोलछा बीकानेर, विनोद नाहटा छापर, लालचंद भंसाली चिकमंगलूर, प्रकाश भण्डारी हैदराबाद, आशा चौरड़िया व वनीता भटेवरा व्यारा, रितु जैन टोहाना, मनीष कठोतिया इंदौर, शकुंतला जी इस्लामपुर, दिनेश नौलखा काठमांडू और सुन्दरलाल चोपड़ा कूचबिहार ने अपने–अपने यहां चल रहे कार्यक्रमों की जानकारी प्रस्तुत की।

अणुव्रत संदेश स्थल

- **अणुव्रत चौराहा**
- सिटी कोतवाली, भीलवाड़ा
- लोकार्पण की तिथि – 10 **नवम्बर, 2016**
- लोकार्पणकर्ता – **श्री सुरेन्द्र जैन**
  अध्यक्ष, अणुव्रत महासमिति
- मुख्य अतिथि – **श्री विट्ठल शंकर अवस्थी**
  विधायक, भीलवाड़ा
- अध्यक्षता – **श्रीमती ललिता समदानी**
  सभापति नगर परिषद, भीलवाड़ा
- यह चौराहा शहर के बीच में स्थित है। इस चौराहे से हजारों व्यक्ति रोज गुजरते हैं।
- वर्तमान में सार–संभाल करने वाली संस्था
  अणुव्रत समिति, भीलवाड़ा

आप भी अपने क्षेत्र में स्थित ऐसे स्थलों की सूचना
अणुविभा दिल्ली कार्यालय
मोबाइल 9116634512
ईमेल anuvrat.patrika@anuvibha.org
को यथाशीघ्र प्रेषित करें।

अणुविभा के स्थापना दिवस पर शिक्षकों का सम्मान

राजसमंद

अणुव्रत आन्दोलन की प्रतिनिधि संस्था अणुव्रत विश्व भारती का 40वां स्थापना दिवस संस्था मुख्यालय चिल्ड्रन'स पीस पैलेस में 30 दिसम्बर को सादगीपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर राजसमन्द जिले के विशिष्ट शिक्षकों का स्मृति चिह्न, अणुव्रत डायरी और अणुव्रत अंगवस्त्र द्वारा सम्मान किया गया। कार्यक्रम में आशीर्वचन प्रदान करते हुए **मुनिश्री संजयकुमार** ने कहा कि अणुव्रत एक उत्कृष्ट जीवनशैली है जो संयम को जीवन में स्थापित कर सुख व शांतिमय जीवन की आधारशिला रखती है। उन्होंने अणुव्रत को विश्व मानव को समर्पित एक उत्कृष्ट जीवन दर्शन बताया।

मुनिश्री सिद्धप्रज्ञ ने अणुविभा के संस्थापक श्री मोहनभाई के अविस्मरणीय योगदान को याद करते हुए कहा कि ऐसे महापुरुष विरले होते हैं। यह खुशी की बात है कि उनके सुपुत्र श्री संचय जैन उनकी विरासत को और अधिक समृद्ध करने में अपनी शक्ति का नियोजन कर रहे हैं। **मुनिश्री धैर्यकुमार** ने भी विचार व्यक्त किये।

मुख्य अतिथि नगर परिषद् राजसमंद के सभापति **श्री अशोक टांक** ने कहा कि अणुव्रत के कार्यों, विशेषतः नयी पीढ़ी के निर्माण के पवित्र कार्य में नगर परिषद् सदैव सहयोगी रहेगी।

अणुविभा के **अध्यक्ष श्री संचय जैन** ने कहा कि अणुविभा आज सम्पूर्ण अणुव्रत आन्दोलन की प्रतिनिधि संस्था बनकर उभरी है। संयुक्त राष्ट्र संघ से संबद्धता इस संस्था को विशिष्टता प्रदान करती है। अपने बहुविध प्रकल्पों के माध्यम से देशभर में सक्रिय 176 अणुव्रत समितियां इस आन्दोलन को जन–जन में संपुष्ट करने एवं शांति व अहिंसा के संदेश को प्रसारित करने में संलग्न हैं। राजसमन्द वासियों को इस संस्था के कार्यक्रमों का अधिक से अधिक लाभ उठाना चाहिए।

सम्मानित शिक्षकों का परिचय कराते हुए अणुविभा के स्कूल विद् ए डिफरेन्स प्रकल्प के संयोजक डॉ. राकेश तैलंग ने कहा कि इन शिक्षक–शिक्षिकाओं व उनके विद्यालयों का अणुविभा के बाल विकास प्रकल्पों में निरन्तर सहयोग तथा सक्रिय सहभागिता रही है। उन्होंने जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) श्रीमती सुषमा भाणावत का शिक्षकों की सेवाएं अणुविभा को दिलाये जाने हेतु धन्यवाद ज्ञापित किया।

इससे पहले नाथद्वारा अणुव्रत समिति के अध्यक्ष **श्री साबिर शुक्रिया** ने अणुव्रत गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संयोजन अणुविभा के उपाध्यक्ष **श्री अशोक डूंगरवाल** व आभार ज्ञापन राजसमंद अणुव्रत समिति के अध्यक्ष **डॉ. वीरेन्द्र महात्मा** ने किया।

श्री जितेन्द्र सनाढ्य ने सम्मानित शिक्षकों की ओर से कहा कि आने वाला भविष्य अणुव्रत का ही है। इंसान को अंततः यही रास्ता अंगीकार करना होगा। कार्यक्रम के पश्चात् विभिन्न अणुव्रत समितियों के प्रतिनिधियों व शिक्षकों की संगोष्ठी हुई जिसमें श्री संचय जैन व डॉ. राकेश तैलंग ने भावी कार्यक्रमों की रूपरेखा प्रस्तुत की। इस अवसर पर सर्वश्री गुणसागर कर्णावट, गणेश कच्छारा, राजकुमार दक, सोहनलाल रैगर, दिनेश श्रीमाली, डॉ. नीना कावड़िया, डॉ. सीमा कावड़िया, रमेश माण्डोत आदि कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

इन शिक्षकों का हुआ सम्मान : *धीरज जैन, राजकीय प्राथमिक विद्यालय भोपालगढ़ (भीम), कपिल पालीवाल जीवन ज्योति पब्लिक स्कूल, पीपरड़ा, मनोजकुमार दक, महावीर बाल मन्दिर भीम, भरत कुमावत इन्द्रप्रस्थ पब्लिक स्कूल एमड़ी, रेणु दीक्षित, आदर्श विद्या मन्दिर हाउसिंग बोर्ड कांकरोली, मोतीलाल माली राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय मोड़वा (नाथद्वारा), गणेशलाल बुनकर राजकीय सीनियर सेकण्डरी स्कूल बरार (भीम), जितेन्द्र सनाढ्य, राजकीय सीनियर सेकण्डरी स्कूल पीपली आचार्यान, मनु सांखला, तुलसी अमृत विद्यापीठ, आमेट तथा यशवन्त शर्मा, ज्ञान ज्योति सेकण्डरी स्कूल, कांकरोली।*

हैदराबाद
तेलंगाना के गृहमंत्री को ब्रोशर भेंट

अणुव्रत समिति की ओर से अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट का ब्रोशर तेलगांना सरकार के **गृहमंत्री मोहम्मद मेहमूद अली खान** को भेंट किया गया। उनसे तेलंगाना राज्य के स्कूलों में इस प्रतियोगिता को आयोजित करने के लिए सरकार से सहायता दिलाने का अनुरोध किया गया। प्रतिनिधिमंडल ने मंत्री महोदय को जीवन विज्ञान के बारे में जानकारी दी तथा इसे स्कूली विद्यार्थियों के लिए उपयोगी बताया। प्रतिनिधिमंडल में समिति हैदराबाद से एसीसी संयोजक पल्लवी भंडारी, प्रचार मंत्री रीता सुराणा, संतोष बुच्चा उपस्थित थे।

भीलवाड़ा
अणुव्रत एवं जीवन विज्ञान पर कार्यशाला

अणुव्रत समिति भीलवाड़ा की ओर से राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, शास्त्री नगर में अणुव्रत एवं जीवन विज्ञान पर कार्यशाला **साध्वीश्री जसवती जी** के सान्निध्य में आयोजित की गयी। अणुव्रत समिति की अध्यक्ष **श्रीमती आनंद बाला टोडरवाल** ने शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को अणुव्रत के नियमों की जानकारी दी एवं छोटे–छोटे संकल्पों द्वारा जीवन को सफल बनाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि जीवन विज्ञान आचार्य श्री तुलसी के उज्ज्वल मस्तिष्क की देन और आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी द्वारा शिक्षा जगत को प्रदत्त अनुपम उपहार है।

साध्वीश्री अनेकांत प्रभा जी ने अणुव्रत के बारे में समझाया और तीन संकल्प द्वारा बच्चों को अच्छा जीवन जीने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि जीवन विज्ञान के द्वारा शारीरिक एवं बौद्धिक विकास के साथ ही मानसिक एवं भावनात्मक संतुलन का विकास संभव है। योग प्रशिक्षिका श्रीमती अनीता हिरण ने समपादासन, ताड़ासन, कोणासन, पादहस्तासन का अभ्यास कराने के साथ ही विद्यार्थियों को स्वस्थ रहने के टिप्स भी दिये। कार्यसमिति सदस्य श्रीमती पुष्पा पामेचा ने विद्यार्थियों के योग एवं आसन का निरीक्षण किया। समिति के सदस्यों ने स्कूल प्रधानाचार्य को अणुव्रत नियम बोर्ड तथा 'अणुव्रत' एवं 'बच्चों का देश' पत्रिका भेंट की। सभी विद्यार्थियों को 'प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान' पुस्तिका एवं बिजली बचाओ, जल बचाओ के स्टिकर वितरित किये गये। स्कूल प्रधानाचार्य ने अणुव्रत समिति भीलवाड़ा के इस कार्यक्रम की सराहना की, विद्यार्थियों को अणुव्रती बनने का संदेश दिया एवं आज के युग में जीवन विज्ञान के पाठ्यक्रम की उपयोगिता के बारे में समझाया। अंत में रीना जी बापना ने आभार व्यक्त किया।

लाडनूं
अणुव्रत जल मन्दिर व द्वार का लोकार्पण

अणुव्रत समिति के तत्वावधान में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मंगलपुरा में नवनिर्मित **जल मंदिर व अणुव्रत द्वार** का लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण ने सभी को मंगल पाठ सुनाते हुए आशीर्वाद दिया।

भाजपा के जिला अध्यक्ष गजेंद्र सिंह ओडिट, युवा नेता राजेंद्र सिंह धोलिया, शांतिलाल कठौतिया, विद्यालय के प्रिंसिपल जयपाल शर्मा, मंगलपुरा सरपंच चंपालाल मेघवाल, पूर्व सरपंच दुलीचंद सांखला, श्रीमती शांति दूधोडिया, देवाराम पटेल, व्याख्याता इंद्रचन्द जांगिड़, एसडीएम अनिल कुमार, तहसीलदार कुलदीप भाटी आदि की गरिमामयी उपस्थिति कार्यक्रम में रही।

इस अवसर पर अणुव्रत विश्व भारती के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष **श्री प्रताप सिंह दुगड़** व राष्ट्रीय सह मंत्री **श्री इन्द्र बैंगानी** विशेष रूप से उपस्थित थे। इससे पहले समिति के अध्यक्ष श्री शांतिलाल बैद ने अतिथियों का स्वागत करते हुए अणुव्रत समिति की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। समिति के मंत्री डॉ. वीरेन्द्र भाटी मंगल ने बताया कि जल मंदिर का निर्माण स्व. नथमल हनुमानी देवी बैद की पुण्य स्मृति में उनके परिजनों ने तथा अणुव्रत द्वार का निर्माण स्व. भंवरलाल सोहनी देवी व अभिनव बैद की पुण्य स्मृति में शांतिलाल, अभिषेक, भव्य बैद के आर्थिक सौजन्य से करवाया गया है।

बारडोली
नशा मुक्ति केंद्र का शुभारंभ

अणुव्रत समिति की ओर से 11 जनवरी को **नशा मुक्ति केंद्र** अलंकार टॉकीज के पास शुरू किया गया। मनोजजी कच्छारा को नशा मुक्ति केंद्र का संयोजक मनोनीत किया गया है। पहले ही दिन विभिन्न प्रकार का नशा करने वाले करीब 20 लोगों ने संकल्प लिया कि धीरे–धीरे नशा कम करेंगे एवं एक समय बाद वे सम्पूर्ण रूप से नशामुक्त होने का प्रयास करेंगे। इस नशा मुक्ति अभियान में विशेष श्रम अणुव्रत समिति अध्यक्ष पायल जी चौरड़िया का रहा।

कार्यक्रम में मंत्री केतनजी मेड़तवाल, अंकुरजी मेहता, अंकुर बाफना, सोनियाबेन बडोला, आशा बेन चौरड़िया एवं संजुजी मेहता की विशेष उपस्थिति रही।

राजलदेसर
विद्यालय में सेवाकार्य

अणुव्रत समिति की ओर से निकटवर्ती ग्राम भरपालसर चारणान के राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय के छात्र–छात्राओं में 110 जोड़ी जूते वितरित किये गये। कार्यक्रम श्री पदमचंद बैद (पोलवाले), श्री शंकरलाल सोनी अध्यक्ष अणुव्रत समिति, श्री मुकेश श्रीमाल अध्यक्ष तेयुप एवं श्री लालचंद प्रजापत वरिष्ठ सदस्य अणुव्रत समिति के आर्थिक सौजन्य से सम्पन्न हुआ।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, राजलदेसर के अध्यक्ष श्री नोरतमल बैद की अगुआई में आयोजित कार्यक्रम में श्री शंकरलाल सोनी ने कहा कि भावी पीढ़ी को अणुव्रत के नैतिक नियमों संस्कारों से प्रेरित करें, उन्हें अणुव्रत से जोड़ें। जीवन विज्ञान के प्रयोगों का प्रतिदिन प्रार्थना सभा में बच्चों को अभ्यास करवायें। मंत्री श्री भुवनेश्वर शर्मा ने विद्यार्थियों से कहा कि जीवन में स्वस्थ और सुखी रहना चाहते हैं तो पान मसाला, गुटखा एवं अन्य नशीले पदार्थों का सेवन बिल्कुल नहीं करें। विद्यालय के प्रधानाचार्य ने समिति को धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में ग्राम के गणमान्य नागरिकों की उपस्थिति रही।

चाड़वास
विद्यालय में सेवाकार्य

चाड़वास के जुहारमल सेठिया राउमावि के प्राथमिक भामाशाहों के सहयोग से स्वेटर व जूते–जुराब वितरित किये गये। प्रधानाचार्य सुमित्रा जी कटारिया ने बताया कि अणुव्रत समिति चाड़वास की ओर से 60 विद्यार्थियों को स्वेटर दिये गये। लिछुराम ढाका की ओर से 50 बच्चों को जूते व जुराब दिये गये। इस अवसर पर सर्वश्री लूणकरण भार्गव, नरसीराम मंडा, केसाराम, अनीता पूनिया, लिछूराम ढाका, गोपाल प्रजापत, किशनलाल लखारा, भगवानाराम गोदारा आदि मौजूद थे।

'अणुव्रत' व 'बच्चों का देश' 'सदस्यता उपहार योजना' अब 31 मार्च, 2022 तक

अणुव्रत विश्व भारती अपने विभिन्न उपक्रमों के माध्यम से अहिंसक और नैतिक समाज के निर्माण के लिए सदैव प्रयासरत है। संस्था के मासिक प्रकाशन 'अणुव्रत' व 'बच्चों का देश' इस दिशा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। दोनों पत्रिकाओं को पाठकवर्ग का स्नेह–समर्थन निरंतर प्राप्त हो रहा है।

इन पत्रिकाओं के प्रसार में देश में सक्रिय अणुव्रत समितियां अहम भूमिका निभा रही हैं। दोनों पत्रिकाओं के प्रसार के लिए कुछ समय पूर्व प्रारम्भ की गयी 'सदस्यता उपहार योजना' की अंतिम तिथि बढ़ाकर 31 मार्च कर दी गयी है।

सभी अणुव्रत समितियों और रुचिशील कार्यकर्ताओं से अनुरोध है कि इन दोनों पत्रिकाओं को अधिक से अधिक हाथों में पहुँचाकर समाज–निर्माण के इस पावन यज्ञ में अपनी आहुति अवश्य प्रदान करें।

अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट प्रथम चरण अब 31 जुलाई, 2022 तक

अणुविभा की ओर से राष्ट्रीय स्तर पर होने वाले अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट के प्रथम चरण (स्कूली स्तर) की अंतिम तिथि बढ़ाकर 31 जुलाई 2022 कर दी गयी है। कोरोना महामारी की तीसरी लहर को देखते हुए यह फैसला किया गया है।

'पर्यावरण संरक्षण : हर पल हमारी जिम्मेदारी' विषय पर लेखन, ड्राइंग, गायन और भाषण आदि चार विधाओं में तीन ग्रुप में होने वाले इस कॉन्टेस्ट में कक्षा 3 से 5, 6 से 8 व 9 से 12 तक के विद्यार्थी हिस्सा ले सकते हैं।

अणुव्रत समिति : नया नेतृत्व

सत्र 2021–23

सरदारशहर

श्री पृथ्वीसिंह
अध्यक्ष

श्रीमती प्रभा पारीक
मंत्री

टिटलागढ़

डॉ. गोवर्धन साहू
अध्यक्ष

श्री ओमप्रकाश जैन
मंत्री

चलथान

श्रीमती लीना चौरड़िया
अध्यक्ष

श्रीमती रीना पितलिया
मंत्री

धुबड़ी

श्रीमती शांति बांठिया
अध्यक्ष

श्रीमती चन्दा तातेड़
मंत्री

जयगांव

श्री चन्दनमल चौरड़िया
अध्यक्ष

श्री गणेश कुमार सरावगी
मंत्री

तेजपुर

श्रीमती सुमित्रा धारिवाल
अध्यक्ष

श्री मनीष बेगवानी
मंत्री

- 74वें अणुव्रत स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में देशभर में स्थित अणुव्रत समितियां **"अणुव्रत काव्यधारा"** के रूप में काव्य गोष्ठी का आयोजन करेंगी।
- **"अणुव्रत काव्यधारा"** काव्य गोष्ठी का आयोजन स्थानीय परिस्थिति के अनुरूप ऑनलाइन/ऑफलाइन किया जा सकता है। यह निर्णय प्रत्येक अणुव्रत समिति को अपने स्तर पर लेना है। जिन स्थानों पर कोविड प्रोटोकॉल फॉलो करने के साथ ऑफलाइन/मंचीय कवि सम्मलेन हो सकता है, वहां चारित्र आत्माओं का सान्निध्य भी प्राप्त किया जा सकता है।
- ऑनलाइन अथवा ऑफलाइन दोनों ही स्थितियों में कार्यक्रम को अणुविभा के फेसबुक पेज पर लाइव किया जायेगा ताकि घर बैठे भी अधिक से अधिक व्यक्ति अणुव्रत काव्य गोष्ठी का आनन्द ले सकें।
- काव्य गोष्ठी का शुभारम्भ अणुव्रत समिति अध्यक्ष द्वारा स्वागत के साथ किया जायेगा व अन्त में मंत्री अथवा अन्य प्रमुख पदाधिकारी आभार ज्ञापित करेंगे। इसके अतिरिक्त पूरा समय काव्य प्रस्तुतियों को ही मिलना चाहिए।
- मुख्यतः **शनिवार और रविवार को** सुबह/दोपहर/शाम तीन कार्यक्रम पूर्व निर्धारित किये जा सकते हैं। अणुव्रत समितियां अणुव्रत काव्यधारा से ज्यादा से ज्यादा श्रोताओं को जोड़ने के लिए सोशल मीडिया तथा अन्य माध्यमों से इसका भरपूर प्रचार करेंगी।
- **आंचलिक स्तर**
  - ऑनलाइन अथवा ऑफलाइन – परिस्थिति अनुरूप
  - पाँचों जोन में जोन स्तर के पाँच कार्यक्रम उस जोन के किसी प्रमुख शहर की समिति के तत्वावधान में आयोजित करना प्रस्तावित है।
  - ये काव्य गोष्ठियां भी परिस्थिति अनुरूप ऑनलाइन अथवा ऑफलाइन आयोजित की जा सकेंगी। आंचलिक स्तर की काव्य गोष्ठियों में उस जोन के श्रेष्ठ कवियों को आमंत्रित किया जायेगा।
  - स्थानीय स्तर पर सहभागी कवियों को भी श्रेष्ठता के अनुरूप आंचलिक स्तर की काव्य गोष्ठियों में आमंत्रित किया जा सकता है।
- **राष्ट्रीय स्तर**
  - ऑनलाइन अथवा ऑफलाइन – परिस्थिति अनुरूप।
  - 1 मार्च , 2022 को अणुव्रत स्थापना दिवस का मुख्य कार्यक्रम अणुविभा के तत्वावधान में "अणुव्रत काव्यधारा" के रूप में आयोजित किया जायेगा।
  - यह कार्यक्रम भी परिस्थिति अनुरूप ऑनलाइन अथवा ऑफलाइन आयोजित किया जा सकेगा।
- ऑफलाइन कार्यक्रम होने की स्थिति में यह कार्यक्रम किस शहर में आयोजित होगा, इसका निर्णय अणुविभा करेगी।
- चयनित रचनाओं का काव्य संग्रह प्रकाशन और वीडियो डॉक्यूमेंट्री भी प्रस्तावित है।

सम्पर्क सूत्र – डॉ. कुसुम लुनिया, राष्ट्रीय संयोजक 9891947000

अणुव्रत आंदोलन

चुनाव शुद्धि अभियान

सही चयन

राष्ट्र का सही निर्माण

I Vote For A Strong India

आपके अमूल्य वोट का अधिकारी कौन?

- जो ईमानदार हो
- जो चरित्रवान हो
- जो सेवाभावी हो
- जो कार्यनिपुण हो
- जो नशामुक्त हो
- जो स्वच्छ छवियुक्त हो
- जो राष्ट्रहित व लोकहित को सर्वोपरि मानता हो
- जो जाति-सम्प्रदाय से बंधा हुआ न हो

मतदाता ध्यान दें...

- भय और प्रलोभन में मतदान न करें।
- मद्य एवं मादक द्रव्यों का प्रतिकार करें।
- चरित्र एवं गुणों के आधार पर मतदान का निर्णय करें।
- जाति एवं सम्प्रदाय के आधार पर मतदान न करें।
- अपराधी एवं भ्रष्टाचार में लिप्त उम्मीदवार को मतदान न करें।
- हिंसात्मक प्रवृत्तियों में लिप्त उम्मीदवार को मतदान न करें।
- अवैध मतदान न करें।

मतदान अवश्य करें, राष्ट्रीय कर्त्तव्य का निर्वहन करें

अणुविभा

अणुव्रत विश्व भारती

राष्ट्रहित में प्रसारित

www.anuvibha.org

ANUVRAT

RNI No. 7013/57
February, 2022

Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1261/2021-23
Licence No. U(C)-215/2021-23
Licenced to post without pre-payment
Date of Publication 25/01/2022
Posted at Delhi PSO Delhi-6 on 28-29 of the Previous Month

GALAXY GROUP

Architectural marvels across 46 countries worldwide have used our stones.
We are proud to have contributed to the architectural world with these concept stores and outlets in Jaipur:

Stone Studio By Galaxy
India's first concept store for stone display

Tile Studio By Galaxy
Finest Selection of Premium Tiles

Light Studio By Galaxy
Rajasthan's Largest Decorative Lights Display

Landscape Studio BY GALAXY
India's best collection of Landscape Artefacts

The experience of three decades has helped us translate our vision for providing unparalleled lifestyle into -
The Urban Village by Galaxy Enclave, a fully integrated township next to Jaipur's business hub.

RERA No: RAJ/P/2017/448; RAJ/P/2020/1364

GALAXY ENCLAVE
THE URBAN VILLAGE
Modern Day Luxuries In Harmony With Nature
250 feet SEZ Road, Kalwara, Ajmer Road, Jaipur

TO KNOW MORE, CALL US ON
+91-90791-23572/ 88755-84455/ 88754-08875 or write to info@urban-village.co.in
www.urban-village.co.in

प्रकाशक एवं मुद्रक **संचय जैन** द्वारा स्वत्वाधिकारी **अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी** की ओर से श्री साई शिवानी प्रिंटर्स, बी-198, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-1, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। संपादक - **संचय जैन**